पी० के० प्रिंटिंग प्रेस, कनवरीगंज, अलीगढ़।

गीतांजलि

रेडियो पत्रिका क्रमाँक २००

पर आधारित

अवधेश निगम, कानपुर

अलीगढ़ रेडियो क्लब

अलीगढ़ • मार्च १९७४

टेलीफून [१११०
२६५

अलीगढ़ रेडियो क्लब

पोस्ट बाक्स नं० ४

अलीगढ़

अध्यक्ष	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
भिक्कन बाबू वार्ष्णेय	गिरीशचन्द्र सुमन	अविनाशचन्द्र वार्ष्णेय

सदस्य:—

गिरीश लाल पाडी, चन्द्रभान सिन्धी, कमर जावेद नदीम, अरुन कुमार वाडरा, मुरारीलाल शर्मा, दीपचन्द्र, छेदालाल गुप्त, सुरेशचन्द्र गुप्त, रमेश मेहता, नवीन शर्मा, सुभाषचन्द्र शर्मा, देवेशचन्द्र गुप्त, सियाराम शर्मा

संस्थापक एवं सम्पादक—

ज्ञानेशचन्द्र अटल

कार्यालय—'सरोज सदन' घुड़ियाबाग, अलीगढ़

अपनी बात

प्रिय श्रोताओ,

'गीताँजलि' का प्रकाशन करते हुये मुझे अपार हर्ष हो रहा है। पत्रिका का प्रकाशन देरी से हुआ इसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ लेकिन इसमें मेरा ही दोष नहीं बल्कि कुछ श्रोताओं का भी है जिन्होंने रेडियो पत्रिका क्रमाँक २०० की सामिग्री काफी देर से भेजी तथा कुछ श्रोताओं ने तो इसमें सहयोग ही नहीं दिया, तब रांची (बिहार) के पुरुषोत्तमलाल के विशेष सहयोग से इसका प्रकाशन सम्भव हो सका अत: अलीगढ़ रेडियो क्लब इनका विशेष रूप से आभारी है साथ ही साथ उन श्रोताओं का भी जिन्होंने रेडियो पत्रिका क्रमाँक २०० की सामिग्री हमें प्रेषित की।

'गीतांजलि' पत्रिका १५० पेजों की निकालने की योजना थी लेकिन कागज की अत्यधिक कमी एवं तेजी के कारण हमें काफी पेज घटाने पड़े तथा काफी श्रोताओं की रचनाओं को स्थान नहीं दे सके जिनमें से प्रमुख श्रोता है—भारत भूषण दोस्त, जगदीश मखीजा, नवीन शर्मा, दिलीप कुमार ओझा लक्ष्मण भट्ट अन्यार्थी, सै० इम्तयाज आलम राही, पं० मेवालाल परदेशी, मु० शेर अफगन, एम० ए० लतीफ, कुलदीप आशिक, कमर जावेद नदीम, ठा० किरणसिंह, कु० आराधना निगम, शाहेद जमील गिरीशलाल पाड़ी, सुकदेव रोकड़े आदि। मुझे उम्मीद है कि उपरोक्त श्रोता नाराज नहीं होंगे।

'गीताँजलि' के प्रकाशन में काफी सावधानी रखी गई लेकिन तब भी कुछ गलतियाँ हो सकती हैं आशा है इन पर आप ध्यान नहीं देंगे। रेडियो पत्रिका—२०० के प्रकाशन में पहले पन्ने में ३ समाचार तथा प्रेरक प्रसंग में महिलाओं के प्रेरक प्रसंग अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके अत: उन्हें हम नहीं दे सके।

हमारे पास बहुत सी रचनाएँ इस प्रकार की भी आई थी जिनमें एक क्लब द्वारा दूसरे क्लब की आलोचना, उद्घोषकों को बुराई तथा अन्य पत्रिकाओं की भी आलोचना थी। हमने उन रचनाओं को इस पत्रिका में स्थान नहीं दिया क्योंकि इससे व्यर्थ में ही श्रोताओं में आपस में वैमनस्य बढ़ता है। आशा है कि भविष्य में अन्य श्रोता क्लब भी भविष्य में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में ऐसी रचनाओं को प्रकाशित न कर श्रोताओं के मध्य आपस में सहयोग बढ़ाने में प्रयत्नशील रहेंगे !

'गीताँजलि' आपको पसन्द आये तो मैं अपनी सफलता मानूंगा। अत: अपनी राय एवं सुझाव शीघ्र भेजें अन्त में उन सभी लेखकों को धन्यवाद जिन्होंने अपनी रचनायें प्रेषित की, साथ ही मैं अपने क्लब के सभी सदस्यों का भी आभारी हूँ जिन्होंने 'गीताँजलि' के प्रकाशन में सहयोग दिया। विज्ञापन दाताओं को भी धन्यवाद दिये बिना रह नहीं सकता जिनके सहयोग से इसका प्रकाशन सम्भव हुआ।

आपका ही
ज्ञानेशचन्द्र अटल
सम्पादक



माधुरी

हिन्दी सिने पाक्षिक

प्रिय ज्ञानेशचन्द्र जी,

आपके पत्र के लिये धन्यवाद !

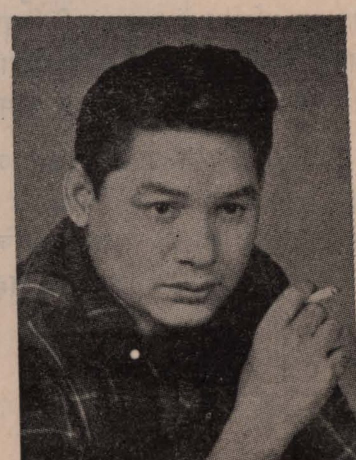
अलीगढ़ रेडियो क्लब की ओर से 'गीताँजलि' के प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें, आपने लिखा है कि भारत में लगभग ४०० रेडियो क्लब हैं जिनके सदस्यों की संख्या पचास हजार से अधिक होगी, अगर यह सब क्लब एक अखिल भारतीय संगठन की स्थापना कर सकें, तो एक शक्तिशाली संस्था वन सकती है, मैंने देखा है कि अक्सर रेडियो क्लब अपनी गतिविधियां केवल फरमाइशी प्रोग्रामों तक सीमित रखते हैं, रेडियो क्लबों को इससे आगे बढ़कर रेडियो सम्बन्धी नीतियाँ और रेडियो सेटों की कीमतों पर भी बिचार विमर्श करना चाहिये, और अपनी आवाज सही जगह पहुँचाना चाहिए, आशा है आपका क्लब और प्रकाशन इस सम्बन्ध में सोचेंगे और देश को नेतृत्व देंगे।

आपकाः—
अरविन्दकुमार
सम्पादक, माधुरी

प्रिय सुमन जी, नमस्ते !

अलीगढ़ रेडियो क्लब की पत्रिका गीतांजलि प्रकाशित हो रही है पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आशा करता हूँ कि पत्रिका जोरदार उच्च स्तर की होगी। मेरी ओर से शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

दलवीरसिंह परमार
एनाउन्सर



प्रिय भाई, नमस्ते !

अलीगढ़ रेडियो क्लब की ओर से गीताँजलि प्रकाशन के लिये मेरी ओर से बधाई स्वीकार करें। मुझे आशा है कि ये पत्रिका अन्य सभी पत्रिकाओं से उच्चस्तर की होगी। रेडियो पत्रिका २०० का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

आपका ही—
मनोहर महाजन
उद्घोषक श्री लंका

I am happy to acknowledge the recipt of your gracious letter, thanks largely for the same.

I am glad to learn that you are going to publish ''GITANJALI''. I send my good wishes for the success of the publication of the 'Gitanjali'.

Your Sincerly,
Naushad

श्री ज्ञानेशचन्द्र अटल जी

आपका पत्र मिला। धन्यवाद।

आपका रेडियो क्लब दिन दूनी तरक्की करे और गीताँजलि स्मारिका देश के हर पाठक से सम्बन्ध स्थापित करने का श्रेय प्राप्त करें। अलीगढ़ से यह जागरण देश भर मैं फैल गया है। और भी फैले। जिन नगरों और गाँवों में नहीं पहुँचा है वहाँ भी पहुँचे और उसके बाद उन स्थानों में भी पहुँचे जहाँ भारतीय रहते हैं।

भवदीय :
महेन्द्र सरल

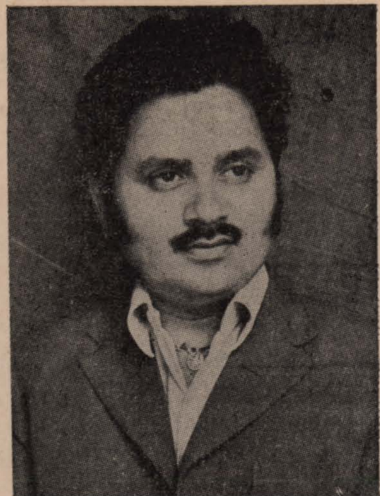
प्रिय भाई ज्ञानेश

नमस्ते !

स्नेह पत्र प्राप्त हुआ। जानकर प्रसन्नता हुई कि आप स्मारिका "गीताँजलि" प्रकाशित कर रहे हैं, इसके लिए आप तथा आपके सहयोगियों को हार्दिक शुभ कामनाएँ। स्नेह, सहयोग और एकता से "गीताँजलि" फले फूले और अपने स्वच्छ प्रकाश से, श्रोता जगत को आलोकित करती रहे।"

सहयोग के लिए धन्यवाद

आपका :
शिवकुमार 'सरोज'



प्रिय अटल,

आपका पत्र मिला, 'गीतांजली' के प्रकाशन की जानकर खुशी हुई।

आशा है गीताँजली का प्रकाशन भारत भर में स्थित सभी रेडियो क्लबों के श्रोताओं को समीप आने में सहायक सिद्ध होगा।

इसी विश्वास के साथ,

आपका ही
चंचल हर्ष
एनाउन्सर

प्रिय ज्ञानेश,

गीताँजलि के प्रकाशन के लिये मेरी ओर से शुभकामनायें स्वीकार करें, गीताँजलि में रेडियो पत्रिका क्रमाँक २०० का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

आपका ही
गोपाल शर्मा
भूतपूर्व उद्घोषक, रेडियो सीलोन

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला,

गीताँजलि के लिए मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें, वास्तव में यह सराहनीय प्रयास है।

आपका।
हरीश तिवारी

शुभकामनाओं के लिये धन्यवाद

ललित चौरडिया (उदयपुर)
अमृतसिह भाटिया (टाटानगर)
सुरेश चौरसिया (फर्रुखाबाद)
हरजिन्दर रंगीला (पत्थलगाँव)
लाल जी शर्मा (कतरासगढ़)
मनोहर अकेला (रायपुर)
मेंहदी खेताणी (पाँढ़रकवड़ा)
ए० एस० लिको (वीरगंज)
व्यंकटेश मस्के (वीडशहर)
हरकिंकर कवि (चाईवासा)
ओ० एन० शर्मा (वलरामपुर)
विजयसिह चन्देल (आगरा)
मो० सादिक प्रेमी (जमशेदपुर)
बैजनाथ आनन्द (डोरंडा)
सुरेन्द्र कन्टूर (देहरादून)
प्रफुल्ल पी खापडे (नागपुर)
अरुण कुमार (सोजत सिटी)
गोपीचन्द्र आहूजा (बल्लारशाह)
राजेन्द्रप्रसाद आनन्द (कटिहार)
कमरुद्दीन नैयर (झरिया बाजार)
अरुनकुमार सिन्हा (परतवाढ़ा)
एच० कुमार साहनी (भिलाई)
राकेश मोहन विरमानी (भिलाई)
बीना जैन (आगरा)
नरेन्द्र बाजपेयी (अमरावती)
तुलसी पथिक (चाईवासा)
इन्द्रशेतपाल (सतना)
बबनप्रसाद निराला (कुमारधुवी)
प्रदीप पाँडे (पाचोरा)
गोपीचन्द्र आहूजा (वल्लारशाह)
ओमप्रकाश गुप्त (बाँसडीह)
राजेश कुमार शौण्डिक (छाता टांड वाजार)
कु० राजश्री मुस्काती (भोपाल)
धर्मदास वाधवानी (बिलासपुर)
हरमन्दिर सिंह बग्गा (दमोह)
एस० एन० विजय (डोरंडा)
अलताफ हुसैन शेख (मलकापुर)
किशोर भदानी (झुमरी तलैया)
बी० एल० कनोडिया (कटिहार)
हरिश्चन्द्र जैसवाल (यवतमाल)
देवराज वसन (जमशेदपुर)
श्रीराम सदगुरे (औरंगाबाद)

पत्रिकायें जो हमें प्राप्त हुई

प्रियदर्शिनी (बिलासपुर)
अनुगुंज (सोजत)
कीर्ति (चित्तोडगढ़)
मिलाप (उदयपुर)
चमकते सितारे (बलिया)
नीलम (ढोली सकरा)
लिसनर्स बुलेटिन (कानपुर)
रेडियो पत्रिका (कन्नौद)
मेल मिलाप (मुरैना)
सीमान्त (रक्सौल)
विदर्भ (अकोला)
रेशमा (बिलासपुर)
पष्पाँजलि (नादेण)
संदेश (भिलाई)
मंजिल (हरणखेड़)
आवाज (दुर्ग)
मित्रलोक (अमरोहा)

लेखक और उनके पते

श्री रामगोपाल शर्मा 'रत्नेश' प्रणामी मन्दिर के सामने, सतना

,, रूपेन्द्र कुमार सिंह अध्यक्ष नीलम रेडियो श्रोता संघ, राजनांदगाँव

,, चंचल हर्ष, हर्षों का चौक, बीकानेर

कुमारी रीता खन्ना ८, जे० वी० नगर, अन्धेरी, बम्बई—५९

श्री जरगर सचिव समाज कल्याण परिषद, जबलपुर

श्री आनन्दीलाल गुप्ता, बीकानेर (राजस्थान)

,, हरमन्दिर सिंह हमराज १३/३५१ गोविन्दनगर, कानपुर—६

,, शैलेन्द्र सुमन सम्पादक सीमान्त, एक्सचेंज रोड, रक्सौल

श्रीमती पुष्पा चन्देल, ८२/६ बाल्केश्वर कालौनी, आगरा—४

श्री नरेन्द्र जैन एक्स—५८, ग्रीन पार्क नई देहली—१६

,, गोपाल चन्द्र गुप्त पोस्ट बाक्स १० बरबिल (क्योंझर)

,, प्रीतम प्यासा, जोरा फाटक रोड, धनवाद

,, सपनकुमार चौधरी, जी० टी० रोड, डुमरी (गिरिडीह)

,, एम० ए० लतीफ, विश्व रेडियो श्रोता संघ, मेनरोड, होशंगाबाद (एम० पी०)

,, ज्ञानेशचन्द्र अटल कटरा स्ट्रीट, अलीगढ़

,, वी० एस० मिश्र ११३, पी० डी० टन्डन छात्रावास, नेहरू रीजनल इन्जीनियरिंग कालिज, इलाहावाद

,, गिरीशचन्द्र सुमन, पोस्ट बाक्स नं० ४, अलीगढ़

,, नवाव असगर अली सचिव लिस्नर्स क्लब, पुराना बाजार, धनवाद

,, भिक्कन बाबू वार्ष्णेय 'सरोज सदन' घुड़ियाबाग, अलीगढ़

,, जगदीश निगम १०६/४८ ए नेहरू नगर, कानपुर —यादगार घटना — "मुझे मेरे मित्र ने मेरी जान बचाई" Page-38

,, अनिल वामन भंडारे ८८, महात्मा गाँधी रोड, इन्दौर

,, बचकामल हटरी बाजार, भाटापारा (एम० पी०)

,, शिवकुमार सरोज २४ न्यू सर्वोत्तम, इरलाब्रिज अन्धेरी बम्बई—५८

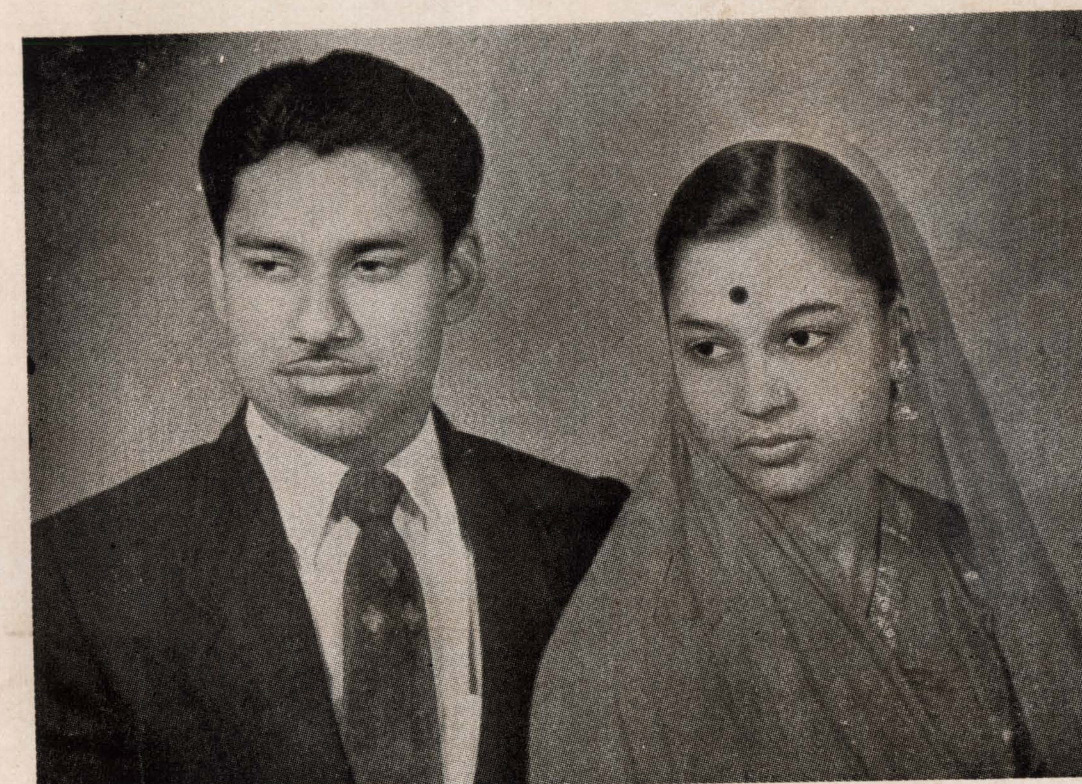
,, चन्द्रपालसिंह गंगवार ग्राम वगलैइया शाहजहाँपुर

स्नेहलता जैन C/o बी० एल० चौरडिया, भूपालवाडी, उदयपुर

श्री सुरेश तरावत, ढूँचा बाजार, चित्तोडगढ़ (राजस्थान)

कु० स्नेह महापात्र १०५६/१ आर० टी० एस० कालौनी, बिलासपुर

अलीगढ़ रेडियो क्लब के संस्थापक
एवम्
'गीताँजलि' के सम्पादक

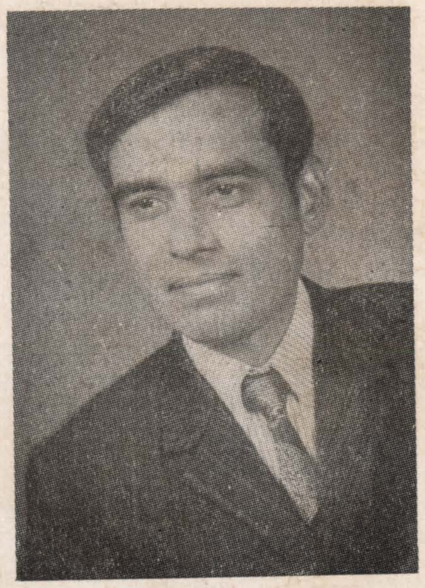


ज्ञानेशचन्द्र अटल एवम् उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकान्ता 'अटल'

पता—कटरा स्ट्रीट, अलीगढ़

अलीगढ़ रेडियो क्लब के पदाधिकारी

अध्यक्ष



नाम—भिक्कन बाबू वार्ष्णेय
आयु—२६ वर्ष
पता—'सरोज सदन' घुडियाबाग, अलीगढ

मंत्री



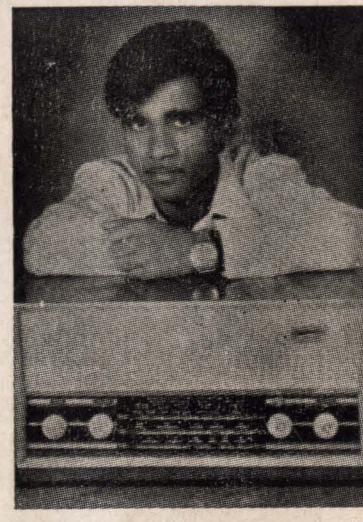
नाम—गिरीशचन्द्र सुमन
आयु—२७ वर्ष
पता—पोस्ट बाक्स नं० ४, अलीगढ़

कोषाध्यक्ष



नाम—अविनाशचन्द्र वार्ष्णेय
आयु—२६ वर्ष
पता—ए० सी० लौक कम्पनी
घुडियाबाग, अलीगढ़

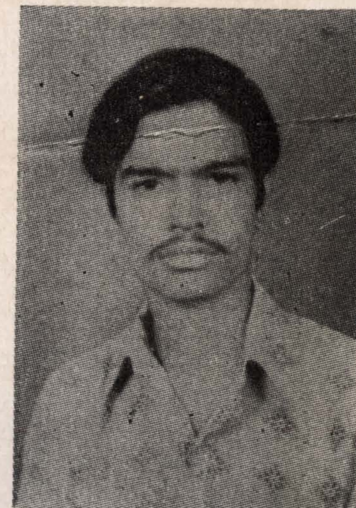
अलीगढ़ रेडियो क्लब के सदस्य



नाम—गिरीशलाल पाड़ी
आयु—२५ वर्ष
पता—गिरीश पिक्चर हाउस
जयगंज बाजार, अलीगढ़



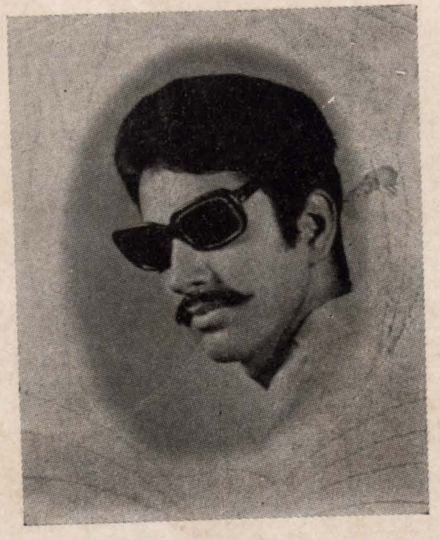
नाम—कमरजावेद नदीम
आयु—२० वर्ष
पता—द्वारा छाया स्टूडियो
अचलरोड, अलीगढ़



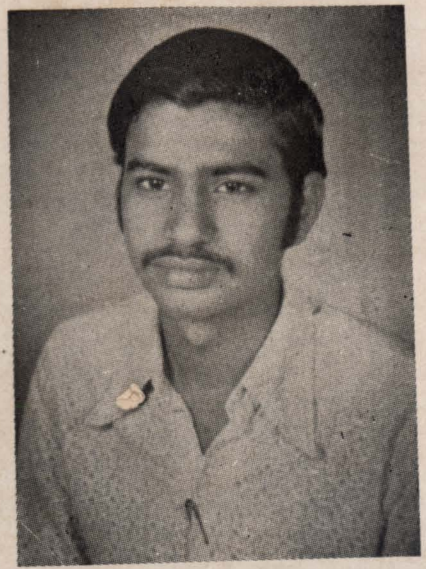
नाम—मुरारीलाल शर्मा
आयु—२० वर्ष
पता—२/१५४ सुदामापुरी, अलीगढ़



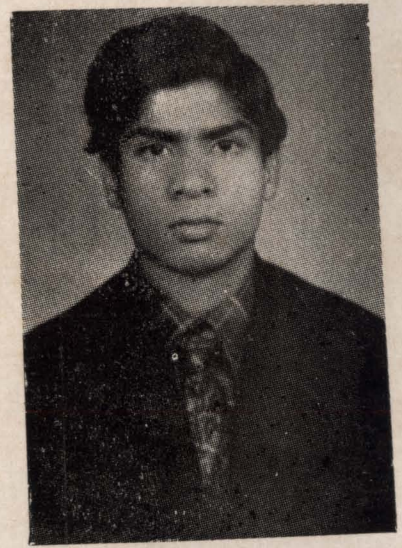
नाम—सुरेश चन्द्र गुप्त
आयु—२० वर्ष
पता—बी० डी० गुप्ता एन्ड सन्स
घुड़िया[illegible] अलीगढ़



नाम—दीपचन्द
आयु—२१ वर्ष
पता—सिन्ध टी स्टाल
रसलगंज, अलीगढ़



नाम—अरुन कुमार वाडरा
आयु—२० वर्ष
पता—२/९५ सुदामापुरी, अलीगढ़



नाम—नवीन शर्मा
आयु—२० वर्ष
पता—९६/२ प्रेस कालौनी, अलीगढ़

प्यार की राह

—श्री रामगोपाल शर्मा 'रत्नेश', सतना

तेरी यादों को, अपने दिल में लिये जाता हूँ।
जर्रे-जर्रे में, तेरी छाप छिपी पाता हूँ ॥
संग दिल हो, भले संग दिल मगर कहूँ कैसे।
जब भी चलता हूँ, संग-संग तुझे पाता हूँ ॥
तेरी यादों को ....

★ ★ ★ ★

दिल में है दर्द, धड़कनें बसी हैं स्वासों में।
स्वाँस की सुर में सनम, तुझको गुन-गुनाता हूँ !!
एक उलझन भी है, सुलझा जिसे कोई न सका।
प्यार की राह को, काँटों से सजा पाता हूँ ॥
तेरी यादों को..................................

★ ★ ★ ★

किसे अपना कहूँ यह तन भी तो नहीं अपना।
सारे संसार में, एक यार तुझे पाता हूँ ॥
खेल दुनियाँ है, मगर मेल जिन्दगी 'रत्नेश'।
मिलते-जुलते जमी खुशियों में मैं खो जाता हूँ ॥
तेरी यादों को ....

फिल्म उद्योग बहुत दुखी है

● सत्यदेव दुबे

सेंसर बोर्ड और फिल्म उद्योग उस शादीशुदा जोड़े की तरह हैं, जो एक-दूसरे को नोचते हैं, खसोटते हैं, गरियाते हैं, एक-दूसरे पर लानत बरसाते हैं, पर फिर भी एक-दूसरे के बगैर जी नहीं सकते हैं, फिल्म-उद्योग सेंसर बोर्ड को उस ढंग की बीवी की तरह देखता है, जिससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता, क्योंकि वह मालदार और ताकतबर असामी की वेटी है. मौजूदा सेंसर बोर्ड से तलाक लेने भी उद्योग को डर लगता है, क्योंकि पता नहीं, इसके बाद किसे गले बाँध दिया जाय. और फिर तलाक में तरह-तरह के खर्चे हैं, सिर दर्द हैं और सौ तरह के पिचकाट हैं.

फिल्म-उद्योग बहुत दुखी है. क्योंकि प्रजातन्त्र में विश्वास रखता है वह; उसे खुद भी देश का और देश की नैतिकता का बड़ा ख्याल रहता है. क्या यह सच नहीं है कि बी. आर. इशारा के विरुद्ध इन्डस्ट्री के सब बड़े-बड़े लखपती-करोड़पती निर्माताओं ने ही ज्यादा ऊँची आवाज उठायी है ? सुना तो यहां तक जाता है कि भारतीयता की रक्षा के लिए वे इतने दुखी हैं कि जरूरत पड़ने पर पैसा तक बहाने के लिये तैयार हैं. फिर भी उनके दुख का अन्त नहीं. एक तो उनके ऊपर तरह-तरह के टैक्स लगाये जाते हैं. सरकार उनका जरा-भी खयाल नहीं रखती. ऊँची-ऊँची लागत पर बेचारे फिल्म बनाते हैं, देश को बेकारी से बचाते हैं, देश पर कोई आपत्ति आई नहीं कि ट्रकों में निकल कर जनता से पैसा उगाहते हैं, सफेद कपड़े पहन कर क्रिकेट खेलते हैं. मिनिस्टरों के साथ फोटो उतरवाते हैं, ब्रेबोर्न स्टेडियम में नाचते हैं, गाते हैं—क्यों ? इसीलिए न कि सूखा-पीड़ित क्षेत्रों को थोड़ी सहायता मिले, पीड़ित जवान को थोड़ी सी राहत मिले, लेकिन इतना सब करने के बाद उन पर तोहमत लगायी जाती है, उनके घरों को काले पैसे के लिये रेड किया जाता है, तरह-तरह के मिनिस्टीरियल और राजनीतिक दबाव डाल कर चुनाव में वोट माँगने के लिये कहा जाता है—आखिर क्यों ? सिर्फ फिल्म-उद्योग को दुख देने के लिये.

★

आखिर काला पैसा किसके पास नहीं ? और जब दूसरों के यहाँ भी रेड होते हैं, तो फिल्मी कलाकारों के ही नाम क्यों छापे जाते हैं ? पार्लियामेंट में उनका ही नाम क्यों लिया जाता है ? और सब से बड़ी बात ! सेंसर के मामले में उनके साथ ही क्यों कड़ाई की जाती है ? बकवास फिल्में बनाने पर उनको ही क्यों गाली दी जाती हैं, जबकि राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू में बकवास का ही बोल वाला है ? फिल्म-उद्योग बहुत दुखी है. प्रदर्शक उनको तंग करते हैं. वितरक उनको तंग करते हैं, सरकार उनको तंग करती है. राजनीतिक दल उन को तंग करते हैं, फिल्म समीक्षक तंग करते हैं. खासकर टाइम्स ऑफ इन्डिया और उसके जैसे

दो-चार और समीक्षक पत्र-पत्रिकाएँ उनके व्यक्तिगत जीवन की खबरें छापकर उन्हें तंग करती हैं. पुलिस वाले तंग करते हैं, नगरमहापालिका तंग करती है, उद्योग के अन्दर बढ़ती हुई यूनियनें उन्हें तंग करती हैं, और सेंसर बोर्ड ने तो उनका जीना हराम कर दिया है. फिल्म-उद्योग बहुत दुखी है—क्यों ? क्योंकि बेचारे फिल्में बनाते हैं. मुझसे उन का दुख देखा नहीं जाता. उनका दुख कम हो इस लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं कि अगले पचास सालों में कोई भी फिल्म न बनायी जाय, कोई भी फिल्म न दिखाई जाये, फिल्म का नाम तक न लिया जाय. कौन जाने इससे शायद हम सबका दुख कम हो जाय और जनता का भी.

●●●

प्रेरणा

एक बड़ी व्यापारिक संस्था के अध्यक्ष ने बहुत से पोस्टर बनवाए जिन पर लिखा था, "जो तुम्हें करना है, शीघ्र करो।" और उनने इन पोस्टरों को दफ्तरों के चारों ओर इस उद्देश्य से चिपका दिया कि दफ्तर के कर्मचारी इससे प्रभावित तथा प्रेरित होकर अपना काम मुस्तैदी से करेंगे।

अध्यक्ष महोदय के केबिन में बैठे हुये एक दोस्त ने उनकी इस कार्रबाई की सफलता के विषय में जानना चाहा तो उसे उत्तर मिला, "असर तो हुआ है मगर कुछ दूसरे ढंग से। खचाँची पचास हजार रुपए लेकर भाग गया है, हैडक्लर्क स्टैनो को लेकर गायब है और दफ्तर के तीन क्लर्क वेतन तुरन्त बढ़ाने की मांग पर अनशन कर रहे हैं।"

एक व्यंग्य—

जब मनोहर महाजन राजनादगाँव पधारे

रूपेन्द्रकुमार सिंह

फिल्मी दुनियाँ के कलाकारों को देखने के लिये जवान, बूढ़े व बच्चों—यहाँ तक कि लड़कियों की भीड़ उभड़ पड़ती है—पर रेडियो सीलोन के एनाउन्सर श्री मनोहर महाजन जब राजनादगाँव पधारे तो रेडियों श्रोताओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी।

मैंने देखा कि हर श्रोता सिर्फ दो घड़ी अपना परिचय देने के लिये लालायित नजर आ रहा है, हर के दिल में यही चाह है कि मैं अपना नाम पूर्ण रूपेण उन्हें याद करा दूँ (जिससे प्रोग्राम छाँटते वक्त इनसे भूल न हो जाय)! एक श्रोता जो रेडियो पत्रिका में पत्र भेजते-भेजते निराश हो चुका था (आज तक उसका पत्र शामिल नहीं हुआ) और अब उसने वह प्रोग्राम सुनना तक बन्द कर दिया है (यही समझिये उसे रेडियो पत्रिका से घृणा है) आज उसी प्रोगाम की इतनी तारीफ कर रहा था जैसे C, B. C. से सिर्फ एक ही प्रोग्राम हो और सबसे शानदार हो—काश महाजन साहब की जग़ह में होता तो इतना फूल जाता कि दारासिंह भी मेरी हेल्थ देखकर अपने आप को कोसने लगता (पर महाजन साहब सुन ही नहीं रहे थे—काफी पीने में संलग्न थे)—एक और अनपढ़ श्रोता जिसे शायद अपना नाम लिखना भी न आता होगा पर वाकायदा "महफिले मुशायरा" "जब आप गा उठे" में सक्रिय भाग लेते हैं (दूसरों से लिखवाकर) वह एक कोने में यह आशा लिये खड़े थे—शायद मुझे देखकर महाजन साहब खुद ही परिचय पूछेंगे या शायद आकर हाथ भी मिलायें (वैसे वह मीटर मैकेनिक का हैल्पर है—और कपड़ों से जले हुये तेल की दुर्गन्ध आ रही थी—हाथों में काला तेल भयंकर मात्रा में लगा था—कुछ ही देर बाद महाजन जी की नजर फिसली और उस श्रोता के चेहरे पर टिकी,....उसने पूरी बत्तीसी खोल दी। ...खैर साहब एक पुराने पर रिटायर्ड श्रोता मुझे रास्ते में मिले,...मैंने पूछा क्यों तुम नहीं गये ? —...वह मेरा "इन्टेनशन" तुरन्त समझ गये... तपाक से, जरा गुस्से भरे लहजे में बोले—मैं क्यों जाऊँगा...मैं किसी की..... पसन्द नहीं करता... मैं.....(यहाँ तक कि उन्होंने लम्बा चौड़ा भाषण शुरू कर दिया...मैंने पीछा छुड़ाया) कुछ देर ही बाद देखा कि श्रोताओं की भीड़ के पीछे से वह चेहरा भी झाँक रहा है।

काफी देर हो गयी थी - महाजन साहब घूमने के मूड से उठकर चल दिये...साथ में सिर्फ दो दोस्त थे (पर यहाँ भी श्रोताओं ने पीछा नहीं छोड़ा— वह आगे.. सब पीछे)। करीब आधे घन्टे के बाद मैं एक और श्रोता से मिलने गया ..मैंने उनसे भी वही सवाल किया—क्यों आप.. गये नहीं ?... वह पहले से ही भुनभुनाये बैठे थे.....मैं नहीं जाता...जिसकी गरज होगी मुझसे खुद मिलने आयेगा...मैंने सुना कि वाकई महाजन साहब उनसे मिलने गये थे (शायद पुरानी दोस्ती थी).....।

दो दिन के बाद मैं हेयर कटिंग कराने सेलून पहुँचा (नाई किन्तु श्रोता) उसने बताया मैंने परसों महाजन साहब की दाढ़ी बनाई थी (बहुत खुश था) मुझ से खुशी देखी नहीं गई...और मैं बिना बाल कटवाये ही चला आया......।

गीत

चंचल हर्ष

बिखर बिखर कर भाव हृदय का यादों से जुड़ता है।
संभल संभल कर भटका राही दूर कहीं चलता है॥
यूँ तो सब हैं ठीक मगर अनजाने में ही अक्सर
इन उदास नयनों की जाने क्यूं पलकें हो जाती तर
तरस तरस कर हर पल समय का—
क्या सचमुच छलता है ?
बिखर बिखर कर भाव हृदय का यादों से जुड़ता है।
संभल संभल कर भटका राही दूर कहीं चलता है॥
अलगाव की खाई पर से गुजर रही हैं राहें
थकी वेदना करवट लेकर जाने कब कहाँ गिरादे
पसर पसर कर मन एकाकी—
हाथ खड़ा मलता है
बिखर बिखर कर भाव हृदय का यादों से जुड़ता है।
संभल संभल कर भटका राही दूर कहीं चलता है॥

RATANDEEP-HEMRAAJ

—*Reeta Khanna*



REETA KHANNA

RAT-RACE among the music composers to lay hands on as many assignments as possible has today reduced the film music into a confounded din of confusion and complexity without rhyme and rhythm, utterly lacking is what is known as melody.

However, once in a bluemoon some song is heard which despite its thapsody has a nostalgic effect on the listener. Such a tune came on the air sometime ago. The musers of the melody were relatively less known composers in the realm of film music from whom much could be expected in the years to come.

The song 'O re sajanwa...' from the recently released movie PYASI NADI has now become a dark hit. No wonder for Mukesh and the promising new voice Chandrani Mukherjee have sung the duet quite soulfully pouring into it all emotions and feelings. The song brings in the limelight the music-duo Ratandeep - Hemraaj who have been struggling for many films.

PYASI NADI could be known as the first major break of Ratandeep-Hemraaj. Although their first movie to release was RUT RANGELEE some months ago, it little bring the music duo in focus of the listeners,

"The film & its music are complementary," says Ratandeep. "The success of one depends upon the success of the other".

Besides it is quite true that, what with the cutthroat competition among the composers and the film music has to be very judiciously presented as to be heard by the listeners amid the usual din. The producer and the distributors of PYASI NADI therefore have to be complemented as much for the success of the music of Ratandeep-Hemraaj in the movie.

Born in Rajasthan, Ratandeep came to Bombay to become a crooner. Instead he joined Iqbal Quereshi as an assistant while the latter was scoring music in PANCHAYAT. For nearly eight years, he was with Iqbal Quereshi and did nearly ten films with him, the last being YE DIL KISKO DOON.

During this period, whenever he was idle and has no work, Ratandeep used to visit Basanti Music Hall at Dadar, which no more exists now, which many composers then used for thelr rehearsals. It was there that he first fell in with Hemraaj.

Hemraaj, born in Punjab, has a musica background. His grand-father, Pandit Devi-Chand was a renowned vocalist and 'dilruba'



RATAN DEEP

HEMRAJ

exponent. His father was Pandit Amarnath, the well-known composer of yester-year who was associated with Fazli brothers. Hemraaj's paternal uncles were Husanla! and Bhagatram who were once the top-most composers in the films.

Whenever, Pt Amarnath used to score music Hemraaj used to sit with his father. Latter he joined his uncles, but the association did not prove fruitful.

At the age of 19, Hemraaj came to Bombay where one of the diciples of his father the late E. R. Vinod, took him up as his assistant and encouraged him. With Vinod, Hemraaj did half a dozen films, including EK THI LADK! and AGA KA DARYA. But it was still a struggling period of young Hemraaj. Thus one day he met Ratandeep at the Basanti Music hall, while the latter had recently signed assignment to score music independently in SURAJ DHALNE KE BAAD. They joined hands and completed the movie which is not yet released for some reasons

In the meantime a promising lyricist Tajdar Taj joined Ratandeep-Hemraaj who is now writing songs for almost all their movies.

Currently Rataddeep-Hemraaj gave quite a number of assignments, including NYAYA-DAND, PYASE RISHTE and MAILA BADAN.

J. R. FILMS 'PREM BANDHAN' starring Vikram, Prema Narayan INSAAN AUR INSAAN Anjana, Verendra. Rehman, Anwar Hussain, produced and directed by Nazar Khan and so many others.

"We know our musical compositions still lack individuality, agreed Hemraj unassumingly. It is possible to introduce an original

style when one is a successful composer. You know, we are just beginners."

However, listening to their compositions, I could clearly perceive someting unusual about them.

The intoxicating song 'Jalim ne piladi......' rendered by Asha Bhonsle in PYASI NADI is not at all just another cabaret number. It surely has some subtle musical characteristics of its own.

Ratandeep-Hemraaj are equally at home in composing softer tunes. Their ghazal 'Ay mussaveer mere mahboob ki tasveer bana' penned by Tajdar Taj and sung by Rafi in one of their untitled ventures, not only has a subtle tune but also helps to create a requisite modd through its melody. Then their lullaby 'Soja Soja bitya raani.........'in PYASE RISHTE is altogether a different composition, sung by Mala Sinha in the movie, who enacts a pathetic role of a mother having lost her only child oscilating in between the states of sanity and confused state of the singer's mind.

गीत

जरगर, जबलपुर

हैं सभी संदेश रीते
नेत्र यों क्यों अश्रु पीते
खो चुके सुकुमार सपने
मैं युगान्तर से जला हूँ।
प्रणय सुधियों में पला हूँ॥

हृदय को कैसे दिखाऊँ
श्वास कैसे निफर लाऊँ
खो चुका विश्वास मन का
ओस के कण सा ढला हूँ।
प्रणय सुधियों में पला हूँ॥

आन है बस एक मन की
दीखती वह सघन वन सी
मैं किसी अनजान पथ पर
एक दीपक सा जला हूँ।
प्रणय सुधियों में पला हूं॥

औपचारिकता

● आनन्दीलाल गुप्ता, बीकानेर

"कहो मित्र बहुत दिनों बाद दिखाई दिये !"
(कुछ दिन और भी नहीं दिखता तो कौन सा काम बिगड़ रहा था)

"कहीं बाहर गये हुये थे क्या ?"
(यहाँ रहता तो और रोजाना तंग करता)

"और सुनाओ काम वगैरह क्या कर रहे हो ?
(समय कम है, खब्ती कहीं रामायण नहीं छेड़ दे)

"आज इधर किधर जा रहे थे ?"
(कहीं यह ही नहीं कहदे कि तुम्हारे पास ही आ रहा था)

'आओ चायपान करें"।
(कम्बख्त कहीं हाँ न करदे, जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं है)

"और अभी तो कुछ दिन और ठहरने का कार्यक्रम है ?"
(जल्दी ही बोरिया बिस्तर गोल करले तो अच्छा है)

"अच्छा अब इजाजत है !"
(चमगादड़ की तरह चिपक ही गया पीछा ही नहीं छोड़ रहा)

गीत : फिल्म सवाक युग में प्रवेश वर्ष के

जाने कहां गये वो गीत !

—हर मंदिर सिंह 'हमराज'

मुश्किल से ४२ वर्ष बीते होंगे जब बम्बई के 'एम्पायर थियेटर' में ४ फरवरी १६३१ को 'आलमआरा' फिल्म के प्रदर्शन के साथ ही भारतीय हिन्दी फिल्मों का सवाक युग प्रारम्भ हो चुका था परन्तु इस फिल्म के गीतों के रिकार्ड आज कहीं उपलब्ध नहीं होते ''दे दे खुदा के नाम पर प्यारे गर हिम्मत है देने की कुछ' गीत गाकर फिल्म के अभिनेता डब्लू. एम. खान ने सर्व प्रथम गायक का स्थान प्राप्त किया. एक परिचित से सुना था कि एक चलता फिरता बाइस्कोप इसी प्रथम सवाक फिल्म 'आलम आरा' का प्रदर्शन आज से ७-८ वर्ष पूर्व गली-गली करता फिर रहा था. फिल्म की कास्टिंग में गीत लिखने वाले (वालों) का कहीं जिक्र न था. फिर भी प्राप्त जानकारी के अनुसार फिल्म की पटकथा, संवाद एवं गीत, तत्कालीन प्रसिद्ध नाटकार जेसेफ डेविड से लिखवाए गये थे. मुन्नीबाई ने—'अपने मौला की मैं जोगन बनूंगी, जोगन बनूंगी वियोगन बनूंगी···' गीत तत्काल शो में पर्दे के पास बैठकर, गाकर दर्शकों को भाव विभोर कर दिया था.



यह दृश्य फिल्म 'आलमआरा' का है जिसमें यहां नज़र आ रहे हैं मास्टर विटठल, डब्लू० एम० खान और जुबेदा।

इसके अतिरिक्त फिल्म के नायक मास्टर विट्ठल के—'तेरे एक बोसे का दीवाना ···' तथा जुबेदा के—'बदला दिलाये यारव तू सितमगरों से····' गाये गीत भी बहुत प्रसिद्ध हुए थे लेकिन आज उन गीतों का कहीं नामो निशान नहीं मिलता. यह भी नहीं पता चलता कि किस रिकार्ड कम्पनी ने इस फिल्म के रिकार्ड रिलीज किये थे. बहुत सम्भव था कि कानपुर में इस फिल्म का एक रिकार्ड उपलब्ध होगा परन्तु अभी तक निराशा ही हाथ लगी है.

पूरे ४२ गीतों वाली १९३१ की 'शीरी फरहाद' भी बहुचर्चित फिल्में थी. इस फिल्में मास्टर निसार के गाये गीतों ने धूम मचा दी थी—वो मुकद्दर न रहा, वो जमाना न रहा···' तथा 'नसीये सुबह तू इतना उसे सुना देना···'. अतीत की गर्द में डूबा एक और गीत भी था–'यारब न किसी को ही आजार मुहब्बत का···'. इस फिल्म की पटकथा एवं सभी ४२ गीत आगा हश्र कश्मीरी ने लिये थे. विषयवश यह बता देना अनुपयुक्त न होगा कि प्रारम्भ में, आज की भाँति, हर कार्य के लिए अलग व्यक्ति नहीं होते थे. कई-कई कार्य एक ही व्यक्ति से करवा लिये जाते थे. जिस तिस से गीत लिखवा कर नायक-नाथिकाओं से गवा लिये जाते थे. प्रायः फिल्म के पटकथा लेखक से ही गीत लेखन का कार्य ले लिया जाता था.

फिल्म सवाक युग के प्रवेश वर्ष में 'लैला मजनू' नाम से दो फिल्में बनीं थीं—कृष्णाटोन एवं मदन थियेटर कृत. मदन थियेटर कृत 'लैला मजनू' मास्टर निसार एवं जहाँआरा कज्जन के अभिनय के कारण एक लम्बे अरसे तक सराही गयी. मास्टर निसार के गाये २ गीत बहुत लोकप्रिय हुए थे. ये थे—किताब देख चुकी अब जरा इधर देखो···' तथा 'लैला पुकारूँ मैं बन में, मेरी लैला बसी मेरे मन में···' एक और भूला बिसरा गीत था—'मुहब्बत के शरर पत्थर के सीने से निकलते हैं···'.

१९३१ में ही फिल्म 'शकुन्तला' भी दो निर्माण संस्थाओं द्वारा निर्मित की थी. सरोज मुवीटोन कृत 'शकुन्तला' के दो भूले बिसरे नगमों की प्रथम प्रक्तियां यूं हैं—'मूर्ख तूने ज्ञान गंगा में नहाकर क्या किया···' और 'या तो इस जिस्म में दिल न बनाया होता···' अशरफ खाँ ने इस फिल्म में प्रमुख भूमिका अभिनीत की थी जिन्होंने १९३८ की 'बागवान' में 'मुश्ताक हुसैन' के संगीत निर्देशन में तथा १९४२ की नेशनल स्टूडियो कृत 'रोटी' में अनिल विस्वास' के संगीत निर्देशन में कई गीत गाये थे.

फिल्म 'देवी देवयानी' नाम से आज तक एक ही फिल्म का निर्माण हुआ है. रणजीत फिल्म कं० द्वारा निर्मित इस फिल्म में संगीत, उस समय के प्रसिद्ध संगीत विशेषज्ञ उस्ताद झन्डेखां ने दिया था. इस फिल्म के गीतों के रिकार्ड भी न जाने कहाँ खो चुके हैं. इस फिल्म का एक हास्य गीत था—'अफसोस की गर्दन पर तलवार चली आधी···'. और भी कई गीत थे—'दीनबन्धु तुम्हारो नाम झूठ है कहानी···', 'उनकी काहे न हो बरबादी जो नर हैं केवल उन्मादी···', गो धन है सम्पत्ति हमारी···', 'जल क्रीड़ा पीड़ा हरती है हर हर गंगे, हर हर गंगे···' 'है कहाँ सियाह गेसू ये पले हैं नाग काले···', स्वरूप सुन्दर, अनूप यौवन, कमी किसी में नहीं जरा सी···'. इन पक्तियों में प्रयुक्त भाषा एवं हिन्दी उर्दू शब्द चयन तो देखिए 'भारत मुवीटोन' निर्मित 'चिन्तामणि' भी १९३१ में सवाक फिल्मों में से एक थी. १९३६ के आस पास कई फिल्मों में संगीत देने वाले पं० बद्रीप्रसाद ने इस स्टण्ट फिल्म में सर्व प्रथम अभिनय किया था. इस फिल्म के गीतों की प्रथम पंक्तियाँ यूं थीं—सुकर्मो या कुकर्मों का नतीजा जीव पाता है ·', जिस मानव ने पितृ भक्ति में अपनी निसार किया···' 'जगत यह खाली देखने का तमाशा है···'.

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के कथानक पर आधारित मास्टर मोहम्मद के संगीत निर्देशन में 'कृष्णाटोन' निर्मित

फिल्म 'हरिश्चन्द्र' भी १९३१ में बनी थी जिसके गीत न जाने कहाँ गुम हो चुके है फिल्म के कुछ गीतों की झलक तो देखिए—'यमुना जल भर लावें चलो जनियाँ···' 'जियरा रे कल नहीं पाये सगरी रतियाँ री···', 'बदल जाती है यह दुनियाँ समय जिस दम बदलता है ··'. सभी सन्तान ईश्वर के, पिता वह एक ईश्वर है····' 'खेलो कूदो खेलो कूदो आओ भाई खेलो कूदो ··' ये अन्तिम गीत कोरस रूप में था.

फिल्म 'आलमआरा' के अतिरिक्त इम्पीरियल फिल्म कं० की एक और फिल्म 'दौलत का नशा' (alias money') भी १९३१ में ही प्रदर्शित की गई थी जिसके गीतों की प्रथम पंक्तियाँ यूं थीं—'शाम चोली बंध खोल, कुछ मुख से तो बोल···', 'हम बेकसों का मालिक, परवरदिगार तू है···' और एक शीर्षक गीत भी था—दिल से हरि नाम भुला देता है दौलत का नशा···'.

प्रसिद्ध फिल्म निर्माण संस्था 'सागर फिल्म कं० द्वारा सवाक फिल्मों के प्रवेश वर्ष–१९३१ में सिर्फ एक ही फिल्म प्रदर्शित की गई थी जिसका नाम था—'वीर अभिमन्यू'. जिल्लो, जुबेदा के अतिरिक्त इस फिल्म में याकूब और महबूब ने भी अभिनय किया था संगीतकार एस० पी० राने के संगीत निर्देशन में बद्ध २ गीत थे—'सखी री स्वप्न में सुन्दर स्वरूप को नाथ दिखाय गयो···' एवं 'प्यास है और जल भी है, पनिहार मेरे पास है ··'.

ये थे मूक से सवाक युग में प्रवेश करने वाली १९३१ की कुछ प्रसिद्ध फिल्मों के गीत. आज इन गीतों का कहीं भी उल्लेख तक नहीं मिलता है. ये गीत जाने कहाँ गुम हो चुके हैं. वैसे यदि आल-इंडिया रेडियो या श्री लंका की रिकार्ड लाइब्रेरी में गहरी छान बीन की जाए तो बहुत सम्भव है कि भले ही इन गीतों के रिकार्ड न मिलें, टेप पर ये गीत जरूर उपलब्ध हो सकते हैं.

———

॥ गजल ॥

—शैलेन्द्र 'सुमन'

किसी को रोशनी देने को जले जाते हैं।
किसी की याद में हम गम का जहर खाते हैं॥
ये जानकर भी शमा खाक में मिला देगी।
शमा पे जलने को परवाने चले आते हैं॥
मैंने उनके हवाले दिल किया था अपना।
वो मुस्करा के मुझे रोज छले जाते हैं॥
हम उन्हें देते हैं आवाज दूर से लेकिन।
मुझे वो देखकर जमीं में गड़े जाते हैं॥
इस जमाने ने मुझे कहीं का नहीं रखा।
इधर वो बार-बार मुझपे कहर ढाते हैं।
फैली है सियाही-सी 'सुमन' गुलशन में।
हम जलायें क्या शमा जब वही बुझाते हैं॥

मेरे दिन ये कट रहे हैं

● श्रीमती पुष्पा चंदेल

मेरे दिन ये कट रहे हैं, तुम बिन तड़फ तड़फ के।
मंजिल जो सामने है, पूरी करूँगी हँस हँस के॥
मेरे दिन मेरे दिन.............

आँखों में भर के आँसू हँसना पड़ा है हमको।
जीवन के इस सफर में चलूँगी सँभल-सँभल के
मेरे दिन मेरे दिन.............

ऊल्फत जिगर से मेरी जीवन में कम न होगी।
देखें वह लाख मुझको नजरें बदल-बदल के॥
मेरे दिन मेरे दिन.............

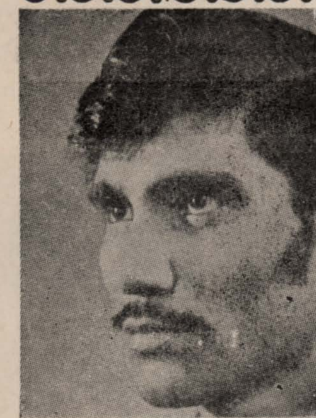
मेंहरवा नजर जो उनकी ऐसे रहे गर मुझपे।
राहों में आयें तूफां झूमूँ मचल-मचल के॥
मेरे दिन मेरे दिन.............

जिस दिन रहेंगे न हम तनहाईयाँ रहेंगी।
ढूढ़ोगे तुम हाय हमको आँखें मसल मसल के॥
मेरे दिन मेरे दिन.............

●●●

रेडियो पत्रिका

● नरेन्द्र जैन



नरेन्द्र जैन

श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन हिन्दी विभाग से प्रसारित विभिन्न दैनिक अथवा साप्ताहिक कार्य-क्रमों में से, सम्भवतः 'हफ्ते के श्रोता कार्यक्रम' ही एक ऐसा मंच या कहिये एक-मात्र कार्य-क्रम है, जहाँ से किसी कार्यक्रम की लोकप्रियता के बारे में सुनने वालों की मतगणना किसी प्रकार सम्भव है। और मैंने भी एक बार, कुछ बार और अनेकों बार, हफ्ते के श्रोता कार्यक्रम को सुन कर ही यह आँकड़े इकट्ठे किये हैं कि पिछले कुछ वर्षों में और आज भी रेडियो सीलोंन (श्रीलंका) के हिन्दी विभाग का सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम "रेडियो-पत्रिका" ही स्थापित रहा है।

इसका प्रमुख कारण, रेडियो पत्रिका का रूप, स्वरूप साहित्यिक होना है। सप्ताह के सात दिनों में आधे घन्टे के लिये जिस स्तर का साहित्यिक मनोरंजन रेडियो पत्रिका कार्यक्रम से सुनने वालों को प्राप्त होता है, वह सहज ही प्रत्येक श्रोता को अपना प्रसंशक बनाले, यह स्वभाविक ही है। यद्यपि नाम के दीवानों ने रेडियो पत्रिका के साहित्यक रूप को विकृत करने हेतु समय समय पर इस कार्यक्रम में घुस-पैठ करने में भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। मसलन कुछ श्रोता सन्देश गीत में प्रति सप्ताह केवल इस लिये पत्र भेजते हैं कि आर्टिकल भूल से शामिल हो गया तो सोने में सुहागा, अन्यथा "सन्देश पसन्द आये" पत्रों में, नाम तो बुलेगा ही। यानी तीर न सही तुक्का तो है ही। ऐसे कुछ श्रोताओं की मेरी डायरी में भी सूची है जिनका रेडियो पत्रिका के पौने दो सौ अङ्कों तक कोई आर्टिकल तो शामिल नहीं हुआ, लेकिन नाम उसी क्रम से आता रहा जिस क्रम से वे पत्र भेजते रहे। इसी तरह कुछ श्रोता उदघोषक को व्यक्तिगत तौर पर खत लिख कर या किसी रेडितो श्रोता संघ की पत्रिका के जरिये शिकायत लिखकर, शिकायत करते हैं अथवा यह प्रभाव डालने की चेष्ठा करते हैं कि रेडियो पत्रिका में उनके नाम शामिल नहीं किये जाते? यद्यपि इस बारे में रेडियो पत्रिका के उदघोषक महोदय, ऐसे श्रोताओं के योग्य, अपना स्पष्टीकरण, स्पष्ट शब्दों में देते आये हैं. कि यदि आप यह समझते हैं कि रेडियो पत्रिका के किसी पन्ने के लिये अच्छा लिख सकते हैं, तो हमें जरूर लिखिये, अगर आपका

लेख पत्रिका के स्तर का हुआ तो रेडियो पत्रिका में जरूर स्थान दिया जायेगा।" इसके बावजूद भी न जाने क्यों कुछ कलम के गरीब श्रोतागण रेडियो पत्रिका को लाठी लेकर पीछे पड़े हुये हैं और अपने समय और साधन का उपयोग सिर्फ यों कर रहे हैं कि "नहीं साहब हमारा तो नाम रेडियो पत्रिका में हो ही।"

मुझे याद नहीं आ रहा कि रेडियो पत्रिका के किसी अङ्क के लिये मेरा पत्र कभी पोस्ट होने से रह गया हो, यह बात अलग है कि आज तक सभी अङ्कों के लिये एकनाँ एक पत्र जरूर भेजने के बाबजूद, अनेकों बार डाक वालों की मेहरबानी से और अनेकों बार उदघोषकों की मेहरबानी से रेडियो पत्रिका कार्यक्रम की डाक तक भी मेरे बहुत से पत्र न पहुँच पाये हो। अतः रेडियो पत्रिका से जितनी मेरी रुचि है, उतना ही इश्क भी। इस लिये रेडियो पत्रिका के एक अनयन्य प्रसंशक के नाते मैं भी, महज नाम के शौकीन श्रोताओं से दरख्वास्त करूँगा कि अनावश्यक दबाव, शिकायतों या कीचड़ उछाल कर भी रेडियो पत्रिका के वर्तमान रूप स्वरूप को विकृत न करें, बल्कि उदार हृदय से इसके रूप स्वरूप को साहित्यिक व साहित्यक बनाने में सन्देश गीत, विचारगोष्ठी और प्रेरक प्रसँग जैसे पन्नों की कड़ियाँ जोड़ने में पहले की तरह, हमेशा एक जुट रहें। ●

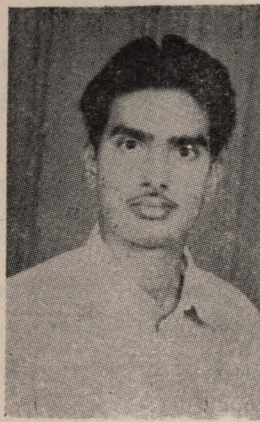
विवाह के प्रथम वर्ष में पति बोलता है, पत्नी सुनती है। दूसरे वर्ष में, पत्नी बोलती है, पति सुनता है। तीसरे वर्ष में, दोनों बोलते हैं और पड़ोसी सुनते हैं।

●●●●

भूली बिसरी समीक्षा—

पत्रिकाएँ : उदघोषक की श्रोता की

—जी० सी० गुप्ता



सिने-गायन क्षेत्र में मोहम्मद रफी व लता मंगेशकर का एक सूत्र राज्य माना जाता है इसी तरह उद्घोषक के रूप में व्यावसायिक स्वरूप में अमीन सयानी के लिए एक विशेष स्थान है. इन्हीं द्वारा सम्पादित 'प्वाइण्टर' (Pointer) और निर्माता–रिश्ते नाते वाले जगमोहन मट्टू (फिल्म : मितवा) द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका १९६१ के मध्य से पाक्षिक रूप में आई, प्रथम में सतीश भटनागर द्वारा भी सम्पादन हुआ, श्रोता जगत के लिए अविस्मरणीय लगी. फिल्म ओर संगीत का यह बुलेटिन पहले साइक्लोस्टाइल रूप में हिन्दी अँग्रेजी में छपी, तत्पश्चात् अँग्रेजी में ही सुन्दर मात्र श्रोता व संगीत प्रेमियों के लिए 'म्युजिक हिट्स (Music Hits) के झन्डे तले सामने आई--- पर काश ! अब भी प्रकाशित होती; परन्तु चार वर्ष के विभिन्न प्रकाशित स्वरूपों में छाप छोड़ गई.

पूर्णतया श्रोताओं पर आधारित व विश्वास-पात्र ग्यारह वर्ष तक रेडियो सिलोन पर सेवा रत उद्घोषक गोपाल शर्मा ने 'फिल्महिमा' नाम से पाक्षिक पत्रिका आकर्षक लुभावने रूप को समेटे हुए प्रकाशित की जो. इनके सम्पादन का प्रथम अंक १५ मार्च १९६८ (होली) को हमें प्राप्त हुए जो बाद में मासिक बना ! श्रोताओं ने वादा किया था निभाने का परन्तु खेद है उनके प्रयास को भी ठेस लगी, और प्रकाशन अधर में रह गया— हालाँकि रेडियो सिलौन के कार्य-क्रम के ही मुख्य स्तम्भ थे, जिसका श्रेय श्रोताओं को ही जाता है जिन्होंने अथक प्रयास किये—शायद व्यवसायिक एवं सुसम्पन्न ग्रुपों ने मात दे दी !

अब दूसरे भूतपूर्व उद्घोषक गीतकार शिवकुमार 'सरोज' सिलौन से जब बम्बई आये तो अमीन सायानी के सहायक बने और १९७२ से पाक्षिक मिने पत्र "चित्र भावना" का प्रकाशन-सम्पादन कर रहे हैं पर इसमें श्रोता पत्रिका कहना उचित नहीं हैं।

असामयिक रूप से प्रकाशित होती रहती हैं श्रोता संघों की पत्रिकाएँ जिनका संक्षिप्त रंग प्रस्तुत है ये १९७२ से अब तक की हैं; इससे पूर्व राजस्थान रेडियो श्रोता संघ, उदयपुर की पत्रिका 'चित्र भूमि' जो श्रोता बहुत न होकर नाम मात्र व समर्थन प्राप्त करने हेतु प्रकाशन होता रहा है। यह फिल्मी पत्रिका श्रोता नाम से

कैसे रखा जा सकता है ? सम्पादक : जी० डी० खथुड़िया ।

नूतन रेडियो श्रोता संगम, श्री गंगा नगर द्वारा समय-समय पर पत्रिकाएँ अर्द्ध श्रोता पत्रिका होते हुए भी साहित्यिक परिवेश एवं प्रतिभाओं की खोज का प्रयास सराहनीय है, जो श्रोता की गति विधियों को परिमार्जित करनी है । 'उपहार' इसका उदाहरण है ।

बिनाका एवं सैन्फोराइज्ड संघों का सम्मिलित प्रयास 'नवपल्लवी' बिलासपुर के श्रोताओं को दो धड़ों में विभक्त कर दिया है परस्पर विरोध व कटुता के कारण यह स्वयं पर आघात करते हुए एकता के प्रयास को मद्धिम बना दिया है पत्रिका उपयुक्त होते हुए भी आक्रोश का यह रूप यदि मिल बैठ कर हल कर लिया जाता तो आरोप प्रत्यारोप की स्थिति न खलती । व्यक्तिगत आरोप व उद्घोषकों के प्रति कटु शब्द अशोभनीयता को दर्शाते हैं, सबसे चर्चित इसी ध्येय को इंगित करता हुआ चाईबासा की 'क्रान्तिदूत' बुलेटिन वास्तविकता न जानते हुए गिनती के चन्द श्रोताओं पर सरासर दोषारोपण श्रोता-समुदाय के लिए अस्वस्थ परम्परा बन सकती है । सुझाव-संशोधन अथवा कार्यक्रम को नई दिशा देने के बजाय व्यक्तिगत नामोल्लेख द्वारा किसी भी प्रसारण को गति मिल सकता है ?

अखिल भारतीय रेडियो श्रोता संघ (केन्द्रीय) के प्रति अब काफी श्रोता जागरुक बनते जा रहे हैं यही कारण है कि विभिन्न श्रोता पत्रिकाओं में कुछ न कुछ अवश्य रखा जा रहा है ताकि उचित वातावरण का निर्माण करके गन्तव्य तक पहुँच सकें, इसलिए हम उन्हें बधाई देते हैं जो इस अनुष्ठान में रुचि रखते हैं, विशेषत: "श्रोता-सुमन" (कटिहार), 'श्रोता-संदेश' (होशंगाबाद) 'रंगीन छीटें' (सैन्फोराइज्ड लि० क्लब, जरीडीह बाजार) आनंद (आनंद रे. श्रो. संघ, भैरवगढ़) प्रमुख हैं । परन्तु अद्वितीय एवं मनोयोग से जीवन्त-रूप देने का प्रयास कर रहा है वह है नियमित प्रकाशित 'रेशमा' (बिलासपुर). और अब यह स्थानीय चार संघों की संयुक्त कामना के साथ प्रकाश में आने वाला है, हमारी शुभ कामना यही है कि हमें इस पुण्य-कर्तव्य में सफलता मिले ताकि अनैतिकता, द्वेष, अलगाव का अन्त हो सके, श्रोता का हिस्सा सिने-जगत में सम्मानार्थ प्राप्त हो सके ।

'सत्यकाम' (भाटापारा रे. श्रो. संघ (द्वितीय पुष्प वास्तव में श्रोता पत्रिका लगती है साथ ही कहानी कविता का चयन भी उचित ही हुआ है, परन्तु मुख्य विषय शिकायत का ही श्रोताओं में लगता है इसी प्रकार "मिलाप' (इण्डियन रे. लि. क्लब उदयपुर) सबसे सुन्दर-उत्कृष्ट छपाई और शुद्ध शब्दों की पत्रिका बन पड़ी है जिसमें कमल दीप द्वारा लिखित 'भारतीय फिल्म संगीत के ४२ वर्ष सराहनीय है, पठनीय है । 'प्रगति' जो 'प्रगति पथ' (प्रगति रे. श्रो. सं. बिलासपुर) बनी है श्रोताओं के लिए लिखी गई है परन्तु कोई नई बात नजर नहीं आती ।

भारत की एक मात्र स्नेह गर्ल्स रे. श्रो. क्लब, बिलासपुर की पत्रिका 'अपराजिता' नारी श्रोताओं द्वारा विरोध रूप से मंच पर उतरा है कविताओं का जबाब नहीं परन्तु अन्य बातें हास्य और कहानी अथवा नारी के प्रति अन्य बातें श्रोता जगत से दूर ले जाती हैं फिर भी भारत में इनका यत्न काबिले तारीफ है ।

अब 'शर्मीली' (हरे रामा हरे कृष्णा रे. श्रो. क्लब धुलिया) की बारी है और मुझे वही बात कहनी है जो सत्य काम, मिलाप, प्रगति-पथ व अपराजिता के लिए कही गई है । वैसे कविता, कहानी आदि नव लेखन में साहित्य के दर्शन कराते हैं परन्तु इस लेखन में श्रोता स्वयं के कर्तव्य एवं अस्तित्व को भूल जाते हैं और विशेष साहित्यकार बनने की कोशिश में पथ-भ्रमित हो जाते हैं ।

एक शिकायतों की लघु पत्रिका 'हमारी आवाज' लातूर से छपी जो मात्र आवाज ही है निदान नहीं ।

झाझा रे. श्रो. संघ द्वारा प्रकाशित 'आओ गले मिलें' लघु कथाओं की पत्रिका है नाम मात्र को श्रोता पत्रिका कही गई है इसी तरह 'ललकार' (आनंद रे. श्रो. संघ, लातूर); 'रंगीन छीटें' (सैन्फोराइण्ड लिस्नर्स क्लब, जरीडीह बाजार) और 'बसंत बहार' पाँढरकवडा रे. श्रो. संघ) भी लघु कविता, मिनी कहानी रखते हुए रेडियो श्रोताओं के प्रति दो शब्द शुभ कामनाओं की कहते हुए दर्शन देती हैं । वैसे महाराष्ट्र के मराठी श्रोताओं की पत्रिकाओं में हिन्दी मात्राओं आदि की त्रुटि मुख्यत: रहती है ।

आरोप प्रत्यारोप के लिए चर्चित सैयद इम्तेयाज आलम राही के सम्पादन में 'आभा' (सासाराम रे. श्रो. संघ) में भी 'नव पल्लवी' व क्रान्ति दूत' की तरह बातें होते हुए और कुछ कहने को नहीं रखा गया है ।

'आक्रोश' जिसे अखिल भारतीय नव-युवक रे. श्रो. संघ राजनाँदगाँव ने प्रस्तुत किया है अपने स्वनाम आक्रोश के प्रति न्याय किया है मात्र श्रोताओं के लिए यह श्रेष्ठ है जो हर पहलू में शिष्ट भाषा में अपना रोष व्यक्त करती है; सिने संगीत के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त मनमानी अफसर शाही एवं श्रोताओं के प्रति अन्याय को इंगित करके अन्यों के समक्ष लाना, निराकरण करना इस पत्रिका का उद्देश्य बन गया है । जो बधाई के पात्र हैं ।

और अन्त में, 'रेडियो न्यूज' (फ्लाइंग लिसनर्स क्लब कानपुर) वर्तमान नाम 'लिसनर्स बुलेटिन' जो नियमित द्वैमासिक प्रकाशित हो रहा है, का उल्लेख अत्यंत अनिवार्य है । यही एक मात्र श्रोता-पत्रिका है यदि श्रोताओं ने हृदय से स्वागत दिया तो निश्चय ही सिने संगीत, रेडियो और कला के व्यापक स्वरूप को पेश कर सकतीं है; सीमित साधन और आर्थिक बोझ के कारण वस्तुत: छोटे रूप में प्रस्तुत की जा रही है; दुर्लभ ज्ञातव्य बातें संगीत पर छाई हुई गर्त और उस पर पड़ी चादर को सर्व साधारण के सम्मुख स्वस्थ, उत्कृष्ट एवं व्यवस्थित ढंग से पाठक तक पहुँचाना इसका उद्देश्य है । आशा है, अपने लक्ष्य तक पहुँचकर अखिल भारतीय रेडियो श्रोता संघ (केन्द्रीय) को शिखर तक पहुँचायेगी और नये आयाम को छू कर नवीन व पुरातन के द्वेष को लुप्त कर संगीत, फिल्म, स्वर को सदा सम्मानित करती रहेगी ।

————

एक लड़के ने दाँतों के डाक्टर के यहाँ फोन किया । नर्स ने जवाब दिया—"डाक्टर साहब बाहर गये हैं ।"

"बहुत-बहुत धन्यबाद ! अब वे फिर कब बाहर जायेंगे ।

आपके अनुरोध पर

—प्रीतम प्यासा

किसी भी रेडियो कार्यक्रम की प्रसिद्धि और सफलता, चाहे वह दैनिक हो या साप्ताहिक उस कार्यक्रम के प्रारूप और प्रसारित करने के ढंग पर निर्भर करती है। यदि कार्यक्रम का प्रारूप और प्रसारण का ढंग प्रशिक्षित, मधुर तथा सुन्दर हो तो वह कार्यक्रम शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाता है और यदि प्रारूप और प्रसारण का ढंग ओछा और बचकाना हो तो शिकायत मिलने के साथ-साथ उसकी लोकप्रियता में भी घुन लगता है। उसके प्रशंसकों की संख्या घटती है।

इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन हमारे बीच लोकप्रिय नहीं बल्कि यह सच्चाई है कि आज श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन जितने आकर्षक और संगीतात्मक कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है, उनका अपना अलग ही महत्व है। उनकी अपनी अलग ही विशेषता है, जो श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम और लगन को स्पष्ट करता है कि वे कितने परिश्रम और लगन में रत हैं। तभी तो भारत, नेपाल, पाकिस्तान तथा अन्य देशों के हर वर्ग और हर उम्र के लोग अन्य रेडियो कार्य-क्रमों की अपेक्षा श्रीलंका ब्राडकास्टिग कारपोरेशन के कार्यक्रमों को अधिक महत्व देते हैं। उनको अधिक दिलचस्पी तथा तन्मयता से सुनते हैं। इसीलिए इस दृष्टि से श्रीलका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन प्रशंसनीय है पर कभी कभी अत्यधिक लोकप्रियता निरन्कुशता का भी आभास देती है। श्री ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के ज्यादा लोकप्रिय हो जाने से इधर मुझे पढ़ने और सुनने को मिल रहा है कि रेडियो श्रोताओं का कुछ वर्ग श्रीलका के उद्घोषकों के रवैये से क्षुब्ध और त्रस्त है। शायद ऐसा सही हो! पर मैं एक पुराना रेडियो श्रोता होने के नाते अपना व्यक्तिगत विचार उल्लिखित कर रहा हूँ कि यह एक ऐसा विवादास्पद विषय है, जिसका समाधान अभी तो क्या, निकट भविष्य में भी संभव हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

इसलिए मैं इस विषय पर कुछ न लिखता हुआ इसे यहीं अछूता छोड़ आगे बढता हूं। ऊपर मैं बता रहा था कि श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के कार्यक्रम आज हमारे बीच कितने लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। सही है। श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के दैनिक कार्यक्रम 'आपके ही गीत', 'जाने पहचाने' तथा साप्ताहिक कार्यक्रम 'वाक्य गीतांजलि', 'बदलते हुए साथी' 'भूले बिसरे 'एक और अनेक' 'शीर्षक संगीत', 'रेडियो पत्रिका भावगीत' आदि को कौन ऐसा श्रोता होगा जो न सुनना चाहेगा? सभी श्रोता इन दैनिक और साप्ताहिक कार्यक्रमों का वेकरारी से इन्तजार करते हैं।

मैं भी अपने प्रिय 'हमेशा जवाँ गीतों का रंगारंग कार्यक्रम' 'आपके अनुरोध पर' की प्रतीक्षा बड़ी वेताबी से करता हूँ। इसका बहुत महत्व है मेरी दृष्टि में। यह कार्यक्रम मुझे कई

दृष्टियों से प्रिय है और आज उसीका संयुक्त समिश्रण में इस 'गीताँजलि' द्वारा इस लेख में प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।

इस कार्यक्रम का पहला पक्ष है—समय पक्ष समय इतना व्यवस्थित और कुशल रूप में रखा गया है, जिसे प्रत्येक श्रोता सरलतापूर्वक और बिना व्यवधान के इस कार्य क्रम को सुन सकता है-रात्रि पौने दस बजे। भला कौन ऐसा श्रोता होगा जो रात्रि पौने दस बजे समय न निकाल पाता हो। इस समय आवाज काफी साफ और मधुर सुनायी देती है। रात्रि के इस सुनसान वातावरण में एक अनोखी अनुभूति होती है।

इसका दूसरा पक्ष है—अनुरोध पक्ष! जैसाकि इस कार्यक्रम के शीर्षक से ही पता लगता है; कि यह कार्यक्रम श्रोताओं के अनुरोध पर आधारित है। सच है। अनुरोध रहित कार्यक्रम सुनने में कुछ नीरस सा लगता है। अनुरोध से एक तो नाम सुनने की उत्सुकता रहती ही है। दूसरे यह इच्छा कार्यक्रम के अन्त तक विद्यमान रहती है। जिससे अन्य मित्र श्रोताओं की पसन्द का भी अन्दाजा लग जाता है। इससे कार्यक्रम की लोकप्रियता में वृद्धि होती है। मेरी राय में प्रत्येक रेडियो कार्यक्रम अनुरोध पर आधारित होना चाहिए।

अब आता है तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष यानि कार्यक्रम प्रस्तुत करने का ढंग या टेक्नीक।

श्रोताओं को याद होगा कि यह कार्यक्रम तत्कालीन उद्घोषक श्री शिवकुमार सरोज के समय से पूर्व शुरू हुआ और अब तक सफलता पूर्वक चलता आ रहा है। सरोज जी जिस कुशल और सुलझे ढंग से कार्यक्रम को प्रारूप देकर प्रसारित करते थे, यह पुराने रेडियो श्रोताओं से जाना जा सकता है। श्रोता तल्लीन हो कार्यक्रम सुनते और आनन्द प्राप्त करते थे। और अब जबकि वर्तमान उद्घोषक श्री मनोहर महाजन जी अपनी मधुर, आकर्षक और गरजती आवाज के साथ इस कार्यमें आये हैं। आकर जिस तरह उन्होंने अथक परिश्रम और कड़ी लगन से इस कार्यक्रम को सजाया और संवारा है, उससे उसकी सुन्दरता में चार चाँद लग गये हैं। हमें सहज ही सरोज जी की याद आ जाती है। अत्यधिक पुराने पुराने गीतों को प्राथमिकता देना, उन्हें समय तथा पसन्द के अनुरूप सुन्दर ढंग से छाँट-छाँट कर बजाना, गीतों के प्रस्तुतीकरण में नयी टेक्नीक को अपनाया जाना, वास्तव में प्रशंसनीय है। श्रोता जानते हैं कि महाजन जी के गीतों के पहले शेर पढ़ने का अन्दाज गीतों के रसास्वादन के साथ-साथ हमारे गालिब, मीर, जफर जैसे शायरों की याद भी तरो ताजा कर देता है। इससे अच्छा प्रयास भला और क्या हो सकता है कि जिन शायरों और कवियों की रचनाओं को हम काल के गर्त में दबा चुके हैं, उन्हें हमारे सम्मुख प्रस्तुत करना, समय की पुकार है। आज हमें ऐसे ही उद्घोषकों की और ऐसे प्रसारणों की आवश्यकता है जो हमारे इतिहास को लौटा सके। हमें हमारी सांस्कृति तथा सभ्यता का परिचय दिला सके। जिसे हम निरन्तर भूलते जा रहे हैं।

चौथा पक्ष है—कर्णप्रिय संगीत।

कार्यक्रम में पुराने गीतों और पुराने संगीत को ही स्थान दिया जाता है। नये गीत जो कि पूर्णरूपेण पाश्चात्य ढंग के रंग में सराबोर हो चुके हैं, इस कार्यक्रम के द्वार को खटखटाने में असमर्थ हैं। इस तरह यह कार्यक्रम आज के पाश्चात्य ढंग के संगीत के चेहरे पर करारा थप्पड़ है। पुराना संगीत भारतीयता को दर्शाता है। उसमें मधुरता एकरसता, कर्णप्रियता हो जिन्हें आज का संगीत जिस तरह अनेकोंनेक वाध्यवृन्दों के शोर में डूबकर उभरता है उससे गायक और गायिका सुरीला स्वर तो दबता ही है, कानों में मधुर रस घोलने

के स्थान पर एस्प्रो, एनासिन आदि सिरदर्द की याद दिलाता है। कहने का तात्पर्य है कि जो मिठास और सुरीलापन पुराने गीतों में झलकता है, उसका आज के गीतों में पूर्णता अभाव है। यह कड़ुआ सत्य है कि नये युग के नये लोग पुराने गीतों को उतने ही प्रभावशाली ढंग से मान्यता देते हैं, जितने पाश्चात्य शैली के नये गीतों को, पर पुरानी पीढ़ी के लोगों को सिवा पुराने गीतों को छोड़ कोई आकर्षित नहीं कर सकता। कल तक प्रसिद्ध गायक स्व० कुन्दनलाल सहगल के स्वर को लोग जितना प्यार और आदर देते थे, श्रोता जानते हैं कि आज भी उस स्वर को वही प्यार और आदर हासिल है। कोई भी अन्तर नहीं। अन्त में आता है—तीज त्योहारों का पक्ष।

भारत में कोई भी धार्मिक पर्व हो। तीज या ईद का त्यौहार हो। स्वतन्त्रता की घड़ी हो या हमारे शहीदों का बलिदान दिवस। हर अवसर पर हमें इसका शुभ संदेश सर्वप्रथम श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन ही देता है। राखी हो तो कार्यक्रम राखी के पावन गीतों से बहन को भाई की याद दिलाता है। राष्ट्रीय दिवस हो तो राष्ट्रीय गीतों के संगीत से गुँजता है। ईद हो तो ईद की मुबारकबाद देता है। श्रोता भारत में रहते हैं और भारतीय पर्व का आगमन होता है श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के इस कार्यक्रमों से जो मनोरंजन के साथ-साथ हमारे धार्मिक त्यौहारों में भी सहयोग करते हैं।

इस तरह इस कार्यक्रम के उपरोक्त कुछेक ऐसे गुण हैं जो मुझे सहज ही इसे सुनने के लिये आमन्त्रित और आकर्षित करते हैं। मैं सुनता हूँ। सुनते आया हूँ और शायद इसी भाँति सुनता रहूँगा। हर रविवार को, कार्यक्रम आपके अनुरोध पर।

सरकस वाले ने मित्र को बताया कि छः महीने पहले मैंने एक नया खेल शुरू किया है—शेर और बकरी की दोस्ती।

"पर उनमें आपस में क्या खींचातानी नहीं होती ?" मित्र ने आश्चर्य से पूछा।

"खैर खींचातानी तो होती ही रहती है, पर हम फिर नयी बकरी खरीद लेते हैं।"

रेडियो सीलोन और इसके श्रोता

—सपनकुमार चौधरी

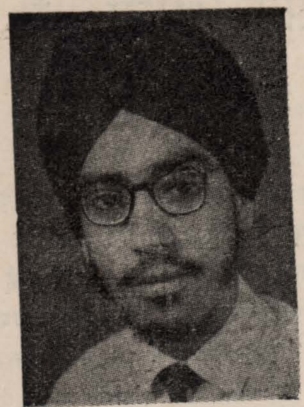
इस समय रेडियो सीलोन प्रसिद्धि के उच्चतम शिखर पर है। इसके श्रोताओं की संख्या असंख्य है। ज्यादातर श्रोता फरमाईशी कार्य-क्रमों में भाग लेते हैं। श्रोताओं के एक विशाल वर्ग का छोटा हिस्सा ही साप्ताहिक कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेता है। वैसे लगभग सभी कार्यक्रमों में भाग लेने वाले श्रोता इने गिने ही हैं। यह संख्या आपस में सहयोग होने से बढ़ भी सकती है! मनोरंजन की दुनियाँ के सहयात्री-श्रोताओं में इस समय एक बात का अभाव है। और वह है आपसी एकता और भाईचारे की। मेरा समस्त श्रोताओं से इतना ही कहना है कि जीवन में मनोरंजन के लिए रेडियो एक अच्छा साधन है, लेकिन अपने नाम के चलते आपसी सौहार्द को त्याग देना कहाँ तक उचित है? आज प्रायः यह देखने सुनने में आता है कि एक श्रोता एक ही स्थान के दूसरे श्रोता को नफरत की दृष्टि से देखता है। साथ ही दो प्रतिद्वन्दी श्रोताओं का अपना-अपना दल भी तैयार हो गया है। जरा गौर से सोचकर देखिए क्या मनोरंजन की खातिर इंसान होकर इंसान से यह वर्ताव न्यायोचित है?

यह आवश्यक है कि श्रोता हमेशा ही रेडियो कार्यक्रमों में भाग लेते रहेंगे। कुछ ऐसी भी मजबूरियाँ आ जाती हैं कि कभी-कभी रेडियो को छोड़ देना पड़ता है। उस वक्त पुरानी कटुता जो मन में समाये रहती है, श्रोता के जीवन को अनिश्चित सा बना देती है। क्योंकि जिस श्रोता का मनोरंजन से कम, दुश्मनी से ज्यादा वास्ता रहता है वह कभी भी चैन से नहीं रह पाता। इसलिए हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि एक बेजान रेडियो से अपना नाम सुनने की अपेक्षा क्या यह अच्छा नहीं कि एक इंसान के मुँह से प्रेम एवं सहयोग का स्वर सुनें?

हालाँकि समय के साथ-साथ परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं। एक श्रोता के जीवन में अनेकों उतार चढ़ाव आते रहते हैं। श्रोता-जीवन छोड़ने के बाद भी आदमी पुरानी स्मृतियाँ भुला नहीं पाता। अगर किसी का पिछला श्रोता-जीवन भाईचारे एवं सहयोग के साथ बीता हो तो यह एक अनोखा उदाहरण हो सकता है। जी हाँ, आज के बदलते माहौल में—जहाँ द्वेष और घृणा का साम्राज्य हो!

मेरे कहने का तात्पर्य बस इतना ही है कि अगर हम रेडियो के माध्यम से स्वच्छ और शुद्ध मनोरंजन चाहते हैं तो अपनी दुनियाँ अर्थात् आवाज की दुनियां के दोस्तों को साथ लेकर चलना चाहिए। धन्यवाद!

'हिन्दी फिल्म गीत कोष' के निर्माण कर्ता एवं
'लिस्नर्स बुलेटिन' के सम्पादक



हर मन्दिर सिंह 'हमराज'
कानपुर

'हिन्दी फिल्म गीत कोष'

(Encyclopaedia To Hindi Film Songs)

का निर्माण

भारतीय फिल्मों के सवाक युग के प्रारम्भ यानि १९३१ से लेकर अब तक बनी लगभग ५००० फिल्मों (हिन्दी) के गीतों की प्रथम पंक्ति, उसके गायक, गीतकार व संगीतकार के संग्रह के साथ-साथ रेकार्ड नम्बर का भी उल्लेख करते हुए, कानपुर के हरमन्दिरसिंह 'हमराज' द्वारा 'हिन्दी फिल्म गीत-कोष' का निर्माण कार्य शीघ्रता से किया जा रहा है, इस व्यवस्थित संग्रह में फिल्म निर्माण वर्ष, उसके निर्देशक, कलाकार एवं निर्माण संस्था का भी उल्लेख होगा, इस कोष में श्रोता वर्ग में से विशेष रूप से अलीगढ़ के गिरीशचन्द्र सुमन हैदराबाद के अतीक अहमद सिद्दीकी, जमशेदपुर के भारत भूषण 'दोस्त', बाँगरमऊ के वि. स्व. मिश्र, बम्बई की कु० रीता खन्ना आगरा के विजयसिंह चन्देल के साथ-साथ, केकड़ी के श्री रतनलाल कटारिया, पुराने गायक-अभिनेता सुरेन्द्रनाथ एवं कानपुर के प्रोफेसर राकेश प्रतापसिंह सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं. अन्य श्रोताओं से भी सहयोग अपेक्षित है. श्रोतागण निम्न पते पर संम्पर्क कर सकते हैं.

लिस्नर्स बुलेटन

अतीत के भारतीय हिन्दी फिल्म गीत-संगीत को जीवित रखने के लिये अक्टूबर १९७१ से, कानपुर के 'फ्लाइंग लिस्नर्स क्लब' द्वारा 'रेडियो न्यूज' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया गया था. आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद पत्रिका का प्रकाशन जारी है. अब इसे स्थायी रूप से द्वैमासिक कर दिया गया है. रजिस्ट्रेशन करवाये जाने पर 'रेडियो न्यूज' नाम न मिल पाने के कारण पत्रिका का प्रकाशन अब 'लिस्नर्स बुलेटन' के नाम से हो रहा है. श्रोता संघों में एक संघ के कम से कम सदस्यों द्वारा, अलग २ पत्रिका प्राप्त करने हेतु, एक साथ वार्षिक सदस्य बनने पर शुल्क मात्र १०) रु० है अन्यथा वार्षिक शुल्क ५) रु० है. पत्रिका प्राप्त करने के लिए निम्न पते पर लिखें :—

हरमन्दिरसिंह 'हमराज'
सम्पादक—'लिस्नर्स बुलेटिन' द्वैमासिक
फ्लाइंग लिस्नर्स क्लब
१३/३५१ गोविन्दनगर, कानपुर २०८ ००६

आकाशवाणी को निगम का रूप दिया जावे

● एम० ए० लतीफ

हम आजादी की २६वीं वर्ष गाँठ मना चुके हैं आजादी मिलने के बाद आकाशवाणी से हमने जो आशाएँ लगा रखीं थीं वह लम्बे समय के बाद भी अपूर्ण रहीं हैं समय-समय पर विभिन्न वर्गों द्वारा आकाशवाणी को निगम का रूप देने की मांग की जाती रही है पर भारत सरकार द्वारा सदैव यह आश्वासन दिया जाता रहा कि समय आने पर आकाशवाणी को भी स्वायतशासी कारपोरेशन के रूप में बदल दिया जावेगा पर वह समय कब आयेगा ? यह सरकार ही जाने ?

आकाशवाणी के समाचार केवल प्रधानमन्त्री प्रधान होते हैं यह दोष जनसंघ द्वारा लगाया गया है तथा जनसंघ अब शीघ्र ही आकाशवाणी के समाचार जाम करेगी। हो सकता है जनसंघ का यह दोषारोपण एवं जामिंग कार्य राजनैतिक स्वार्थ से प्रेरित हो—पर इस बात से भी तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय श्रोताओं में रेडियो सीलौन जैसा एक विदेशी प्रसारण केन्द्र आज भी जितना लोकप्रिय है वह लोकप्रियता २६ वर्षों की एक लम्बी अवधि में भी आकाशवाणी अर्जित न कर सकी इसके अनेक कारण हो सकते हैं फिर भी क्या यह उचित न होगा कि श्रोताओं की भावना का आदर करते हुये आजादी रजत जयन्ती समापन समारोह के शुभ अवसर पर शासन आकाशवाणी की निगम में परिवर्तन की घोषणा कर दें, ताकि आकाशवाणी भी बी०बी० सी० के समान अपना विश्वव्यापी महत्वपूर्ण कारपोरेशन सिद्ध हो, एवं सत्य तथ्य प्रसारण करने का केवल साधन ही नहीं वरन् भारत का एक मात्र अत्यन्त समस्त केन्द्र भी सिद्ध हो।

(हास्य व्यंग गीत)

मोटर क्या गजब सवारी है

राम गोपाल शर्मा "रत्नेश"

मोटर क्या गजब सवारी है।
कोई लाली है कोई कारी है ॥
कोई कई रंग की एक साथ।
जैसे नबरंगी सारी है ॥
मोटर.........

होती गुदगुदी सुढंग सीट।
कोई चौड़ी और कोई तंग सीट ॥
जब चलती मानो करै डान्स।
यह कथन कला की दारी है ॥
मोटर.........

गर्मी में देती हवा गर्म।
चुचआत पसीना बिना शर्म ॥
ठण्डी में कश्मीर सी है।
इसकी लीला भी न्यारी है ॥
मोटर.........

बिछड़ों को भी मिलवाती है।
दूर की सफर करवाती है ॥
गर जेब पर ध्यान नहीं होवे।
तब मुफलिस की जयकारी है ॥
मोटर.........

एकता मेल की गाड़ी है।
जो लड़ते वही अनाड़ी है ॥
सबको ले संग-संग चलती।
चाहे होवे नर नारी है ॥
मोटर.........

यह सफर सुहाना होता है।
आना अरु जाना होता है।
'रत्नेश' बहुत पंथी मिलते।
जाते सब बारी बारी है ॥
मोटर.........

●●●●

एक उभरता हुआ संगीतकार एवं गीतकार—

रवीन्द्र जैन

● श्री ज्ञानेशचन्द्र अटल

भारत-बसुन्धरा रत्नों की खान है। कोई नहीं जान पाता कि उन रत्नों में से कौन सा और कब धरती के गर्भ से निकल कर अपनी आभा से विश्व को ज्योतिर्मय कर देगा और उसके समक्ष अन्य सभी रत्न काँच की तरह फीके पड़ जावेंगे। अलीगढ़ नगर की धरती से भी आज एक नया ज्योति पुँज जगमगाया है और वह हैं श्री रवीन्द्र जैन जिनका मर्म-स्पर्शी संगीत और काव्य धीरे-धीरे समस्त भारत के जन-जन का कन्ठहार बनता जा रहा है।

श्री रवीन्द्र जैन अलीगढ़ के प्रख्यात समाज सेवी स्व० पं० इन्द्रमणि जैन वैद्य शास्त्री के सात पुत्रों में से तीसरे हैं। आपका जन्म २८ फरवरी सन १९४६ ई० में अलीगढ़ में हुआ था जन्मांध होने के कारण आपके बारे में इनके पिताजी ने बाल्यकाल में ही यह निश्चय किया कि आपको एक महान संगीतकार बनायेंगे और इस निश्चय का प्रमुखकारण यह था कि स्व० पंडित जी स्वयं तो शिक्षा विद् व संगीत प्रेमी थे ही उन्हें इस बालक की विलक्षण प्रतिभा व संगीत प्रेम का आभास तभी मिल गया था जब श्री रवीन्द्र जैन पाँच वर्ष के थे। उस अवस्था में आपने जो एक बार संगीत साधना प्रारम्भ की वह उनके अपने शब्दों में शायद पूरी एक उम्र जीकर भी पूरी न हो सकेगी।

श्री रवीन्द्र जैन ने संगीत शास्त्र में प्रयाग संगीत समिति से "संगीत-प्रभाकर" की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। आपकी संगीत शिक्षा अलीगढ़, नागपुर और कलकत्ता में हुई। समस्त बंगाल आज भी आपकी सुमधुर बंगला रचनाओं से आल्हादित है। हिन्दी के अतिरिक्त बंगला और उर्दू भाषा में आपकी रचनाएँ और उनकी संगीतात्मक सृष्टि प्रकाशमय है, अन्धकार नेत्रों के मुदित होने से नहीं ज्ञान चक्षुओं के मुदित होने से मुदित होता है।

श्री रवीन्द्र जैन ने भारतीय परम्परा की उस प्राचीन शृंखला को पुनः जोड़ दिया है जिसमें सूर और तुलसी हुए थे संगीत और शरीर और काव्य आत्मा है इसे श्री रवीन्द्र ने सिद्ध कर दिया है। आज जब हमारे देश में फिल्मों के माध्यम से सस्ती काव्य कृतियां और हल्का संगीत हमारे जीवन के नैतिक पतन को और गति प्रदान कर रहे हैं तब श्री रवीन्द्र जैन का उदय एक अद्भुत चमत्कार है और हमारा विश्वास है कि वह अपनी रचनाओं से हमारे मन ओर मस्तिष्क को अनजाने ही एक ऐसे धरातल पर पहुँचा देंगे जहां सत्यं, शिवम् सुन्दरम् का समन्वय होगा और श्री रवीन्द्र के यश के साथ अलीगढ़ नगर ही नहीं प्रत्युत्तर समस्ते भारत का यश भी दिग् दिगन्त में व्याप्त हो जायेगा।

श्री रवीन्द्र जैन ने केवल सुनकर जितना साहित्य पढ़ लिया है उसकी सम्भवतः हम कल्पना भी कर सकते। यही कारण है कि जहाँ एक और उनके प्रसिद्ध गीत 'दुख तेरा हो दुख मेरा हो, दुख की परिभाषा एक है' में दर्शन की छाप है तो 'सजना है मुझे सजना के लिए' में प्रेम और मिलन की

तीव्रता। आपकी गजलें हृदय पर एक अमिट प्रभाव छोड़ देती हैं, क्योंकि उनकी बनावट में शब्दों के जाल नहीं भावनाओं के रंग भरे हैं। उनके भक्ति प्रधान गीत सुनते समय ऐसा लगता है कि वे किसी अत्यन्त भक्ति रस पूरित विरक्त की याचना से पगे हैं और दूसरी ओर उनके हास्य-प्रधान और आधुनिक पौप संगीत पर आधारित कैब्रे गीत हमारे समक्ष एक अत्यन्त रसिक हृदय का चित्र अंकित कर देते हैं। विनोद-प्रियता और सरलता श्री रवीन्द्र जैन के व्यक्तित्व का समवेन अंग हैं।

श्री रवीन्द्र जैन की विलक्षण और अद्‌भुत स्मरण शक्ति और प्रज्ञा का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वे यद्यपि सैकड़ों गीत लिख चुके हैं, अनेक रचनाओं को संगीतबद्ध कर चुके हैं किन्तु उनमें से एक भी लिपिबद्ध नहीं है। श्री रवीन्द्र जैन का काव्य और संगीत आधी दर्जन से अधिक फिल्मों के माध्यम से शीघ्र ही समस्त भारत में गूंज उठेगा ऐसा हमें विश्वास है।

श्री रवीन्द्र जैन की अब तक दो फिल्में प्रदर्शित हो चुकी हैं। प्रथम—"काँच और हीरा" तथा द्वितीय "सौदागर" इसे केवल रवीन्द्र जैन का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि गीत और संगीत पक्ष प्रबल होते हुए भी दोनों फिल्में बाक्स आफिस पर पिट गईं। सचमुच भारत में अच्छी फिल्मों के दर्शक नाम मात्र को हैं। इनमें "सौदागर" तो आस्कर फिल्म महोत्सव के लिए एक मात्र फिल्म चुनी गई है। बोक्स आफिस पर भले ही सौदागर सफल न हुई तो लेकिन उसके गीत आज भी प्रत्येक रेडियो स्टेशन पर गूँज रहे हैं।

रवीन्द्र जैन की एक और प्रदर्शित होने वाली फिल्म है 'चोर मचाए शोर' इसके गीत भी इस समय अत्यन्त लोकप्रिय हो रहे हैं। 'ले जायेंगे, ले जायेंगे', 'एक डाल पर तोता बोले' 'घुँघरू की तरह बजता ही रहा' तथा 'आगरे का घाघरा' ये सभी गीत प्रसिद्धि पा चुके हैं।

श्री रवीन्द्र जैन की आगामी फिल्में इस प्रकार हैं शतरंज के मोहरे (नीतूसिंह-राकेश पांडे),
हाथी के दाँत (आशा सचदेव-राकेश पांडे)
स्वाभिमान (अनामिका—सतीशकौल)
भक्तों के भगवान(सुषमा—आशीषकुमार)
कुन्डलपुर का राजकुमार 'लोरी, एन० सी० सिप्पी की तथा राजश्री फिल्म की आगामी फिल्में जिनके अभी नाम नहीं रखे गए हैं।

बचपन से ही संगीत की ओर रुचि होने के कारण आप संगीत की उच्च शिक्षा हेतु कलकत्ता चले गए। वहाँ पर आपने बंगला सङ्गीत का बहुत गहराई से अध्ययन किया। एच० एम० वी० वालों ने आपमें छिपी प्रतिभा को पहचाना और कुछ गीत और भजनों को स्वरबद्ध कराके उनकी रिकार्डिंग कराई। आपकी प्रथम रिकार्डिंग १४ अगस्त १९७१ को हुई और गीत था 'माना कि तेरे होंठ मेरा जाम नहीं है।'

कलकत्ता में ही आपकी मुलाकात श्री राधेश्याम झुनझुन वाला से हुई। श्री झुनझुनवाला रवीन्द्र जैन से बहुत प्रभावित हुए और वे रवीन्द्र जैन को अपने साथ बम्बई लिवा लाए। श्री ताराचन्द बड़जात्या ने जब रवीन्द्र जैन से कुछ गीत सुने तो उन्होंने तुरन्त अपनी फिल्म 'सौदागर' के लिए कन्ट्राक्ट कर लिया। एन० सी० सिप्पी ने भी अपनी आगामी फिल्म 'चोर मचाए शोर' के लिए भी रवीन्द्र जैन को अनुबन्धित कर लिया। जैसे ही 'सौदागर' के गीत रिलीज हुए वैसे ही कुछ अन्य निर्माता भी रवीन्द्र जैन को अनुबन्धित करने के लिए तैयारी करने लगे। लेकिन रवीन्द्र जैन का विचार है कि एक समय में अधिक से अधिक फिल्में अनुबन्धित करना किसी भी संगीत निर्देशक

के लिए हानिकारक है क्योंकि इससे वह अपनी प्रतिभा का सही उपयोग नहीं कर सकता है।

रवीन्द्र जैन सदैव अपने गीतों की धुनें भारतीय संगीत पर ही बनाते हैं। लेकिन वे इस बात को भी अनुभव करते हैं कि कहानी के अनुसार पाश्चात्य संगीत का भी प्रयोग करना अनुचित नहीं है उनकी रचना एक मीठी एक कड़वी तुझको कौनसी पसन्द' फिल्म 'काँच और हीरा' तथा 'ये मेरा जादू, 'चोर हो या साधू' फिल्म 'चोर मचाये शोर' में दोनों गीत फिल्मों में कैब्रे डान्स हैं और इनका संगीत भी ऐसा दिया गया है कि दर्शक झूमता है।

लोक गीतों की धुन बनाने में तो आपका जवाब नहीं। फिल्म 'चोर मचाये शोर' में आशा भोंसले का यह गीत 'आगरे से घाघरा मँगादे रसिया' ब्रज लोक संगीत पर आधारित है जो कि एक सफल संगीत रचना है।

सँगीत के साथ-साथ गीत लिखने में तो उनके भाव विचार तथा हृदय की पीड़ा हृदय को छू जाते हैं। 'नजर आती नहीं मन्जिल' गीत की रचना तो आपने ५ मिनट में ही करली थी और इस गीत में आपके अपने हृदय की पीड़ा को गीत के रूप में व्यक्त की है। इसी प्रकार के कुछ अन्य गीत इस प्रकार हैं जिसमें कवि ने अपने हृदय की व्यथा को व्यक्त किया है।

घुँघरू की तरह बजता ही रहा कभी इस पग में कभी उस पग में (चोर मचाये शोर), दुख तेरा हो दुख मेरा हो, दुख की परिभाषा एक है (लोरी) जो दर्द दिया तुमने गीतों में पिरो लेंगे (लोरी) फिल्म 'लोरी' में आपने एक कव्वाली भी रफी-आशा के स्वरों में रिकार्ड करायी है जो चार हिस्सों में है। कव्वाली के बोल हैं 'महफिल में आज उनको दीदार हो गया।"

नये संगीतकारों में रवीन्द्र जैन जिस प्रकार उन्नति के शिखर की ओर बढ़ रहे हैं उससे यही आशा होती है कि कुछ ही वर्षों में भारतीय फिल्म संगीत पर छा जावेंगे और हर सिनेमा प्रेमी के मुखसे उनके ही गीतों की गुनगुनाहट सुनाई देगी। रेडियो श्रोताओं को ओर से 'गीताँजलि' उनके सुखी जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें अर्पित करती हैं।

स्वर्गीय सहगल की पुण्य तिथि पर—

श्रद्धांजलि

श्री वी० एस० मिश्र

हम आज तक गमों के उस शैलाव को नहीं हटा पाए जो २७ वर्ष पूर्व हमारे मन-सरोवर पर छा गया था. हटा भी नहीं सकते. क्योंकि हर बार जनवरी मास की १८ वीं तिथि एक करुण कथा दोहराकर स्वयंम् तो मौन हो जाती है किन्तु हम... हम अपने दिल के फफोलों को सान्त्वना के छीटों से ठण्डा करने का असफल प्रयास पूरे वर्ष करते रहते हैं. सन् ४७ में भी यही अभागिन तिथि आई थी, अस्ताचल की किरणों के साथ कंचन पालकी लेकर. और सदा के लिए ले गई थी हमारे उस 'कुन्दन' को जो अब तक संगीत की हर कसौटी पर खरा उतरा था। इसी दिन शान्ति के आराधक और संगीत के इस साधक को कराल काल ने अपने कठिन करों में कवलित कर लिया था। और तब...जीवन-शोभा के इस अमर गायक के शोक में कौन नहीं रोया था ? हर सुमन अश्रु पूरित था, कोयलों में पावक-कण बरसाए थे. माँ वाणी ने भी बेदना की वीणा पर निर्मम कराघात कर नीरव राग गाए थे. उस दिन हर सिम्त थी बस एक ही आवाज-एक ही स्वर—"जब दिल ही टूट गया हम जी के क्या करेंगे..."और हम फिर कभी न जी सके. आज भी हमारा दिल रोएगा—गायन और अभिनय की उस मूर्त प्रतिमा के लिए जो सङ्गीतमय थी. आज हम फिर करेंगे—दो क्षण मौन रहकर-जीते जी आत्म हत्या।

कुन्दनलाल सहगल ! भाग्य की विडम्बना से वस्तु समाज के अभिशापों से ग्रस्त, आयत लोचन, अमृत-पुत्र, तात्विक, उन्नत ग्रीव, ऊर्जस्वी सहगल आज अपनी गिरि-शिखर सदृश स्वर्ण काया को त्याग आत्मलीन हो चुका है. सुर मौन हो चुके हैं. सङ्गीत के इन पुजारी की भौतिक काया तो छितिज के अञ्चल में, जगत पावनी की उत्ताल तरंगों में, अनल की लपटों में, गगन के विस्तार में, मरुत के झोकों में तिरोहित हो गई किन्तु उसकी यश-काया........वह तो अजर और अमर है.

जब दिल ही टूट गया, हम जी के क्या करेंगे.

उल्फत का दिया हमनें इस दिल में जलाया था.
उम्मीद के फूलों से इस घर को सजाया था.
इक भेदी लूट गया—हम जी के क्या करेंगे.
जब दिल ही.........

मालूम ना था इतनी मुश्किल हैं मेरी राहें.
अरमाँ के बहे आँसू, हसरत नें भरीं आहें.
हर साथी छूट गया, हम जी के क्या करेंगे.
जब दिल ही.........

कभी न हीरो का रोल दिया

गिरीशचन्द्र सुमन

कभी न समझा मेरे मन को, कभी न इसका मोल दिया,
तूने अपनी नई फिल्म में, नहीं हीरो का रोल दिया।

बम्बई बुलाकर तूने मुझसे की है मेरी सबसे बुराई,
किसी ने भी चाँस नहीं दिया, कैसी सबने प्रीत निभायी।
आस दिला हीरो की मुझको जीवन में दुख घोल दिया,
तूने अपनी नई फिल्म में, नहीं हीरो का रोल दिया।

अभिनय में मैं हुँ राजेश, लेकिन तूने न पहचाना,
देव आनन्द-सी अदा है मेरी. यह भी तूने नहीं जाना।
मेरे अभिनय को तूने हाय, कुछ सिक्कों में तोल दिया,
तूने अपनी नई फिल्म में, नहीं हीरो का रोल दिया।

कभी न तूने सोचा होगा, ऐ मेरा दिल तोड़ने वाले,
इस हीरो का अब क्या होगा, मुझे अकेला छोड़ने वाले।
मेरी सच्ची कला को तूने मिट्टी में ही रोल दिया,
तूने अपनी नई फिल्म में, नहीं हीरो का रोल दिया।

है वक्त अभी ओ निर्माता, अब भी तू मुझसे करले प्यार,
मत कलाकार का हृदय तोड़, करले अब भी इसे स्वीकार।
होगी फिल्म हिट सभी जगह, ले ऐसा मैंने बोल दिया,
तूने अपनी नई फिल्म में, नहीं हीरो का रोल दिया।

ख्यालों में 'भूले बिसरे'

—नवाब असगर अली

सावन का महीना। रात्रि के दस बज चुके है सुबह से वर्षा शुरू है ! थमने का नाम नहीं ! रह-रह कर बिजली गरजने की आवाज के साथ साथ रोशनी कमरे में आती है ! एक पल चका चौंध ! कमरा रोशन और फिर वही बल्ब का दुधिया प्रकाश ! मैं बेचैन हूं ! पास में रखा मरफी कम्पनी का रेडियो उदास सा लग रहा है ! देखता हूं ! एक नजर भरके !

ख्याल आता है ! स्वीच आँन करता हूँ ! २५ मीटर पर सुई आ ठहरती है ! आवाज उभरती है !

यह श्री लंका ब्राड कास्टिंग कारपोरेशन का विदेश विभाग है ! रात्रि के दस बज चुके हैं। अब शुरू होता है आपका प्रिय कार्यक्रम—भूले बिसरे जी हाँ प्रोग्राम "भूले बिसरे।"

मस्तिक जागरुक होता है। दिमाग की तनी और ऐठी हुई नसें स्वाभाविक अवस्था में आती हैं ! मैं कार्यक्रम सुनने में दिलचस्पी लेता हूं ! कार्यक्रम चलता है ! एक के बाद एक गीत उभरते हैं ! ऐसे गीत, जिन पर समय की मोटी परत गर्द बनकर जम चुकी है !

उदघोषक कहते भी हैं ! अपनी बात बार-बार दोहराते हैं—मैंने इसे बड़े परिश्रम और अथक प्रयास से छांटा है ! खोजा है !

शायद उदघोषक ठीक ही कहते हैं। मैंने इन गीतों को इससे पहले तो कभी नहीं सुना ! स्मृति पट पर दवाव डालता हूं ! नतीजा—जीरो ! निर्मला का स्वर पहले कभी सुना ?

नहीं !

कभी अंधों की दुनियाँ; के गीत की परमाईश की ?

उं० हूँ।

फिल्म 'मेरी आँखें' का गीत डायरी में नोट है ? इन्कार में सिर हिलाता है।

सब कुछ नया प्रतीत होता है ! सिलोन के प्रचलित कार्यक्रमों से सर्वथा भिन्न !

'भूले बिसरे' शीर्षक सार्थक हैं ! मैं तन्मयता से कार्यक्रम सुनता जा रहा हूँ ! हर पल के बाद नवीनता का आगमन ! हर गीत के बाद—नये गीत का प्रवेश ! हर स्वर नया—अपनी मधुरता लिए हुये। अपने सुरीले पन में अपनी कर्ण प्रियता के साथ।

हर अन्दाज एक से एक बढ़ कर !
किस-किस की प्रशंसा करूँ ?
क्या गायक की…?
क्या गायिका की…?
क्या मधुर संगीत की ?
क्या गीत के भाव की ?
क्या प्रसारण के टेक्नीक की ?
क्या उदघोषक के अथक प्रयास की ?
क्या कार्य-क्रम के शीर्षक की ?

प्रत्येक पहलू तो अपने आप में एक से एक बढ़कर है ! एक से एक गुण अपनी झोली में समेटे है !

मैं,—

क्या उस गायक या गायिका की तारीफ न करू, जो आज के वैज्ञानिक उपकरणों के अभाव में भी अपने गले से मधुर रस टपकाते थे ! श्रोताओं को अपनी सुरीली आवाज के जादू से मोह लेते थे ! एक बार की सुनी आवाज बार-बार सुनने को लालायित करती थी !

क्या उस मधुर संगीत और गीत के भाव को प्रशंसात्मक स्थान न दूँ। क्या भुला दूँ कि उस समय के संगीत में क्या कशिश और कैसा माधुरी था कि संगीतकार गीतों के भाव के साथ-साथ संगीत को अल्प वादय वृन्दों के सहयोग से ऐसा सजीव रूप देता कि श्रोता उस गीत की एक-एक पंक्ति में डूब जाते ! उस गीत के जादुई-संगीत के साथ-साथ झूम उठते ! अपने अस्तित्व तक का एहसास न कर पाते ! सोचिये, क्या आज के पाश्चात्य संगीत के रंग में रंगा हुआ संगीत आपको मनोरंजन प्रदान करता है। आपके थके मस्तिष्क को तरावट देता है। क्या आज के लिखने का बेतुका तरीका आपको पसंद आता है। आपको कभी अपने शब्दों के माया जाल में उलझाने में सफल हुआ है।

मैं समझता हूं कि आप शायद ही कभी वाह-वाह किये हों, इन गीतों को सुनकर। जब ऐसा है तो मैं इसे भी कैसे अछूता छोड़ दूँ कि प्रसारण की टेक्नीक आला दरजे की नहीं है ! उद्घोषक महोदय हमें गीतों के रसास्वादन कराने के साथ-साथ गीतों के इतिहास की जानकारी भी देते हैं ! गायक और गायिका के जीवन से परिचित कराते हैं !

जब गीतों को सुनने के लिये हम वर्षों से उम्मीद बांधे थे वह अब इस प्रोग्राम के द्वारा संभव हो रहा है !

निश्चय ही यह उदघोषक के अथक प्रयास ओर लगन का परिणाम है, जो यह कार्यक्रम अपने अल्प समय में ही श्रोताओ की जुबान पर चढ़कर लोक प्रियता की सीमा को लाँघ चुका है ! अपने कम वक्त में अधिक सामग्री से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन करने में सफल हुआ है ! हमारी भूली बिसरी याद को भूले बिसरे के अन्तर्गत जिस खुबसुरती से कुरेदा जा रहा है ! वह प्रशंसनीय प्रयास है !

श्रोताओं के मनोनुकूल है !

कामना करूँगा कि प्रोग्राम भूले बिसरे में और चमक आये ! यह श्रोताओं का टाप पसंदीदा प्रोग्राम साबित हो। अन्त में इस कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता मनोहर महाजन को बधाई देता हूं कि आपके ही अथक प्रयास से ये कार्यक्रम इतना सुन्दर बन पड़ा है।

———

रिपातार्ज–विचार

अखिल भारतीय रेडियो-श्रोता संघ

—गोपालचन्द्र गुप्त

जन जीवन इस बात के लिए आश्वस्त है कि एक ऐसी सुदृढ़-निष्पक्ष संस्था कार्य रत हो जो कला व संस्कृति के सूत्र गीत व संगीत पर अपनी दृष्टि रखे, इस प्रकार श्रोता-जगत का मार्ग दर्शन कर सके ! इसे जागृत करने हेतु वर्षों से प्रयत्न किये जा रहें हैं ''''वातावरण व मतैक्य की एक रूपता नितांत आवश्यक है शनैः शनैः बढ़ते जा रहे हैं। फलस्वरूप एक अल्प प्रयास द्वारा १४ अक्टूबर १९७३ को 'अखिल भारतीय रेडियो श्रोता संघ' (केन्द्र : बिलासपुर) स्थापित किया गया है।

हालांकि त्रुटियाँ यहां भी हुई हैं, प्रथम बार ही इस प्रकार के अनुष्ठान के लिए सर्व शुद्धता व सतोष प्रद का दावा असम्भव सा है फिर भी एक स्थानीय संघ के मात्र इतने प्रयास ही स्तुत्य कहे जा सकते हैं, यह एक महान् उपलब्धि है भविष्य के आधार हेतु। रही आमन्त्रण अथवा विरोध-असहमति की बात सो यह व्यक्तिगत भावाभिव्यक्ति है। सम्मेलन के आयोजन कर्त्ता स्वीकार करते हैं अपनी भूल लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि किसी भी व्यक्ति विशेष को तिरस्कृत किया गया है अथवा कोई गुट विशेष को निमंत्रित किया गया था। यह भी कहना शोभा नहीं देता कि अमुक व्यक्ति का चुनाव क्यों किया गया ? यह तर्क देना कि फलां व्यक्ति अनुभवी, पुराना श्रोता है, इसे शामिल करना चाहिए, लेकिन हम तथ्य को आधार मानते हैं लोकतन्त्र में बहुमत का योग प्रबल होता है न कि पुराने व नये श्रोता का भेद कर ?

आप जागरूक हैं आपका एक ही मत चरमोत्कर्ष को छू सकता है फिर प्रथम बार का यह मिलाप ही अन्तिम नहीं माननी चाहिए, सद्भाव, एकता व मृदु शब्दों से ही हमारा पड़ाव आगे बढ़ सकता है। परस्पर द्वेष या प्रतिशोध पूर्ण तीक्ष्ण-कटाक्ष आरोप-प्रत्यारोप द्वारा कदापि सम्भव नहीं है कि हमारी मर्यादा अक्षुण्ण रहेगी।

वह रविवार का शुभ दिन था लेकिन समय-सारिणी की पावन्द न रहने वाली सवारियाँ घण्टों देर से पहुंचकर भी हमें मैत्री, सद्भाव के प्रति विचलित न कर सकीं। इस कारण सम्मेलन की कार्यवाही तक भी श्रोता-बंधु रात १० बजे तक पहुंचते रहे। समापन रात्रि लगभग एक बजे हुआ।

बिलासपुर के श्रोताओं का एक धड़ व्यक्तिगत असमानता के कारण योग देने में असहमति प्रकट की''' लेकिन काफी बीच-बचाव के कारण और श्री लक्ष्मणदास गगवानी तथा श्री भारत भूषण दोस्त के प्रयत्न से यह विवाद समझौते-पत्र पर हस्ताक्षर के बाद समाप्त हो गया अत. दिन ३ बजे के बजाय कार्यक्रम लगभग साय ५ बजे से शुरू हुआ।

बहुत ही मैत्री पूर्ण वातावरण में परिचय उपरान्त सर्व सम्मति से कार्यवाही संचालन हेतु सभापति श्री एच. कुमार साहनी व उप-सभापति का भार श्री जगदीश मखीजा को मनोनीत किया गया; इनकीं संचालन पद्धति बड़ी कुशल एवं अनुभवी प्रतीत हुई। अनेक प्रश्न उठे, पत्रिका प्रकाशन, श्रोताओं की अनियमितताएँ, अखिल भारतीय रेडियो श्रोता सघ के लिए प्रतीक चिन्ह (monogram), संघ को सशक्त बनाने के लिए धन की विभिन्न स्रोतों से व्यवस्था,'''आदि परन्तु ये सभी भावी कार्यक्रम हैं अत: कार्य-कारिणी चुनाव व संघ की नींव ही प्रथम अनुभव की गई।

क्या अध्यक्ष बाहर। अनुपस्थित सदस्यों में से होना चाहिए ? तथा कार्यकारिणी के अंतिम तीन पदों के लिए सहायक होना चाहिए ? इस पर मौखिक मत विभाजन में दोनों का उत्तर प्रबल समर्थन 'हां' में मिला तथा कोषाध्यक्ष पद स्थानीय (केन्द्र का) अनिवार्य समझा गया।

अध्यक्ष ने व्यवस्था की कि समस्त श्रोता-जगत से आप नाम सुझाइये सो उपस्थित ५५ श्रोताओं ने अलग-अलग व्यक्तिगत रूप से लगभग २५ नाम दिये. कुछ ये थे, गिरीशचन्द्र सुमन, रवि शबनम, हरमंदिर सिंह, रवि चौधरी, गोपाल प्र. गुप्ता, राकेश मो. विरमानी, हरवंश छाबड़ा, जीवाराम भाई राठौर, नरेन्द्र जैन, जगदीश निगम, सैयद कुदरत अली, रमेश पंचारिया, राजश्री मुस्काती, अतीक अहमद सिद्दीकी, वर्षा अय्यर, वी. एस. मिश्र, ए. अजीज खत्री, मीना भटनागर आदि अनुपस्थित श्रोता।

विवादास्पद एवं हंगामें की स्थिति के कारण यह तय किया गया कि संघ में वही व्यक्ति सम्मिलित और कार्य कारिणी में आ सकता है जो सदस्य बना हो अर्थात् सदस्यता-शुल्क दस रुपये वार्षिक अदा किये हों अतः जिन्होंने नाम प्रस्तावित किये है वे अपने शुभ चिन्तकों के वार्षिक शुल्क अदा कर दें तभी उन्हें स्वीकार किया जायेगा फलतः सारी गति विधि प्रायः अतृमयस्क, नये मोड़ पर चल पड़ी। गिरीशचन्द्र सुमन का सदस्यता शुल्क मनिआर्डर द्वारा प्राप्त हो गया था तथा सुरजीत भाटिया (बरबिल) ने हरमंदिर सिह 'हमराज' के लिए वार्षिक चन्दा दिया—

अ. भा. रे. श्रो संघ पर यदा-कदा चर्चा का विषय रही 'रेशमा' जिसने होली अंक ७३ में सुझाव एवं विचार प्रकाशित किये लेकिन विशेष आशातीत उत्साह स्पष्ट न हो सका, पुनः सम्मेलन हेतु पूर्व घोषणा सितम्बर' ७३ की 'रेशमा' में की गई। आश्चर्य तब भी हुआ जब कई-एक श्रोता आगमन की स्वीकृति भेज कर भी नदारत रहे। इन सबके बावजूद यदि राजनाँदगाँव की तरह अन्य शहरों में भी नोक झोंक होती रही या 'रेशमा' दीपावली ७३ अंक की भाँति कुछ कटु शब्द प्रकाशित होते रहे अथवा 'क्रान्तिदूत' की भाँति व्यक्तिगत आक्षेप होते रहेंगे तो क्या आप इसे सुखद स्थिति का द्योतक मानेंगे ? तब किस अस्तित्व को ओर हमारा रुख होगा कभी आपने कल्पना की है ?

अच्छा, सम्मेलन में चलें ! जमशेदपुर रेडियो श्रोता संघ की ओर से ५०० मत-पत्र पेश किये थे जिसमें निम्न पदों का चुनाव करना था !

अध्यक्ष व उपाध्यक्ष
मंत्री व दो उपमंत्री

१. उपमंत्री—(i) पत्र व्यवहार कर्त्ता व सहेंयक
(ii) कोषाध्यक्ष व सहायक
(iii) सम्पादक प्रधान व सम्पादक

२. उपमंत्री—(i) प्रतिनिधि श्री लंका के लिए व सहायक
(ii) ,, आकाश वाणी, विविध भा० व सहायक
(iii) ,, विदेश प्रसारण व सहायक

इनमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, दो उपमंत्री तथा कोषाध्यक्ष (स्थानीय) का चुना अनिवार्य समझा गया

शेष ११ सदस्यों का चुनाव समस्त श्रोता-जगत के लिए उपयुक्त व्यक्तियों का उपयुक्त पद हेतु छोड़ दिया गया है जिसे आपको करना है ताकि भविष्य में अन्य रूप-रेखा बन सके।

अव ६ सदस्यों के चुनाव के लिए कुल १४ नाम प्रस्तावित माने गये जिनमें प्रथम चार अनुपस्थित सदस्य हैं—गिरीशचन्द्र सुमन, हरमंदिर सिंह, राकेश मोहन विरमानी, गोपालप्रसाद गुप्ता और एच. कुमार साहनी, भारत भूषण दोस्त, जगदीश मखीजा, स्नेह महापात्र, मो. रफीक खाँ, रवि चौधरी, बचकामल, मनसाराम प्रेमी, लक्ष्मणदास गंगवानी तथा इन पंक्तियों का लेखक।

गुप्त मत दान द्वारा सदस्यों ने छः के लिए निर्णय दिये। सारी व्यवस्था सुचारु ढंग से और निष्पक्ष चहकते वातावरण में सम्पन्न हुआ। मतदान की देख-रेख का भार श्री खेलसिंह पंजाबी और एक अन्य श्रोता-सदस्य को सौंपा गया था।

परिणाम—फल की गणना विशिष्ट सदस्यों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ जिसमें—

अध्यक्ष—जगदीश मखीजा 'अतृप्त'
उपाध्यक्ष—एच. कु. साहनी
मंत्री—भारत भूषण दोस्त और
दो उपमंत्री–गिरीशचन्द्र सुमन व लक्ष्मणदास गंगदानी
कोषाध्यक्ष—कु. स्नेह महापात्र 'मीना'

इस प्रकार यदि किसी के मन में असमानता की प्रवृति जन्म ले तो क्या कहा जा सकता है, हालाँकि इस सत् कर्म में किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं किया गया है यदि आपके मन में कोई ऐसी विचार भावना हो तो 'बीती ताहि बिसार दे' के आधार क्षमा जैसी नम्रता ग्रहण कीजिए। भविष्य के लिए सुझाव-विचार का द्वार सदा खुला है सशक्त बनाने में आपका हर एक मत अमूल्य है।

सम्मेलन की विशेष बात यह थी कि किसी भी व्यापारिक, व्यक्तिगत या स्मृति में श्रोता संघ का गठन स्वीकार नहीं किया जायेगा बल्कि उक्त शहर के नाम पर ही श्रोता सँघ स्थापित होगा जिससे उस स्थान के सभी जन-जीवन का बोध हो। AIRLIA तभी उन्हें मान्यता देगी, एक शहर। स्थान में एक ही सघ कार्य रत होगा। विवादास्पद संघों को जहाँ परस्पर द्वेष रूपी गुटबंदी है, मान्यता नहीं मिलेगी।

नये संघ या संघ का अस्तित्व तभी स्वीकार किया जायेगा जब उनके सदस्यों की संख्या दस से कम न होगी।

कोई भी संघ बिना अनुमति पत्रिका प्रकाशन नहीं कर सकेगा, परन्तु वर्ष में एक अंक निकालने की अनुमति मिल सकती है जिसे वितरण से पूर्व संघ की कार्य कारिणी से प्रमाण पत्र प्राप्त करना होगा।

जहाँ श्रोता संघ सदस्यों की सँख्या अधिक है या सक्षम हैं उनके शहर में चैरिटी शो या कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जायेगा ताकि AIRLIA व स्थानीय सँघ की आर्थिक समस्या हल हो सके।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आगामी विशाल अधिवेशन '७४ में होगा, इसलिए समस्त श्रोता-सँघों से अनुरोध है कि मैत्री व एकता की लड़ी को अटूट बनाने के लिए, वे सम्मेलन कहाँ करना चाहेंगे, साथ ही साथ सम्मेलन के भार का पूरा बजट भी भेजें जो उन्हें स्वीकार हो, सहन कर सकें। विवरण केन्द्र और कार्यकारिणी के सदस्यों को भेजें, अप्रेल '७४ तक। आशा है सफलता मिलेगी; वैसे इस क्षेत्र और अन्य बड़े महानुभावों के आशीष हमें प्राप्त हैं परन्तु कार्य का दायरा हमारा ही है वे हमें प्रेरणा ही दे सकते हैं हाथों में हाथ नहीं जोड़ सकते ! इनके आशीर्वाद ही हमारी विजय है।

यादगार घटना

● अनिल वामन भाँडारे

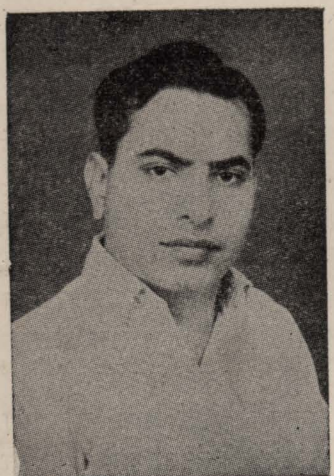
बात मई माह की है मेरे स्थित इन्दौर में मेरे घर मेरे एक परम प्रिय मित्र श्री गिरीशचन्द सुमन आये हुये थे। मैं उन्हें किसी कारण पहचान नहीं सका धीरे-धीरे परिचय हुआ और थोड़े से समय में ऐसा लगा कि मानो बहुत दिन से जिस महान श्रोता को हम देखने हेतु लायातीत हमारी आंखें तरसती थीं वह आज अचानक हमारे सामने बैठा नजर आ रहा था दिल यकीन नहीं कर रहा था कि यहीं वह श्रोता है जिसे मैंने अपना पत्र मित्र बनाया है और पत्र मित्रता बनने के बाद भी मेरा प्यार आज उसे मेरे यहां खींचकर लाया इनसे मिलकर मेरे दिल के जजबात भर आये। वास्तविक में गिरीश स्वभाव से अच्छे हैं मिलनसार है और मेरे यहां आकर उन्होंने इस दोस्त पर ऐसा उपकार किया जो मैं कम से जीवनभर तक याद रखूँगा कभी भूल नहीं पाऊँगा। आज भी मैं उसे याद करता हूँ और वह भी मुझे याद करते हैं। इतफाक की बात यह थी कि वे मेरी शादी से चार दिन पहले आये। उनका स्नेह भरा प्यार मैं भूल नही पाता। आज भी वह मुझे हर साल में एक बार याद करके मुझे उपहार स्वरूप चीज भेजते हैं। मैं गिरीश से विचारों में छोटा हूँ मैंने उसे जितना बन सका उतना साथ दिया मुझे मालूम नहीं कि उन्होंने मेरे साथ जो क्षण गुजारा वे उन्हें पसन्द आया अथवा नहीं यह तो मैं नहीं कह सकता हाँ इतना जरूर कहूँगा कि मैं आज जब भी उनका चेहरा सामने देखता हूँ मुझे उनके साथ गुजारे हुथे वे क्षण आज भी याद आते हैं और तड़पाते रहते हैं। यह घटना मेरे जीवन का एक अङ्ग बन गई है जिन्हें कम से जीवन भर तक नहीं भूल पाऊँगा। ●

घवराया हुआ रोगी डाक्टर के पास आया और बोला—"डाक्टर साहव, मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि मैं अपनी हत्या कर लूँगा। क्या करूँ मैं ?"

डाक्टर ने कहा—'घबराओ नहीं, यह काम मुझ पर छोड़ दो।"

रेडियो सिलोन के साप्ताहिक कार्यक्रमों पर समीक्षा

—बचकामल



आपके अनुरोध पर :—यह साप्ताहिक कार्यक्रम बेहद लोकप्रिय कार्यक्रम माना जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम पुराने से पुराना कोई भी गीत अपने अनुरोध पर सुन सकते हैं। सच पूछा जाए तो इस प्रोग्राम के द्वारा हमें संगीत का वास्तविक आनंद प्राप्त होता है। इसमें उछल कूद वाले, तड़क भड़क वाले या अश्लील या वाहियात गीत नहीं बल्कि अपने समय के सीधे सादे संगीत में पुराये हुये गीत ही सुनने को मिलते हैं जो कि रात की खामोशी में बड़े ही अच्छे लगते हैं। इतना ही नहीं इस कार्यक्रम के वर्तमान् उद्घोषक श्री मनोहर महाजन द्वारा जो बीच बीच में शेर वगैरह बोले जाते हैं उससे इस कार्यक्रम में और भी ज्यादा रोचकता आ जाती है। श्रोताओं के विवाह आदि के अवसरों पर भी इस कार्यक्रम द्वारा गीत बजाकर श्रोताओं को बधाईयाँ एवँ शुभकामनाएँ दी जाती हैं।

वाक्य गीताँजलि :—यह साप्ताहिक कार्यक्रम १३ वर्षों से लोकप्रियता की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ आ रहा है। यदि इस कार्यक्रम को दिमागी-वर्जिश का कार्यक्रम कहा जाए तो आतिशयोक्ति न होगी क्योंकि इस कार्यक्रम को बनाने के लिए श्रोताओं को अच्छी खाशी दिमागी वर्जिश (कसरत) करनी पड़ती है। इस कार्यक्रम की लोकप्रियता का एक कारण यह भी हैं कि इसमें विशेष अवसरों त्यौहारों, महापुरुषों के जन्म दिन एवँ पुण्यतिथियों तथा सँगीतकारों आदि की पुण्य तिथियों के अवसरों पर विशेष वाक्य प्रसारित किए जाते हैं। एक विशेषता यह भी है कि इस कार्यक्रम में प्रायः सभी वाक्य ऐसे ही प्रसारित किए जाते हैं जिनमें तुकबंदी होती है। इस कारण वाक्य सुनने में भी काफी रोचक एवँ मजेदार लगते हैं।

संदेश गीतावली :—यदि यह कहा जाए कि 'संदेश गीतावली' कार्यक्रम रेडियो सिलोन का एक मात्र संदेशात्मक प्रोग्राम है तो अतिशयोक्ति न होगी। यकीनन् इस कार्यक्रम में प्रसारित होने वाले विभिन्न प्रकार के संदेश एवं संदेशों के अनुरूप गीत हमें काफी प्रेरणा प्रदान करते हैं। निःसन्देह यह एक बहुत ही अच्छा कार्यक्रम है।

शीर्षक-संगीत :—साप्ताहिक कार्यक्रम भी लोकप्रिय कार्यक्रमों में गिना जाता है। इसमें भी विशेष अवसरों पर विशेष शीर्षक प्रसारित किए जाते हैं।

पहले जब इस प्रोग्राम को पुराने उद्घोषकों गोपाल शर्मा पेश करते थे तो कार्यक्रम काफी मनोरंजक एव दिलचस्प हुआ करता था। उसके वाद मनोहर महाजन ने इस कार्यक्रम को पेश करके काफी

सुन्दर बना दिया था तथा वे नित्य ही नए नय व अनोखे प्रकार के शीर्षक प्रसारित करते थे। अब इस कार्यक्रम को दलबीर परमार जी पेश करते हैं—किन्तु परमार भाई इस कार्यक्रम को रोचक बनाने में असमर्थ रहे। वही घिसे पिटे पुराने शीर्षक बजाने लगे। किन्तु अभी हाल ही में उन्होंने भी अपना ढंग थोड़ा बहुत बदल दिया है। निश्चय ही उन्होंने 'खत' 'बिछुवा' 'इंतजार' 'सलाम' आदि शीर्षक बड़े ही अच्छे एव मनोरंजक ढंग से पेश किए। आशा है परमार भाई भविष्य में भी इस कार्यक्रम को सुन्दर ढंग से पेश किया करेंगे।

जब आप गा उठे :—यह कार्यक्रम भी लोकप्रिय कार्यक्रम है इस प्रोग्राम के माध्यम से हमें ऐसे गीत सुनने को मिलते हैं जो श्रोताओं के जीवन में घटी हुई घटनाओं पर आधारित होते हैं। किंतु आजकल इस कार्यक्रम का स्तर भी काफी गिरता जा रहा है। इसमें अधिकाँश घिसे पिटे तथा प्रणय-गीत ही ज्यादातर प्रसारित किए जाते हैं तथा वही घटनाएँ जो एक बार प्रसारित हो चुकी होती हैं उनमें थोड़ा बहुत परिवर्तन करके श्रोतागण उन्हें पुनः बजवा देते हैं।

रेडियो पत्रिका—नए कार्यक्रमों में 'रेडियो पत्रिका' कार्यक्रम है बेहद लोकप्रिय कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम को मनोहर महाजन ने प्रारंभ कर एक बड़ा ही प्रशंसनीय कार्य किया है। उनके अथक परिश्रम एवं लगन ने इस कार्यक्रम को सुन्दर बनाने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। यह कार्यक्रम प्रवृद्ध श्रोताओं का रगमंच है। रेडियो पत्रिका का हर अंक अपने आप में एक नई विशिष्टता लिए होता है। आज हर श्रोता ने रेडियो पत्रिका क्रमांक २०० को पसन्द किया इन्होंने काफी परिश्रम करके इसे प्रसारित किया।

भूले बिसरे गीत :—समय की गर्त में ढके हुए रिकार्डों को ढूँढ कर उन्हें काफी मेहनत एवँ लगन से सँवार कर श्रोताओ के समक्ष पेश करने का श्रेय भी मनोहर महाजन को है। सचमुच महाजन भाई इस कार्यक्रम के लिए काफी मेहतत करते हैं। उनके अथक परिश्रम एवँ लगन की जितनी भी प्रशँसा की जाय कम है। पुराने से पुराने भूले बिसरे गीतों के साथ साथ उनके द्वारा निर्माण संस्थाओं, निर्माण सन् एवँ फिल्मके प्रमुख पात्रों के बारे में दी गई जानकारियाँ निश्चय ही श्रोताओं के लिए काफी लाभदायक सिद्ध हो रही हैं। इस कार्यक्रम को और भी ज्यादा रोचक एवँ सुन्दर बनाने के लिए श्रोतागण भी समय २ पर अपने सुझाव जानकारियां इत्यादि भेजते हैं। इस कार्यक्रम में श्रोताओं के मनोरँजनार्थ माह के अँतिम गुरुवार को भूले बिसरे गीतों का फरमाईशी कार्यक्रम भी पेश किया जाता है। इसका नया रूप श्रोताओं ने बेहद पसन्द किया।

श्री लंका की सैर :—इस साप्ताहिक कार्यक्रम को भी प्रारंभ करने का श्रेय मनोहर महाजन जी को है। हर सप्ताह इस कार्यक्रम के माध्यम से श्री लंका के बारे में अधिक से अधिक जानकारियाँ दी जाती हैं। समय पर बाहर से आये हुये लोगों का साक्षात्कार भी इस कार्यक्रम में कराया जाता है। श्री लंका के विशेष अवसरों व विशेष पर्वों पर विशेष कार्यक्रम भी पेश किए जाते हैं।

कला और कलाकार :—इस कार्यक्रम को दलवीर परमार ने प्रारंभ किया। इस कार्यक्रम में गायक, गायकाओं, गीतकारों, निर्माता निर्देशकों, अभिनेता, अभिनेत्रियों आदि के बारे में संक्षेप में जानकारियाँ दी जाती हैं तथा उनकी फिल्मों के बारे में जानकारियाँ देकर गीत भी बजाए जाते हैं! निश्चय ही यह कार्यक्रम कला प्रेमियों के लिए एक अच्छा कार्यक्रम है।

———

यादगार घटना

● सपन कुमार चौधरी

हमारे जीवन में कुछ घटनाओं का महत्व कभी भी कम नहीं होता। समय के साथ २ इन घटनाओं में से कोई एक घटना हमेशा के लिये स्मृति पटल में इस तरह घर कर जाती है कि उसे अपने से अलग करना असम्भव प्रतीत होता है।

इसी तरह की एक यादगार घटना मेरे जीवन में घटी थी। पिछले वर्ष १६७२ में भू-दान-यज्ञ के प्रतिष्ठाता संत बिनोवा भावे भूमिहीन किसानों के लिये दी गई सहायतार्थ जमीन वितरण हेतु स्थानीय लोकनिर्माण विभाग के डाक-बंगले में आए। भूमि वितरण समारोह के आरम्भ होने के निश्चित समय से पूर्व ही वे अपने सहयोगियों के साथ आ चुके थे। विश्राम तथा पत्रकारों से विचार विमर्श के बाद कार्यक्रम आरम्भ हुआ। कुछ आवश्यक विचार प्रकट करने के बाद उन्होंने लोगों से गरीबों के प्रति मदद तथा सहानुभूति के लिये अपील की।

समारोह की समाप्ति के बाद बच्चों से बातचीत के दौरान उनकी बाल सुलभ प्रकृति देखने योग्य थी। उनके कहे यह शब्द 'हमेशा स्वरूप और निर्भय रहने की पूर्ण चेष्ठा करो, जीवन अपने लिये न जीकर देश के लिये जियो।' मैं हमेशा अपने मनोमस्तिष्क में गुँजते हुए पाता हूँ।

आज भी विनोबा जी की गरीबों के लिये सतत साधना जारी है। जिससे हमें उनके आदर्श से प्रेरणा मिल रही है।

गीत

● शिव कुमार 'सरोज'

पीले, जीले खुशी के रंग में
मधुवन जीवन बन जाये
प्यार की एक लहर सी उठे
मस्ती अँग अँग छा जाये
पीले, जीले ....

मदिरा-पान न कहना इसको
ये है अमृत का प्याला
शान्त करेगी तेरे मन की
भड़की हुई अग्नि ज्वाला
पीले, जीले ....

अन्तरमन की प्यास बुझाये
इसका है यह काम
जाने जग वालों ने कर डाला
क्यों इसको बदनाम
पीले, जीले ....

रेडियो सीलोन और उसके एनाउन्सर

● चन्द्रपालसिंह गंगवार

रेडियो सीलोन से अनेकों साप्ताहिक एवं दैनिक कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं इन कार्यक्रमों को श्रेष्ठ बनाने का उत्तर दायित्व उद्घोषक पर होता है. फिर आप कहेंगे कि सी० बी० सी० के अत्याधिक कार्यक्रम श्रोताओं के द्वारा लिखे होते हैं. तो कार्यक्रम की सफलता का श्रेय उद्घोषक क्यों दिया जाता है। इसके उत्तर में यही कहना है कि श्रोताओं के श्रेष्ठतम पत्रों का चुनाव एवं कार्यक्रम का आकर्षक प्रसुस्तीकरण उद्घोषक के ऊपर निर्भर होता है. अगर उद्घोषक अपने कर्तव्य पथ से विमुख हो जायेंगे तो निश्चय ही सभी कार्यक्रमों की अर्थी निकल जायेगी। इसलिये उद्घोषक महोदय को सदा निष्पक्ष होकर कार्यक्रम की सामिग्री का चयन करते हुए आकर्षक ढंग से कार्यक्रम का प्रसुस्तीकरण करना चाहिए।

श्री मनोहर महाजन

श्री मनोहर महाजन जी ने अपनी प्रभावशाली वाणी के माध्यम से श्रोताओं के आँतरिक मन में विशेष सम्मानीय स्थान बना लिया है. इनके द्वारा निर्मित साप्ताहिक भूले बिसरे कार्यक्रम वास्तव में महाजन जी के अथक परिश्रम का प्रज्वलन्त उदाहरण है। सङ्गीत सागर के गर्भ से अनमोल हीरों की खोज कोई साधारण बात नहीं है। प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण के कारण महाजन जी जिस कार्यक्रम को प्रस्तुत करते हैं. वह सभी लोक प्रिय हैं।

श्री दलबीर परमार

इनके विषय में यही कहना है कि परमार साहब एक बहुत ऊँचे कलाकार हैं. जिस कार्यक्रम को यह मन एवँ लगन से प्रस्तुत करते हैं वह निश्चय ही सफलता की कई ऊँची मँजिलों को स्पर्श कर लेता है। आपके द्वारा प्रारम्भ किया गया साप्ताहिक भाव गीत कार्यक्रम आपकी महान सद्बुद्धि का जीता जागता उदाहरण है। 'दृश्य और गीत' कार्यक्रम में प्राचीन फिल्मों के दृश्यों को स्थान देकर परमार भाई नया कीतिमान स्थापित कर रहे हैं।

श्रीमती विजय लक्ष्मी

आपने मृदुल स्वभाव एवँ हृदय स्पर्शी प्रसारण पद्धिति के माध्यम से श्रोताओं के मन को जीत लिया था किन्तु अब अनियमताओं के कारण यह अपनी लोक प्रियता को नष्ट करती जा रही है। न जाने क्यों यह इस तरह की अशोभनीय रूपरेखा को अपना कर श्रोताओं की आशाओं पर तुषारपात कर रही है। लेकिन फिर भी प्रसुस्तोकरण अच्छा है।

कुमारी शीला तिवारी एवँ कुमारी इन्द्रा हीरा नन्द जी की अन्तिम बारी है. जिन्होंने परिश्रम एवँ लगन से कार्यक्रमों को प्रस्तुत करके, अपने अल्प समय के कार्यकाल में श्रोताओं के मन में आदरणीय स्थान बना लिया। इन दोनों उद्घोषिकाओं ने जो साप्ताहिक एक और अनेक तथा बदलते हुए साथी कार्यक्रम को भूले बिसरे गायक गायक कलाकारों के द्वारा सँचालित करके एक नई दिशा दी. निश्चय ही हमारा श्रोता समुदाय दीर्घ काल तक इन उद्घोषिकाओं का ऋणी रहेगा। ●

रेडियो सिलोन, एक दृष्टिकोण

● स्नेह लता जैन

रेडियो सीलोन आज का सर्वाधिक लोकप्रिय रेडियो स्टेशन है। जहाँ यह एक ओर गीत-संगीत से श्रोताओं का मनोरंजन करता है वहीं कुछ साप्ताहिक कार्यक्रमों द्वारा जनता का ज्ञान दर्शन करने में पीछे नहीं रहता। प्रायः यहां से प्रसारित सभी कार्य-क्रम बेहद दिलचस्प एवं मनोरँजक होते हैं। साप्ताहिक कार्यक्रमों में गीतों के विविध रूपों में बदलते हुये साथी, एक और अनेक तथा वाक्य गीतांजलि उल्लेखनीय है इसके अलावा जब आप गा उठे, पसन्द अपनी अपनी, ख्याल अपना अपना श्रोता अपने मनोभावों को सुन्दर शब्द शैली में प्रकट कर अपनी मन पसन्द का गीत सुन सकता है। वास्तव में ही यहाँ की प्रसारण शैली प्रसँशनीय है, अतः किसी एक कार्य-क्रम का विस्तृत उल्लेख करना असम्भव है। यहाँ से प्रसारित कार्यक्रम अधिकतर श्रोताओं के पत्रों पर ही आधारित होते हैं। लेकिन कभी कभी उद्-घोषक पत्रों के चयन के वक्त उनकी सुन्दर लेखनी को न देखकर सिर्फ नाम देखकर ही पत्रों को शामिल कर लेते हैं और जब उलूल-जुलूल पत्र कार्य-क्रमों में शामिल हो जाते हैं। तो मनोरंजन के स्थान पर बोरियल महसूस होने लगती है। इस लिये मैं तो यही कहूँगी कि जब आप गा उठे, पसन्द अपनी अपनी, ख्याल अपना अपना तथा भाव गीत जैसे श्रेष्टतम कार्यक्रमों में पत्रों के चयन के समय-पत्रों की भाषा शैली, सुन्दर शब्दों के संकलन पर विशेष ध्यान देकर ही पत्रों को कार्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिये। न कि कुछ नामून श्रोताओं के नाम देखकर। आशा है कि अधिकारी गण मेरी इस संक्षिप्त पर अपना ध्यान आकृष्ट करेंगे। धन्यवाद! ●

"मुझे नयी कँघी खरीनी (खरीदनी) पड़ेगी। पुरानी कँघी का एक दाँत टूट गया है।"

"एक दाँस (त) टूट जाने से नयी कँघी खरीदोगे ?"

"हाँ यह अन्तिम दाँत था।"

रेडियो श्रीलंका मेरी नजर में

—सुरेश तरावल

हिन्दी में प्रसारण करने वाले जितने भी रेडियो स्टेशन हैं लोक प्रियता के अनुसार पहला स्थान श्रीलंका ब्राँडकास्टिग कार्पोरेशन का आता है। इसक। अनुमान सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि कितने श्रोता प्रतिदित इस स्टेशन से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। आइये यहाँ से प्रसारित होने वाले कुछ लोकप्रिय साप्ताहिक कार्यक्रमों की चर्चा की जाय।

रेडियो पत्रिका साप्ताहिक कार्यक्रमों में सबसे अधिक लोकप्रिय कार्यक्रम है। यह ही एक मात्र ऐसा कार्यक्रम है जिसमें हर तरह की जानकारियाँ श्रोताओं को मिलती है। कार्यक्रम का प्रत्येक पन्ना ज्ञानवर्धक सामग्री लिये हुए होता है। श्रोताओं के अच्छे अच्छे विचार जानते का सुअवसर इस कार्यक्रम से मिलता है। अधिक से अधिक श्रोताओं के पत्रों को शामिल करने के लिये कार्यक्रम का समय बढ़ाया जाना चाहिये।

पुराने गीतों में भारतीय संगीत सुनने को मिलता है, वहीं आजकल के गीतों में पश्चिमी संगीत की भरमार है। संगीत इतना तेज है कि अधिक समय तक नहीं सुना जा सकता। आजकल के गीत कुछ समय तक ही लोकप्रिय रहते हैं और धीरे धीरे स्मृति पटल से ओझल हो जाते हैं वही पुराने गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं। कारण उनका संगीत वहुत ही मधुर है और हृदय को छूने वाला है। विशेष तौर पर रात्रि के शाँत वातावरण में जब इन गीतों को सुना जाय तो सुनने वाला इन्हीं में खो जाता है। गीनों को सुनने का आनन्द दुगुना हो जाता है और इच्छा होती है इन गीतों को सुनते ही चले जाएँ। इन गीतों को लेकर दो साप्ताहिक कार्यक्रम होते हैं। पहला भूले-बिसरे गीत और दूसरा आपके अनुरोध पर। भूले बिसरे कार्यक्रम में भूले-विसरे गीतों के साथ भूले-विसरे कलाकारों के वारे में जानने का अवसर मिलता है।

अन्य साप्ताहिक कार्यक्रम जैसे वाक्य गीताँजलि, एक और अनेक, वदलते हुए साथी, संदेश गीत, हफ्ते के श्रोता कार्यक्रम भी मनोरँजक एवं ज्ञानवर्धक हैं। और हमेशा श्रोताओं को अपनी और आकर्षित करते रहते हैं। रेडियो श्री लंका की लोकप्रियता में व्यावसायिक कार्यक्रमों का भी पूरा-पूरा हिस्सा है। अब कुछ व्यावसायिक कार्यक्रमों की चर्चा की जःय।

सबसे नया कार्यक्रम है मराठा दरबार महकती बातें। कार्यक्रम बेहद मनोरँजक तो हैं साथ ही शुभकामनायें और बधाई देने के लिए एक मात्र कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम श्रोताओं का भरपूर मनोरँजन करता हैं दूसरा और सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है बिनाका गीत माला। इस कार्यक्रम के द्वारा वर्तमान में सबसे अधिक लोकप्रिय गीतों को सुनने का मौका मिलता है लेकिन

गीतों के चुनाव की जो प्रक्रिया है उसमें सुधार आवश्यक है। रेकार्डों की बिकी के आधार पर गीतों का चुनाव उचित नहीं माना जा सकता। रेकार्ड सिर्फ धनी वर्ग ही खरीद सकता है जिनकी संख्या बहुत कम है। गीत की लोकप्रियता मध्यम और निर्धन वर्ग की पसंद नापसँद पर होती है। रेकार्डों के आधार पर कई लोकप्रिय गीत कार्यक्रम में शामिल होने से रह जाते हैं। गीतों की लोकप्रियता में श्रोताओं का भी पूरा पूरा हिस्सा है लेकिन इन सब बातों की अवहेलना चुनाव प्रणाली में की गई है। श्रोता सँघों की राय के आधार पर यदि गीतों का चुनाव किया जाय तो कोई भी लोकप्रिय गीत कार्यक्रम में शामिल होने से वँचित नहीं रहेगा। आशा है बिनाका गीत माला के प्रबन्धक इस सुझाव पर ध्यान देंगे। इनके अतिरिक्त सितारों की पसन्द, कार्यकम भी बेहद रोचक है।

सभी कार्यक्रमों के बारे में श्रोताओं की तरफ से समय समय पर सुझाव दिये जाते हैं अगर उन पर उचित कार्यवाही की जाय तो प्रत्येक कार्यक्रम अपनी लोकप्रियता के उच्च स्तर की ओर अग्रसर होता रहेगा।

रेडियो पत्रिका

क्रमाङ्क २००

अलोक निगम
कानपुर

सम्पादक : जमाल

प्रस्तुतकर्ता : मनोहर महाजन

प्रकाशक

अलीगढ़ रेडियो क्लब, अलीगढ़

सम्पादकीय

रेडियो पत्रिका के आकाश पर चमकने वाले सितारे स्नेह के फूल स्वीकार कीजिए। आज रेडियो पत्रिका २०० विशेषाँक के शुभ अवसर पर रेडियो पत्रिका स्वयं आपसे मुखातिब है।

प्रिय श्रोताओं दो सौ वीं मंजिल के सफर में आप मेरे पहले कदम से ही हमसफर रहे। आप मेरे हर पन्ने पर अपनी कलम के तराशे हुए हीरे पन्ने जड़ते रहे। आपकी कलम से निकली हुई कला की कलियाँ फूल बन कर महकती रहीं। उद्घोषक बागबां बन कर चमकते रहे इसलिए गर्व से कहा जा सकता है कि—

एनाउन्सर मेरी जबान है सम्पादक मेरे सन्तरी और पाशपान है
श्रोता मेरी शान है और लेखक मेरी जान है
आज आपके प्रति मेरे दिल की गहराइयों से यहीं सदा निकलतीं है
प्रिय श्रोताओ, मेरे अस्तित्व का निखार हो तुम
मेरे अस्तित्व का निखार हो तुम, मेरे जीवन का प्यार हो तुम
शुक्रिया, बहुत शुक्रिया आपका, मेरे हर अङ्ग का अलंकार हो तुम।

आपने सुन्दर रङ्गीन और सुगन्धित शैली पुष्पों से मेरे लिए हसीन माला गूथी। मेरे वस्त्र को कसीदाकारी से जरीन कीमती बना दिया। आपने विज्ञान की नई नई जानकारी से दिमाग को रोशन चिराग बना दिया, सन्देश गीतों के सन्देशात्मक भावों से कल्पनाओं को वास्तविकता का पाठ पढ़ाया, लेखों ने सोये हुए दिलों को ललकारा, लघु कथाएँ लघु थी किन्तु मक्सद मैं विशाल थी, आपकी अदालत ने आपकी शिकायतों पर गौर किया, प्रेरक प्रसङ्ग ने प्रेरणा जागृत की, विचार गोष्ठी के मैदान में हल्की सी तलवार से समस्या और कठिनाई का काम तमाम हुआ, पहेली की खोज और तलाश के माध्यम से स्मरण शक्ति को शक्तिशाली और तेज बनाया। आपकी प्यारी प्यारी शिकायतें मिली और दिल में उतर जाने वाली शुक्रिया भी जो आपकी मुहब्बत का सबूत है। आपने मुझे कहां कहाँ की सैर न न कराई, बड़े बड़े विद्वानों से मिलाया वह भी उनसे जो अब नहीं रहे। कभी देशभक्तों की समाधियों पर ले गये, कभी महात्मा गाँधी, नेहरू और शास्त्री के निकट ले गये, कभी तीर्थ यात्राएँ कराई, कभी काबा, कभी चारों धाम ले गये, कभी राम, गौतम, महावीर, गुरू नानक, हजरत मौहम्मद की सेवाओं में ले गये, कभी कलाकारों की शोक सभाओं में, कभी श्री गणेश से उत्सब में, कभी दीपावली के धमाके में, कभी ईद के मिलन में और कभी होली की रङ्गीन पिचकारियों से रङ्गीन बना दिया। क्या क्या सुनाऊँ मेरा दामन ज्ञान खुशियों से भर दिया। मैंने चेहरे नहीं देखे मगर मैंने तुम्हारे लेखों के द्वारा चरित्र-रूपी चेहरे देखे जो हकीकत में सच्चे मित्र हैं। मुझे आपको देखकर बड़ी खुशी हुई लेकिन, जिन्दगी की सच्ची खुशी खुद को मिटाकर, खुद को जलाकर ओरों को जिन्दगी देने में है तभी तो गेहूँ का एक दाना भी यहीं तमन्ना करता है—

इसे काटा गया, पीसा गया, गूथा गया
इसे काटा गया, पीसा गया, गूथा गया
इसे काटा गया, पीसा गया, गूथा गया
लेकिन सबक गेहूँ से लेना
फिर भी दुनिया भूल जाती है
हर एक भूखे के काम आने से पहले, गौर से देखो
दहकती आग पर रोटी खुशी से फूल जाती है

काश यहीं जजबात फूलते फलते रहें। श्रोताओ हमें दो सौ वीं मंजिल से भी आगे बढ़ना है। आपकी प्रिय रेडियो पत्रिका को और भी अधिक साहित्य की सभ्यतारूपी सरिता बनाना है।

कहीं आराम से बैठ न जाना
बहुत दूर जाना है तुमको मुसाफिर
घड़ी पलका आराम क्या देखता है
मेरी भगवान से यही प्रार्थना है

कामयाबी आपके कदम चूमे, आपकी हमारी एकता का झण्डा लहराता रहे। अब कुछ ही देर में कुछ ही लम्हों में आप मेरे दो सौवे अङ्क का नया रूप, नया रंग नया स्वरूप देखेंगे, जिसे स्वयं मैंने भी नहीं देखा है, मगर मुझे पूरी उम्मीद है कि आपने मेरे उद्घोषकों ने शानदार प्रतिमा का निर्माण किया होगा, अब एनाउन्सर उसका अनावरण करना ही चाहते हैं बस यही तमन्ना है सदा ही मेरे लबों पर आपका चर्चा हो।

दिल करता यारा दिलदारा मेरा दिल करता

अब्दुल मजीद खाँ एवं जफ्फार अन्सारी
बुरहानपुर (म० प्र०)

पहला पन्ना—

मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धक समाचार

रोगों के लिये अन्तर राष्ट्रीय भाषा :

ब्राजील के एक डाक्टर शिल्वा रोगों के लिये एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा का आविष्कार करने का प्रयास कर रहे हैं। इस भाषा का मूल आधार तर्जनी है। तर्जनी से शरीर के किसी भाग को छूने का अर्थ होगा कि रोगी के उस स्थान पर दर्द है। मुड़ी हुई तर्जनी का अर्थ होगा कि उसे दिल का दौरा पड़ चुका है। तर्जनी और अनामिका से अँग्रेजी का V अक्षर बनाने का अर्थ होगा कि मैं ठीक हूं. लेकिन इसी V को उल्टा कर देने का अर्थ भी बदल जायेगा कि तबियत खराब है। डाक्टर शिल्वा की इच्छा है कि इनमें से कुछ महत्वपूर्ण संकेतों को यात्रियों के पास पुटों में अंकित किया जाय ताकि आवश्यकता पड़ने पर रोगी को आवश्यक डाक्टरी सहायता प्राप्त करने में आसानी हो।

प्रेषक—धनबाद के श्री सुरेन्द्र एस० कमल

इतिहास की सबसे बड़ी या भारी बग्घी :

१७ वीं शताब्दी में तुर्की के सुल्तान के अंगरक्षक अपनी बग्घी पर सजावट के लिये ४५ किलो वजन का भूसा भरकर बाग धारण करते थे। प्राचीन बीरों के पूरे कवच का भार लगभग ३२ किलो होता था।

प्रेषक—गाँधीधाम के श्रीरामकुमार व्यास

पवित्र आग ये कैसा चमत्कार :

चमत्कारी विश्व के कई ऐसे रहस्य हैं जिन्हें ज्ञान के माध्यम से हल नहीं किया जा सकता। विगत माह श्री जयन्त की चारपाई में अचानक आग लग गई। रजाई, चादर गद्दा जलने के बावजूद शरीर पर आग लगने का कोई चिन्ह नहीं था। तीन बार घर के सामान में आग लगने के बाद उन लोगों ने मकान बदल लिया लेकिन वहां भी आग ने पीछा न छोड़ा जिसके मकान में गये उसके मकान की मालकिन की भी दो कीमती साड़ियाँ जल गई। दो दो तीन मकान बदलने के बावजूद भी अग्नि का प्रकोप शान्त नहीं हुआ। लोगों ने उन्हें अपने घरों में शरण देने से मना कर दिया। इस समय यह परिवार स्थानीय जैन मन्दिर के प्राँगण में डेरा डाले हुये है। कई प्रत्यक्ष दर्शकों के अनुसार देखते ही देखते किसी भी वस्तु में आग लग जाती है, बुझाने पर बुझ तो जाती है लेकिन फिर किसी अन्य वस्तु में लग जाती है। दिन में तीन तीन चार चार बार यह घटना हुई है और लगातार होती जा रही है।

प्रेषक—कटिहार के सईद अख्तर आरजू

विष ही खाना है तो अन्डे खाइये :

अडे खाने से हाई ब्लड प्रेशर होता है जो बाद में हृदय रोग बन जाता है। यह दुष्पाच्य होने से पेट में तो गड़बड़ करता ही है, पथरी भी पैदा करता है। अंडे खाने वालों के आमाशय की दीवारों तथा आँत एवं रक्तवाही नलिकाओं में घाव पड़ जाते हैं, जो रोग का कारण बनते हैं। पेचिश भी अंडे खाने से होती है।

यह कथन है कैलिफोर्निया (अमेरिका) के वैज्ञानिक डा० कैथनिन निम्मो तथा डा० जे० अमेन का

प्रेषक—ललितकिशोर एवं भरत मालवी न्यूटन चिखली कॉलरी के

यहाँ एक महिला कम्पनी ने एक नई शराब का आविष्कार किया था। उस पर फिलिपिन्स सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया। इस प्रकार शराव की कीमत हजारों में आँकी गई है। शराव का गुण यह है कि पीने से विशेष तौर पर फेयर सैक्स में उन्माद बढ़ जाता है। इस शराब का सेवन दो उद्योगपतियों और एक भूतपूर्व मंत्री की पत्नी ने किया। उनकी हालत यह हो गई कि उन्हें तीव्र बेचैनी में अन्ततः आत्महत्या करनी पड़ी। उन्होंने अपने ही अंगों को जगह जगह ब्लेड और चाकू से काट लिया।

प्रेषक—भिलाई के छगनलाल बीकानेरी

विज्ञान के नये कदम :

B. B. C. के इंजीनियरों ने भी सी सेम नामक एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है जिसे टेलीवीजन के साथ फिट कर देने पर मौसम, खेल, घुड़दौड़ आदि ३० विषयों पर नवीनतम जानकारी हासिल की जा सकेगी। इस यंत्र का आकार एक छोटे बक्से जैसा होगा और इसे एक साधारण टेलीवीजन के साथ जोड़ा जा सकेगा जिसमें ३० पृष्ठों की सामिग्री होगी और प्रत्येक पृष्ठ टेलीप्रिन्टर संदेशों जैसा होगा। एक बटन दवाने पर दर्शक अपनी इच्छानुसार कभी भी किसी भी पृष्ठ को टेलीवीजन पर देख सकेगा।

प्रेषक—बालौत के बीरेन्द्रकुमार मोजिद एवं छोटेलाल यादव

अमेरिका में भी राखी का त्यौहार :

अमेरिका वासी भी प्रतिवर्ष रक्षाबंधन का त्यौहार मानते हैं जिसे उनके यहाँ 'बेलैन्टाइन दिवस' के नाम से जाना जाता है यह प्रतिवर्ष १४ फरवरी को मनाया जाता है। हमारे और उनके रक्षाबंधन में अन्तर मात्र यहीं है कि हमारे यहाँ बहन भाईयों के हाथों में राखी बाँधती है तथा जीवन में सफलता की कामना करती है और अमेरिका में लड़कियाँ अपने प्रेमियों के हाथों में बाँधकर उनके आनन्द पूर्ण सफल जीवन की कामना करती है।

प्रेषक—इलन्दू कोलियारी से दुर्गालाल लाहोटी

———

दूसरा पन्ना—

संदेश गीत

गीत :—इस दुनियाँ में रहने वाले सब हो एक समान

शरीर के एक एक रोयें में रोमाँच भर देने वाली इस कविता में मनुष्य को सोचने की एक नई दिशा दी है। ऊँच नीच, भेद भाव से पीड़ित आज का युवा हृदय इसी अधेड़बुन में रहा कि समाज में किसी तरह से एक और समाज को प्रतिष्ठित किया जाय। इस तरह धनी और निर्धन व्यक्तियों के हृदय पर छाये असन्तोष को दूर किया जाये। पीड़ित सभी हैं क्योंकि इच्छाओं की पूर्ति होती ही नहीं, इच्छाओं का दर्द पहलू में मचलने लगता है जिस तरह से भूखा व्यक्ति भूख से पीड़ित क्षणों में पेट भरने की बात के अलावा कुछ भी नहीं सोच पाता और जब उसका पेट भर जाता है तो वह इस भूख के डर से बचने के लिये संचय की इच्छा करने लगता है और यह संचय की प्रवृति कभी समानता या धनवान-निर्धन के भेद को मिटाने वाली कल्पना को महत्व नहीं दे पाता और यह बात निर्विवाद सत्य है कि कल्पनामय विचार कभी न कभी सत्य का रूप ग्रहण करती है। किसी जमाने से चली आ रही आकाश से चाँद तारे तोड़ लाने वाली कविता भी आज के युवक ने सच कर दिखाई है अतः समानता की बात असम्भव है सोचना ही मूर्खता पूर्ण है। कोई न कोई दिन तो ऐसा होगा कि जब हर व्यक्ति समानता के रंग में रंग दिया जायेगा। अतः यह कल्पना किस युग में यथार्थ का रूप धारण करेगी, यह सत्य कोई नहीं जानता। शायद इसी कल्पना में संसार की एक झलक पाने के लिये कोई घायल हृदय कह उठता है—

कहीं दिखलादो हमको एक किरण ही टिमटिमाती सी।
कि जब तक जगमगायेगी यह दुनियाँ, हम नहीं होंगे।

प्रेषिका—वाराणसी की श्रीमती कमला रतन

"आज जमाना बदल चुका है। दुनियाँ नई हो रही है, नई दिशा है, नई प्रेरणा है। अब यहाँ न कोई राजा है न कोई प्रजा, न कोई बड़ा है न कोई छोटा। जातियाँ और खून की सीमायें भी टूटती जा रही है। ऊँची हवेली और नीची झोपड़ी दोनों की जड़ें उड़ चुकी हैं। दोनों शीघ्र ही समानता के धरातल पर व्यवस्थित होने जा रहे हैं। अब तो वो दिन दूर नहीं जब श्रम के माथे पर तिलक लगेगा व्यक्ति की मर्यादा अक्षय बन जायेगी और मानव की मन की इच्छा के आगे विधि की विधानता को भी झुकना पड़ेगा। हर कोई अपना भाग्य विधाता आप होगा। सब बराबर होंगे तब कोई उठे या गिरे जिम्मेदार वह स्वयं है। ताज हमारे सर पर आया तो क्या? स्वराज्य मिला तो क्या? यदि हम स्वराज्य के मुहताज ही रह जाते हैं। यदि हम स्वराज्य के मुहताज ही रह जायेंगे, आजादी आई

तो क्या? यदि हमारे अन्दर जिम्मेदारी की अनुभूति नहीं हुई. इसलिये आइये हम अपनी जिम्मेदारी को समझने की कोशिश करें। बापू की कल्पना को सार्थक करने की प्रतिज्ञा करें और निर्माण एक ऐसे युग का जिसमें समता के साँचे पर समाज के कदम हों, हर दिल इंसानियत की चाहत हों। गीतकार का यही संदेश प्रस्तुत गीत की पंक्तियों में मुखरित होता है।"

प्रेषक—गया के अरविन्दकुमार सिन्हा

"आज व्यक्ति के विचारों में असमानता है। उसके क्रिया कलापों में अलगाव, सिद्धान्तों में पृथकतावाद और उद्देश्य स्वार्थ परत। आज इन्सान तरह तरह के अनैतिक अवैधानिक और असामाजिक कार्यों में ऐसा रत है कि वह यह भी भूल चुका है कि उसकी यह उछृंखल प्रवृत्ति देश को टुकड़ों में विभक्त किये जा रही है। समाज में दुरत्व की खाईयाँ खोद रही है। हृदय में विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित कर रही है।

आज का इन्सान संवेदन शील नहीं रहा। वह केवल यही समझता है कि उसके ये कार्य देश को उन्नति और हित के रास्ते पर लिए जा रहे हैं। आपस में भाई चारे और एकता का बीजारोपण कर रहे हैं। जबकि ऐसा सोचना इन्सान की भयंकर भूल और अदूर दर्शिता है। वास्तविकता से कोसों परे निरी कोरी कल्पना।

सही अर्थ में अगर हमें अपने विचारों में समानता लानी है। हमें मजदूर और विद्वान, निर्धन और धनवान, ऊँच और नीच, जात और पात का भेदभाव मिटाना है तो आपसी तनाव और तेरा-मेरा का झगड़ा छोड़ना होगा। निजी स्वार्थ को हृदय से नोचकर फैंक देना होगा जो रोड़ा जात पात की दीवार खड़ी करता है, उसे ठोकरों से चूर चूर करना होगा। हमारी वह धन संचय की भावना जो गिरजा और मँदिरों के अलंकार और सजावट पर व्यय होती है, उसे दीन दुखियों की सेवा, अपाहिजों की मदद ठुकराये हुओं लोगों के उत्थान में खर्च करना होगा। हमें हर वर्ग और हर वर्ण को गले लगाकर चलना होगा। तभी हम दुनियाँ में खुशहाल बन सकते हैं। तभी हमारा एकता और समानता का संदेश दुनियाँ के कोने कोने में गुणमान हो सकता है, फिर कोई वजह नहीं रहेगी, जो उजड़े गुलशन में खुशियों की बहार न बिखेर दे। घर घर में मुस्कराहटों के दीपक न जगमगा दे।"

प्रेषक—धनबाद के प्रीतम प्यासा

"आज विषमता भरे युग में आज का मानव दुखी है और इस दुखः का प्रमुख कारण है हमारे समाज का दोष पूर्ण संगठन। वैषमन्यता की अग्नि चारों ओर सुलगकर धधकने की अवस्था में आ गई है, ऐसा प्रतीत होता है मानो समानता युगों के लिये कहीं किसी कोने में जाकर सो गई है। हमें विश्व में सुख, शान्ति, बन्धुत्व और प्रेम की पावन ज्योति बिखेरनी है, इसके लिये हमें इसी समानता को जगाकर समाज में फिर से जलाना है ताकि इंसान इंसान के बीच की, अमीर गरीब और छोटे बड़े की खाई मिलकर पट जाये। स्वार्थ का घना अंधेरा छट जाने और उद्दमानता का नशा उतर जाये। अपने पेट की आग बुझाने के लिये किसी का गला न काटा जाये। मेहनत की सीढ़ी से चढ़कर ही मानव ऊँचाइयों पर पहुंचता है क्योंकि पसीना गुलाब बन कर महकता ही है। इसलिये समानता और एकता का नया सबेरा लाने के लिये हमें सच्चे इंसान कीं तरह नेकी और सच्चाई की राह पर चलना चाहिये, चाहें जीवन में दुखों की आँधी आयें या गमों के तूफान"

प्रेषक—बालोत के नन्दकिशोर सोनी

"हर सच्चे इंसान के हृदय में आज एक तड़प है, एक उमंग है. एक इच्छा है, एक चाह है एक ऐसे प्रबल प्रभाव को देखने की, एक ऐसी दुनियाँ बसाने की जहाँ सब समान हो। चाह है धनी और निर्धन के बीच दिन पर दिन चौड़ी होती हुई खाई से निकलते हुये ईर्ष्या, द्वेश, घृणा, ऊँचनीच, हड़ताल, तालाबन्दी आदि अशान्ति के अंगारों को खत्म कर उसी खाई में दफनाने की तथा उसी में पटाने का नव-निर्मित धरातल पर नया जमाना लाने की जहाँ न कोई गरीब हो, न कोई धनवान। जहाँ हमको तुम्हारी चाह होगी तुमको हमारी चाह होगी। प्रणय के गीत खुशी के गीत गाने को फड़कते होंठ घूँघले गीतों को देख यानि दुःखदायी दृश्य इस दुनियाँ में दृष्टिगोचर ही न हों। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

हरियाली में जिसने देखे हैं
भूखे सूखे नंगे किसान
रोये, गायें, कैसे गायें
प्रणय गीत
इस सतरँगी दुनियाँ में
एक रँग भरना होगा
और वो रँग है
समानता का

प्रेषिका—कलकत्ता की कु० नीलम अय्यर—

अन्य पाँच श्रोता जिनके पत्र अच्छे लगे—

वरविल (उड़ीसा) के गोपालचन्द्र गुप्त
कटिहार के गोपालप्रसाद गुप्त
भाटापारा की कु० नीला मेघानी
लखनऊ के वासुदेव सिह चौहान
इटावा की कु० आराधना निगम

———

तीसरा पन्ना

सर्वश्रेष्ठ लेख

अवसर को अपना बनाइए

हमारा भविष्य पर्दे से ढका हुआ है। कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा। इसे न जानने के कारण ही जीवन का इतना महत्व है। इसे न जानने के कारण ही पौरुष और साहित्य की इतनी आवश्यकता है।

बहुत से लोग भाग्य के भरोसे चुप बैठे रहते हैं। वे कहते हैं कि जो होना होगा वही होगा, हमारी सारी चेष्टाएँ बेकार हैं। ऐसे लोग भ्रमवश अपना जीवन तो नष्ट करते ही हैं, हमारे जातीय चरित्र की भी अकर्णमयता और पतन की ओर ले जाते हैं।

ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसको जीवन में कभी उन्नति का. सफलता का सुअवसर न मिला हो परन्तु होता यह है कि जब वह आता है, अधिकांश हाथ पर हाथ धरे बैठे रह जाते हैं, उसका लाभ नहीं उठाते। देवता द्वार पर आकर लौट जाते हैं, द्वार नहीं खुलता, प्रियतम पास से गुजर जाते हैं और हमारी आँखें उधर नहीं उटतो, हमारे हाथ स्वागत के लिये नहीं उठते। सच पूछिए तो हर जगह सफलता आपका स्वागत करने के लिये छिपी घूम रही है, हर जगह वह आपको पाने के लिये बेचैन है। कठिनाई बस यह है कि आपमें गर्मी नहीं. आपमें बेचैनी नहीं, आप खुद शिथिल और निश्चल हैं।

एडिसन मामूली युवक था। अखबार ढोया करता था। गाड़ियों पर अखबार के बण्डल चढ़ाता था। कभी कभी देखता कि इन वण्डलों या थैलों में जो रगड़ होती है उससे एक आवाज पैदा होती है यह आवाज कोई नई नहीं थी, न जाने कब से लोग उसे देखते सुनते आ रहे थे। पर किसी ने रहस्य के पर्दे को उठाने की कोशिश नहीं की, घूँघट उठाकर किसी ने उस अनुपम सौन्दर्य को देखने का प्रयत्न नहीं किया जो उसके पीछे था। एक मामूली बात थी उस मामूली बात के पीछे यह युवक पड़ गया और ग्रामोफोन का आविष्कार करके ही दम लिया।

माइकेल फैराडे बचपन में अखबार बेचा करता था, और सात वर्ष की उम्र से ही जिल्दसाज की दुकान में भी काम करता था। इन्साईक्लोपीडिया की जिल्द बाँधते समय उसकी निगाह बिजली सम्बन्धी एक लेख पर पड़ गई। उसे उसने पढ़ा, बार-बार पढ़ा। धीरे-धीरे छिप कर प्रयोग करने लगा और वही चारों ओर का उपेक्षित बालक फैराडे संसार का एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक हो गया।

वेपिन ने ठीक ही लिखा है कि सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं जो अवसरों की बाट जौहा करते हैं, परन्तु वे हैं जो अवसर को अपना बनाकर छोड़ते हैं। ऐसा कोई व्यक्ति संसार में नहीं है जिसके पास एक बार भी भाग्योदय का अवसर न आता हो।

प्रेषक— सत्यनारायण सविता,
प्रतापगढ़ (राजस्थान)

सर्वश्रेष्ठ व्यंग कथा—

मैं चल रहा हूँ पिता जी, मुझे आशीश दीजिये। माँ.........तुम तनिक भी चिंता मत करो। तेरा यह लाल दिन चढ़ने के पूर्व ही सफल होकर लौटेगा, विजय का सेहरा मेरे माथे पर होगा।

तभी पत्नी घर के खाली बर्तन रूपी मंगल कलश दिखाती है। मैं गाढे अनुराग से उसकी ओर देखने लगता हूं। मुझे उसकी दोनों कजरारी आँखों से गेहूँ और चावल का प्रतिविम्ब दिखलाई देता है। अपनी गम्भीर दृष्टि से उसे आशान्वित करता हूँ, दिन डूबने से पूर्व अवश्य वापिस आजाऊँगा। पत्नी मेरी दृष्टि को अपनी दृष्टि से पढ़ लेती है और जल्दी असंख्य मुस्कान बिखेर देती है। मैं उससे विदा मांगता हूँ, तभी पत्नी दौड़कर मेरे महान शस्त्र मुझे सौंपती है। मैं अपने महान शस्त्र धारण करता हूँ— एक हाथ में खाली झोला और दूसरे हाथ में राशन कार्ड और तब मैं युद्ध क्षेत्र राशन की दुकान की ओर प्रस्थान करता हूँ। लाइन में खड़े होकर दिन भर भीषण संग्राम करता हूं। घर में सभी पल पल मेरी प्रतीक्षा करते हैं। उनका यह वीर प्रतिनिधि दिन ढलने के पहले तो नहीं हां काफी रात गये घर लौटता है। टूटे धनुष और सत विक्षत कवच की तरह राशन कार्ड, खाली झोला एक कोने में फैंक देता है।

तब बीते हुए कल जैसा सारे घर में (सही अर्थों में सारे देश में) सन्नाटा छा जाता है। जैसे एक राजा अपनी सम्पूर्ण सेना को युद्ध में झोंक कर चोरी से अपने तहखाने में आकर छिप गया हो।

प्रेषक—ए० अजीज खत्री—कोरवा

सर्वश्रेष्ठ हास्य कथा—

मीठा स्वप्न

एक बार मैं बालूशाही की सड़क पर चला जा रहा था कि रास्ते में एक शर्बत की नदी मिली। उस पर समोसे की नाव तैर रही थी। गुलाब जामुन के पतवार का सहारा लेता हुआ मैं नदी की दूसरी ओर पहुँचा तो सामने मिश्री लाल जी का महल खड़ा पाया। उस महल के पहरेदार लड्डू राम जी पेठे की बन्दूक ताने खड़े थे किसी तरह मैंने उसमें प्रवेश किया और मालपुए मंत्री जी के साथ मैं वहाँ चला गया जहां चम-चम की तकिया लगाए जलेबी रानी विश्राम कर रही थी।

अब मैं लाचार था बगल में खड़े पेड़े राजा भी आग बबूला हो उठे। राजा ने मुझ पर रसगुल्लों का एटम बम फैंका। मैं चिल्लाता हुआ भागने को तैयार हो गया और ज्यों ही मैंने झटके के साथ कर-वट ली तो अपने आपको पलंग के नीचे पाया।

प्रेषक—शान्ति कुमार जैन—पेटरवार

चौथा पन्ना—

श्रोताओं के प्रश्न श्रोंताओं के उत्तर

सहारनपुर के श्रीकान्त सिंह

प्रश्न—मनुष्य में त्याग की भावना कब उत्पन्न होती है ?

उत्तर—जलगाँव के जफर इकबाल राही द्वारा

"मनुष्य में त्याग की भावना का निर्माण उसके जन्म के साथ ही होता है और वह भी प्राकृतिक स्वरूप में हाँ यह बात सच है कि इस भावना का प्रमाण व्यक्ति सापेक्ष है, मसलन ये 'गौतम' 'गाँधी' में यह त्याग की भावना अधिक मात्रा में थी तो हम जैसे साधारण व्यक्तियों में इस भावना का प्रमाण कम होता है।

यह सुप्त भावना तभी जागृत स्वरूप प्राप्त करती है जब प्रयुक्त व्यक्ति सामने वाले व्यक्तित्व में एकाकार हो जाता है, यही एकता की भावना विस्तृत अर्थ में त्याग की भावना कहलाती है, जो निर्माण नहीं की जा सकती, वरन् सिर्फ उसका अस्तित्व स्पष्ट आकार पाकर हमारे सम्मुख अवतरित होता है !

धनबाद के अमरीकसिंह खनूजा

प्रश्न—आप श्रोता किसे कहेंगे फरमाइशी पत्र भेजने वालों को या सिर्फ रेडियो सुनने वालों को ?

उत्तर—नागपुर की कु० रवि शवनम द्वारा

श्रोता शब्द का शाब्दिक अर्थ सुनने वाला है तथा इसका पारिभाषिक अर्थ होगा "वह व्यक्ति जो दूसरों के द्वारा कही गई वाणी, यंत्र या प्रकृति द्वारा उत्पन्न की गई ध्वनि, पशु-पक्षियों की या अन्य जीवधारी प्राणियों की विभिन्न आर्कषक या कर्कश ध्वनियाँ सुनने में सक्षम होता है, श्रोता कहलाता है।

सोचा जाये तो यह प्रश्न तर्क संगत नहीं है कि श्रोता वे होते हैं जो फरमाइश करते हैं या जो रेडियो सुनते हैं। मेरा तात्पर्य है कि फरमाइश करने वालों के अलावा सुनने वाले श्रोता नहीं तो क्या है ? मेरे विचार से तो सुनने वाले ही श्रोता है क्योंकि वे निर्विकार भाव एव निःस्वार्थ भावना से सुनकर हृदयगम करके और श्रव्य सामग्री का आनन्द रस लेकर काफी हद तक सफल होते हैं, उन्हें यह नहीं मालूम कि उन्हें क्या सुनाया जाने वाला है, क्या सुनना है फिर भी रुचि लेकर सुनते हैं। सुनने का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति व आनन्द लब्धि है तो माँग करने वाले लोगों में उसे सुन कर नवीनता कहाँ आई ? क्योंकि उन्हें तो प्रेषित सामग्री को ही सुनना है, वे सार्थक श्रोता नहीं है। मात्र फरमाइशी पत्र भेजने वालों को ही श्रोता मानने का अर्थ निश्चित रूप से रेडियो की क्षमता, विस्तार एवं महत्ता को

सीमित करना है। अन्ततः मैं यही कह सकती हूं कि जहाँ भी रेडियो है उसकी ध्वनि है उसे श्रवण करने वाले ही श्रोता है। फरमाइशी कर्त्ता तो सिर्फ प्रेषित सामग्री को सुनते हैं लेकिन अन्य तो यह भी सुनते हैं कि श्रोताओं की माँग क्या है। अतः श्रोता तो दोनों हैं लेकिन महत्वपूर्ण श्रोता वे है जो सामान्य भाव से सुनते हैं।

देवलाली के दिलीप काले

प्रश्न—क्या कामना ही प्रार्थना की उद्गम है ?

उत्तर–नई देहली के नरेन्द्र जैन द्वारा

वास्तव में कामना को प्रार्थना का उद्गम नहीं कहा जा सकता। क्योंकि कामना और प्रार्थना मेरे मत में दो अलग २ उत्पत्तियाँ हैं तथा दोनों के परस्पर विरोधाभार प्रकट है। कामना चंचल मनोस्थितियों में मानव मन में अवतरित होती है जबकि प्रार्थना, शान्त, सौम्य, स्थिर एवं एक भाव विशेष से स्निग्ध मन में प्रकट होती है। फिर भी यदि हम झूठ और सत्य के अन्तर से भिज्ञ होते हुए यदि एक निर्धन को धन की कामना में प्रार्थना करते देखा यदि ऐसी कामना को प्रार्थना का उद्गम कह सकते हैं तो निःसन्देह कामना ही प्रार्थना का उद्गम है, लेकिन जहाँ दूध का दूध और पानी का पानी किया जा सकना सम्भव है तो वहाँ प्रार्थना और कामना दो भिन्न २ उद्गम हैं।

कोटा की मुनव्वर सुल्ताना

प्रश्न—आज कल पैसे का मूल्य आदमी से बढ़कर क्यों होता है ?

उत्तर--राजनादगांव के जव्बार कुरेशी द्वारा

पैसे के सामने आदमी की कोई कीमत नहीं रह गई है क्योंकि हर किसी की आँखों में स्वार्थ का काला चश्मा चढ़ा हुआ है जिसमें उसे कुछ नजर नहीं आता। सच्चाई की रोशनी, ईमान का दीप, बन्धुत्व की जोत, प्रेम स्नेह और ममता की पावन गंगा। आज ईमान और इंसानियत खुदगर्जी की वादियों में गुम हो गई है। आज चारों तरफ स्वार्थ लालच, बेईमानी का घना अँधेरा छाया हुआ है। इस अंधेरे में सत्य को कैद किया है पैसे ने। ईमान को जकड़ा है दौलत ने। प्रेम और विश्वास का गला काटा है खनखनाते सिक्कों ने। तात्पर्य पैसा आज इतना ताकतवर हो गया कि आदमी उसके सामने बेवस है, लाचार है, कमजोर है। यह कैसी विचित्र विडम्बना है कि पैसे को बनाने वाला आदमी आज पैसे का गुलाम बन गया है।

डोंगरगढ़ के परमजीत सिंह खनूजा

प्रश्न—"मनुष्य जानता है कि सपने सच नहीं होते फिर भी वह उसे क्यों सजाता है ?

उत्तर–जमशेदपुर के भारत भूषण दोस्त द्वारा

"सपनों की दुनियाँ आदिकाल से मानव मस्तिष्क के लिए एक जिज्ञासा, कौतूहल, विस्मय और अनुसंधान की समस्या रही है। ये सपने क्या हैं ? हम इन्हें क्यों देखते हैं ? क्या सपने सच होते हैं—अथवा एक निर्मूल एवं अनर्गल अनुभव मात्र हैं ? कुछ ऐसे ही चिरंजीवी प्रश्न हरदम मानव मस्तिष्क को मथते रहे हैं ?"

"हम यह भी जानते हैं कि सपने सच नहीं होते मगर सपने सार्थक जरूर होते हैं यह उक्ति गलत नहीं। हमारे स्वप्न हमारे जीवन के अनुभवों एवं उसकी समस्याओं से एक विशेष संबंध रखते हैं। बाह्य रूप में देखने सुनने में भले ही उनका कोई विशेष अर्थ न प्रतीत हो किन्तु उनका मनोवैज्ञानिक विशेषता करने पर यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि वे अर्थ-पूर्ण एवं सांकेतिक होते हैं।"

"जिन्दगी की उलझनों एवं घुमावदार समस्याओं में जो लोग समायोजित नहीं हो पाते वे वास्तविक परि-स्थितियों से भाग कर स्वप्न जगत में विचरने लगते हैं। वे असफलताओं और कठिनाइयों से हताश होकर सपनों के मंदिरों में प्रवेश कर जाते हैं और इसी में उन्हें सुखानुभूति होती है। वे एक नये संसार की रचना कर लेते हैं जिसमें उन्हें नेतृत्व और सफलता, स्नेह और बल सुगमता से प्राप्त हो जाता है। कपोल कल्पना में ही उन्हें मनोरंजन, आत्मश्लाघा और आत्मतृप्ति प्राप्त हो जाती है।"

"मनुष्य जब तक संसार में रहता है उसकी कामनाएँ, इच्छाएँ और आवश्यकताएँ बनी रहती हैं। वह कभी संतुष्ट नहीं होता। जब वह इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता तो उसकी छाप उसके अचेतन मन पर पड़ती है और वे दमित इच्छाएँ धीरे-धीरे सपनों के आकार में संजोई जाने लगती है। इसी स्वप्न संयोजन में उसे आत्म संतुष्टि की अप्रत्यक्ष अनुभूति होती है। मनुष्य की चाह जीवन के हर क्षेत्र में सदैव बढ़ती रहती है। अपनी सबसे बड़ी चाह जीने की इच्छा की सतत अभिव्यक्ति वह करता रहता है। अपने इसी चाह के लिए वह जीवन की विभिन्न सुख सुविधाओं से अलंकृत करते रहना चाहता है। उसका यह प्रयास जब किसी रुकावट से टकराता है तो वह अपना पथ बदलकर सपनों की दिशाओं में अग्रसर होने लगता है और फिर अपनी सुप्त भावनाओं को वह इन्हीं सपनों में सजा संवरा देखते रहना चाहता है। यह जानते हुए भी कि सपने सच नहीं होते वह हरदम उन्हें सजाता रहता है।"

खगडिया के सुशील कुमार अकेला

प्रश्न—समय कब ठहर जाता है ?

उत्तर—बलसार की कु० वर्षा अय्यर द्वारा

"वस्तुतः समय कभी ठहरता नहीं, ये मात्र एक भ्रम है, एक अनुभूति है ऐसी अनुभूति उस अवस्था में होती है जब मनुष्य की समस्त इन्द्रियां एक ही केन्द्र विन्दु पर आकर्षित हो जाती है। वर्तमान अवस्था से कट कर उसकी विचारधारा जब एक ही सुनिश्चित दिशा की ओर मुड़ जाती है तो ऐसा आभास होता है कि उदाहरणतः आज का ये विशेषाँक सुनने की उत्सु-कता समय की गति को नकार रही है। सुबह से ही घड़ी पर दृष्टिपात करते हुए यूँ लगता है मानो समय आज सचमुच ठहर गया हो, हाँलाकि समय सदैव चलायमान है, जिस दिन समय रुक जायेगा सृष्टि हिल उठेगी प्रलय को आते देर नहीं लगेगी।

पाचोरा के सतपाल परदेशी

प्रश्न—ईश्वर एक है फिर उसके नाम राम रहीम कृष्ण-करीम क्यों ?

उत्तर--कानपुर के हरमन्दिरसिंह 'हमराज' द्वारा

"मानव की यह तो कल्पना मात्र ही है कि कोई ऐसी अदृश्य शक्ति है जो विपत्ति में इन्सान की सहायता करती है, 'मानव' की इसी 'कल्पना' से ईश्वर अस्तित्व में आया।

इन्सान पैदा तो स्वतन्त्र होता है लेकिन उसके बाद अनेकानेक साँसारिक बन्धनों-जाति, धर्म जाति, इत्यादि में अपने को जकड़ा हुआ पाता है, चूँकि आदि मानव सम्प्रदायों ने उस अदृश्य शक्ति को अलग-अलग नाम दे डाले और उस मूल शक्ति को भूल गया, इसीलिए तब से इन्सान उसे अलग-अलग नामों द्वारा स्मरण करने लगा जिससे उस 'एक' के नाम 'अनेक' हो गये कोई उसे राम कहने लगा तो कोई रहीम, कोई कृष्ण तो कोई करीम।"

जलगाँव के गोविन्दसिंह

प्रश्न—मनुष्य खुद की नजरों से कब गिर जाता है ?

उत्तर--अलीगढ़ के गिरीशचन्द्र सुमन द्वारा

मनुष्य के पास जब तक उसका मूल्य है तब तक वह हतोत्साहित नहीं हो सकता, और जब तक हतोत्साहित नहीं होता, निःसन्देह वह स्वयं की नजरों से नहीं गिर सकता। मेरा मत यही है कि मनुष्य के पास उसका चरित्र ही उसकी सबसे बड़ी कीमती या अमूल्य निधी है। और जब तक मनुष्य किन्हीं स्थितियों में अपने अविवेक अथवा परकुसम्मति के कारण अपना चरित्र कुछ क्षीण कर बैठता है, तो वह खुद को, खुद की नजरों मैं गिरा हुआ समझने लगता है।

परतवाडा के मिहोमल टहलानी

प्रश्न—सौन्दर्य की क्या विशेषता है ?

उत्तर--उदयपुर के रमेश तिवारी निडर द्वारा

"स्थूल से देखने पर तो कोई विशिष्ट विशेषता का नाम ही सौन्दर्य है, लेकिन सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर सौन्दर्य की अनेक विशेषतायें हैं। सर्व प्रथम सौन्दर्य में प्राकृतिकता का समावेश आवश्यक है और तदपरान्त बहरमुखता भी एक विशेषता है। स्वाभिमान भी अपना एक विशेष महत्व रखता है। सजीव नारी हो या जड़वत् वस्तु, सौन्दर्य सम्पन्न हर चीज प्रथम दर्शनीय आकर्षण रखती है। सच्चे सौन्दर्य का प्रभाव क्षणिक नहीं होता और सौन्दर्य अपना सीधा सम्बन्ध हृदय से स्थापित करता है जहां से भावना का उद्धेरु होता है। निडरता सौन्दर्य की महत्वपूर्ण विशेषता है, क्योंकि सच्चा सौन्दर्य वही कहलाता है जो किसी के सामने आत्म सम्मपर्ण नहीं करता।

राजगढ़ के राधारमन त्रिपाठी

प्रश्न—युद्ध और प्रेम में सब जायज है, इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर--बिलासपुर के जगदीश मखीजा 'अतृप्त' द्वारा

युद्ध और प्रेम दो विरोधाभासी शब्द ? किन्तु इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि दोनों के पीछे कारण विशेष होता है। पौराणिक साहित्य के अनुसार लगभग एक लाख नारियों से भगवान श्री कृष्ण ने प्रेम सम्बन्ध स्थापित किया ८ नारियों से उन्होने विधिवत विवाह किया। घर की नारि छोड़ि कृष्ण तोहि कुब्जा मनभाई, लोक गीत से कुबड़ी कुब्जा के प्रति श्री कृष्ण का प्रेम स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। हमें यदि प्रेम आसक्त कर देता है, तो युद्ध निश्चयात्मक एवं दृढ़।

भगवत् गीता के पहले अध्याय ३२ वें व ३३ वे श्लोक में युद्ध को स्वर्ग का द्वार बताते हुए, इसके पास जाने का आग्रह किया गया है। जो लोग मौका पड़ने पर इससे दूर भागते हैं उन्हें डरपोक एवं पाप का भागी ठहराया गया है। युद्ध और प्रेम तो वह आग है, जो जब कभी लग जाती है तो अपने अन्जाम को पाए बिना बुझाए से भी नहीं बुझ सकती। निष्कर्ष यह कि इस अन्जाम की प्राप्ति हेतु सब जायज है। चाहे प्रेम प्राप्ति के लिये नैनों के तीखे बाणों से या युद्ध में विजय पताका के लिये देह भेदी शस्त्रों से गुजरना पड़े।

पाँचवां पन्ना—

प्रेरक प्रसंग

श्री दलवीरसिंह परमार

बात है सन् १९५५ की जब मैं लखनऊ में था और आकाशवाणी में थोड़े बहुत नाटक वाटक किया करता था और यही था कि जीवन में कुछ करना चाहिए इसी उधेड़ बुन में लगा रहता था। एक दिन एक पत्रिका में तीन सुक्तियां देखी उनसे मुझे प्रेरणा मिली और उन्हीं के आधार पर अब में अपने जीवन को व्यतीत कर रहा हूं।

तीन सुक्तिया ये हैं :—पहली, मनुष्य एक बड़ा तुच्छ प्राणी है वह एक छोटा सा कीड़ा तो बना नहीं सकता पर भगवान बना सकता है कितनी सही बात है और फिर उसके नाम पर लूट खसोट हो, मन्दिर में कितने पैसे चढ़ाने पड़ते हैं और इस तरह से भगवान की मूर्ति को स्नान कराने में और ये सब बातें जब मैंने अपने जीवन में देखी तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि सचमुच भगवान हमारे अन्दर है तो फिर उसको बाहर कहाँ ढूँढ़ा जाए। एक तो प्रेरणा मिली इससे। और अब मैं यह कहूँ कि मैं नास्तिक हूं तो शायद आप हँसें, लेकिन सच्ची बात तो यह है कि मैं इसमें विश्वास करता हूं कि भगवान तो पृथ्वी के कण कण में समाया हुआ है और सभी के अन्दर है। अब इसे आप नास्तिक समझे या आस्तिक।

दूसरी युक्ति जिससे मुझे प्रेरणा मिली जहाँ तक दिखाई पड़ता है पहले वहाँ तक तो जाओ वहाँ जाने पर तुम्हें आगे भी दिखाई देगा। सचमुच कितनी अच्छी है। मेरे मन में भी एक अभिनेता बनने की इच्छा थी राजकपूर

दिलीपकुमार और वी० शान्ताराम इनको मैं बहुत ही सच्चे हृदय से अपना गुरू एक तरह से मानता हूं इस कला में ओर सबसे पहले यह सोच कर जहाँ तक दिखलाई पड़ता है वहाँ तक तो जाओ मैं राजकमल कला मन्दिर में गया और एक बार नहीं अनेकों बार और बार बार जाने पर एक बार शान्ताराम साहब से मुलाकात हुई वो उस समय 'सेहरा' फिल्म बना रहे थे तो जितेन्द्र जो आजकल अभिनेता है इनका असली नाम रवि है ये भी उन्हीं लड़कों में से थे और हम लोगों को चुन लिया। मुझसे शान्ताराम जी ने कहा कि इस फिल्म में तो कोई खास काम है नहीं। तुम लोगों को काम सीखना पड़ेगा अगली फिल्म में कुछ मिलेगा और इस तरह 'गीत गाया पत्थरों ने' में राजश्री के गुरू की भूमिका उन्होंने मुझे सौंपी छोटा सा रोल था पर आत्म विश्वास और मन की दृढ़ता साहस और एकाग्रता से मैंने उसे ठीक ही कर लिया था।

तीसरी सूक्ति मैंने पढ़ी और उससे भी मुझे बड़ी प्रेरणा मिलती है लिखा था आदमी वही सुस्त एवम् आलसी नहीं है जो कुछ नहीं करता निठल्ला बैठा रहता है यदि परिश्रम करता तो अच्छी तरह जगह प्राप्त कर सकता था, सचमुच बहुत से आदमी बहुत बड़ा लक्ष्य लेकर बैठते हैं कि जीवन में हम ये बनना चाहते हैं और उसके बाद उन्हें कोई छोटी मोटी पोस्ट मिल जाये तो सोचते हैं कि कौन अब कष्ट करें और वो उसी पर उसी जगह तो बैठे रहते हैं। और उससे क्या होता है कि वो भी आलसी से हो जाते हैं तो सूक्ति बहुत ही अच्छी थी कि आदमी वही सुस्त एवं आलसी नहीं है जो कुछ नहीं करता निठल्ला बैठा रहता है बल्कि वो भी सुस्त आलसी है जो यदि परिश्रम करता तो और भी अच्छी जगह प्राप्त कर सकता है। इसके साथ ही मैं अब आज्ञा चाहूंगा!

श्री विमल धर्म

१५ साल पहले मैं एक विद्यालय का गुरू था। साहित्य मेरा विषय था स्कूल में नाटक आदि सिखलाया करता था। मैं अक्सर ऐसा करता था कि निर्धारित पाठ्य पुस्तकों में से जो रोचक प्रसंग आते उनको लेकर मैं स्कूल के शिष्यों पर, स्कूल के मँच पर प्रस्तुत करता था। एक बार एक ऐसी नाटिका में मैंने अपनी कक्षा के एक ऐसे किशोर को शामिल कराया जिसमें मैंने एक कुशल अभिनेता बनने की कुशलता देखी। चरित्र एक बूढ़े विलास प्रिय राजा का था उस लड़के ने उस चरित्र को इतनी कुशलता पूर्व निभाया कि अध्यापकगण उससे बहुत ही प्रसन्न हुये। प्रिंसीपल साहब ने उसी समय नाटक देखते २ यह भविष्यवाणी की कि यह शिष्य कभी न कभी सफल अभिनेता बनेगा। उस लड़के के लिये वो पहला अवसर था मँच पर आने का। श्रोताओ आगे चल कर वो नाटक में अभिनेता बन गया, फिर प्रोड्यूसर बाद में फिल्मी अभिनेता हो गये और आज वो निर्माता बन गये, उनकी बनाई हुई पहली फिल्म इसी बर्ष दिखाई गई और कामयाब भी हुई। जाने या अनजाने उस विद्यार्थी के लिये मैं प्रेरक बन गया। इस प्रसंग के बाद से मैं और भी एकाग्र होकर छात्रों पर ध्यान देता न जाने किस विद्यार्थी में गुण रूपी हीरे छिपे हों जिन्हें तरासने पर वो अपनी चमक बिखेर सकें। हर पल हर क्षण मुझे यही ख्याल रहता। यह घटना मेरे जीवन की प्रेरणा बन चुकी है। मेरे उस शिष्य का नाम सतीशचन्द्र है।

श्री मनोहर महाजन

श्रोताओं मैं इतिहास का विद्यार्थी रहा हूं, इस विषय में मैंने M. A. किया, मैंने इस विषय का अध्ययन करते वक्त हमेशा एक घुटन एक बेचैनी का अनुभव किया। मैंने महसूस किया जो हमें जानना चाहिये वो हमें पढ़ाया नहीं जाता और जो पढ़ाया जाता है वो एक रुटीन है, मानवीय मूल्यों का उसमें सर्वथा अभाव है जो आधार भूमि विदेशी हमें दे गये उसी पर हम महल खड़े कर रहे हैं। इन्हीं सब बातों ने मुझे हमेशा अन्य श्रोतों की ओर आकर्षित

किया। इन श्रोतों से प्राप्त रत्नों ने मेरे मन मस्तिष्क को तो रोशन किया ही मेरे विचारों के निर्माण में बड़ा सहयोग दिया।

लेखक मन्मथनाथ गुप्त जो स्वयं एक सक्रिय क्रांतिकारी आजादी के पूर्व रहे हैं जिन्हें बहुत सारे प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है के संस्मरण पढ़ने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैं पढ़कर आश्चर्य चकित रह गया कि देश की आनबान पर मिटने वाले सैकड़ों, हजारों शायद लाखों नामों को हम नहीं जानते जिनकी अमर गाथायें हमारे इतिहास ग्रन्थों पर अंकित नहीं है, उनमें से एक गाथा कुछ यूँ है—

"आज से ६० बर्ष पहले चार क्रान्तिकारी मास्टर अमीरचन्द्र, अवध बिहारी, बालमुकन्द और बसन्तकुमार विश्वास को वाइसराय हार्डिंग पर बम फेंकने के अपराध में फाँसी की सजायें हुई। भाई बालमुकन्द विवाहित थे, उनकी पत्नी श्रीमती रामरखी कोई क्रांतिकारी महिला नहीं थी किन्तु जिस प्रकार उन्होंने अपने देशभक्त पति का साथ दिया वो एक ऐतिहासिक घटना है लेकिन क्या कभी इतिहास के ग्रन्थ इस गाथा को अपने में समेटेंगे।

पति की गिरफ्तारी होने के दिन से ही श्रीमती रामरखी दुबली होने लगी उन्हें बड़ी मुशकिल से जेल में पति से मिलने की इजाजत मिली उन्होंने पति से पूछा खाना कैसा मिलता है? हँसकर बालमुकन्द ने कहा 'मिट्टी मिली रोटियाँ' रामरखी घर लौट आई और अपने आटे में मिट्टी मिलाने लगी। एक बार वो फिर मिलने गई और पूछा. "सोते कैसे हो?" 'अंधेरी कोठरी में,' दो कम्बलों पर', बस उसी दिन से श्रीमती रामरखी भी ग्रीष्म ऋतु होते हुये भी अंधेरी कोठरी में दो कम्बलों पर सोने लगी। जिस दिन बालमुकन्द जी को फाँसी हुई उस दिन प्रातःकाल उठकर वस्त्र धारण किये और जाकर एक चबूतरे पर बैठ गई उनके चेहरे पर दुःख का कोई निशान नहीं था किन्तु वो जो बैठी तो उठी नहीं। पति और पत्नी की लाशें एक साथ जलाई गई। देश भक्ति की इससे बड़ी मिसाल हो सकती है मैं नहीं सोच सकता। इस प्रसंग ने मुझे अंतरआत्मा की गहराइयों तक हिलाया है, मेरे सोचने को एक नई दिशा दी है।

छठा पन्ना—

विचार गोष्ठी

राजनाँदगाँव के रिखतचन्द्र जैन द्वारा प्रस्तावित

विषय—अगर आपसे किसी नई वैज्ञानिक खोज के लिये सुझाव माँगे जाये तो आप किस खोज के लिये सलाह देंगे?

बिलासपुर के मो० रफीक खान

विज्ञान की महत्ता और उसकी असीमित क्षमता से इन्कार नहीं किया जा सकता, विज्ञान ने मनुष्य को जीने की नई दिशा और प्रगति के नये अयाम प्रस्तुत किये हैं लेकिन विज्ञान की समस्त सीमायें धर्म के निकट आते ही दम तोड़ देती है। धर्म के कुछ ज्वलन्त प्रश्न विज्ञान को सर्वदा पंगु सा बना देते हैं अतः आज आवश्यकता है तो केवल ऐसे आविष्कार की जो विज्ञान एवं धर्म को एक सूत्र में बाँध सके। भगवान और इंसान के मध्य एक कड़ी बने और

आस्तिकता और नास्तिकता के समस्त प्रश्न चिन्हों को मिटा सकने में समर्थ सिद्ध हो सके। विज्ञान ने जिस प्रकार हर क्षेत्र में अपनी उपयोगिता को चरितार्थ किया है। धर्म क्षेत्र में भी एक गौरवशाली स्थान ग्रहण कर सकेगा। अतः मुझसे यदि नई वैज्ञानिक खोज की सलाह माँगी जाये तो मैं धर्म और विज्ञान के एकीकरण की सलाह दूँगा।

नसीराबाद के मुसा कुरैशी और सादिक नसीराबादी

आज ऐसे भयानक हथियार एवं बमों का निर्माण हुआ कि सारी मानवता कुछ ही देर में शमशान की चिता बन सकती है इसलिये अब "जगी हथियारों, बमों को नष्ट" करने वाला यंत्र बनाना चाहिये"

शायर की तड़प कहती है

खून अपना हो या पराया हो, नस्ले आदमका खून है आखिर।
बम घरों पर गिरे या कि सरहद पर, रूहे तामीर जख्म खाती है।
खेत अपने जले या औरों के, जिन्दगी फाकों से तिलमिलाती है।
टैंक आगे बढ़ें कि पीछे हटे, कोख धरती की बाँझ होती है।
इसलिये ऐ शरीफ इन्सानों, जंग टलती रहे तो बहतर है।
आप और हम सभी के आँगन में, शमा जलती रहे तो बहतर है।

आज सबसे बड़ी आवश्यकता का मानवता की रक्षा के लिये "जंग रोक यंत्र की है।"

बरहज की कु० रोशनआरा रहमान

मुझसे अगर किसी वैज्ञानिक खोज के लिए सलाह माँगी जाए तो मैं अपनी सलाह किसी ऐसे खाद्य पदार्थ की खोज के लिए दूँगी, जिसे खाकर मानव को कई दिनों तक आज के इस जवलन्त प्रश्न से मुक्ति मिल सके।

कानपुर की कु० रंजना निगम

मनुष्य जिस वातावरण, जिस समाज और जिस क्षेत्र में रहता है, उसका अध्यन एवं विचारणीय क्षेत्र वही हो, यह स्वाभाविक बात है। इसलिये एक रेडियो श्रोता के नाते मेरा समाज मेरा वातावरण और मेरा विचारणीय क्षेत्र रेडियो से सम्बन्धित हो यह अस्वाभाविक या अतिश्योक्ति नहीं। और विशेषकर जबकि, यदि रेडियो पत्रिका जैसे साहित्यक कार्य-क्रम के एक विशेषांक में सम्मलित किये जाने हेतु किसी नई वैज्ञानिक खोज के लिये मेरा सुझाव भी माँगा जाय, तो मैं यही सुझाव देना चाहूंगी कि विज्ञान, अपने बेतार-विज्ञान 'रेडियो' को अभी इस रूप में और विकसित करे कि जब एनान्सर एनाउंसिग के लिये स्टूडियो में पहुंचे तो वहाँ की झूठ प्रूफ मशीनें, हलफ से सिर्फ एनाउन्सर की निष्पक्षता और सच को ही ग्रहण कर प्रसारित करें और सच के सिवा कुछ और ग्रहण न करें। इसी तरह स्टूडियो के लेटर बाक्स के लिये एक ऐसा बेलास्ट बनाया जाय जो ऐसे पत्रों को जिनपर मक्खन, पोल्सन, बटर या मस्का एनाउन्सर पर हावी हो जाता है, ऐसे पत्रों को लेटर बाक्स में डालते ही नष्ट करदें।

अन्य पाँच श्रोता जिनके विचार अच्छे लगे

जलगाँव के रमेश पंचारिया
राजनाँदगाँव के प्रेमचन्द्र जैन
गया की अन्नपूर्णा सिन्हा
चाईवासा के गोविन्दराम निषाद और
बम्बई के अशोक कुमार

सातवां पन्ना—

पहेली वाला पन्ना

इस पन्ने के लिये आपसे पूछा था कि श्रीलँका की प्राचीन प्रेम गाथा पर हिन्दी में एक फिल्म बनी थी उस फिल्म का नाम बताइये।

उत्तर—फिल्म 'प्रेम सागर' सन् १९३९

सर्वशुद्ध हल केवल एक श्रोता का
बरविल (उडीसा) के गोपालचन्द्र गुप्त

सम्पादक का प्रतिवेदन--

मैं यकीन से कहता हूँ कि आपने इसे अपने दिल से मकबूल किया है। अगर आपको गवाही चाहिये तो आप अपने दिल पर हाथ रख कर कहियेगा। हमारे मुखतरित प्रोग्रामों को नये नये तरीके से पेश करने का पहला तरीका नहीं है वो भी आप लोगों के ख्यालों के मुताबिक जब भी हमने नया अन्दाज आजमाया आपने उसे कबूल फरमाया, इसलिये मैंने शुरू में कहा कि यकीनन आपको यह प्रोग्राम पसन्द आया होगा। दोस्तो इस प्रोग्राम को कामयाब बनाने के लिये आप लोग अपनी कलमों के जरिये हमें मदद देते हैं सिर्फ यही प्रोग्राम नहीं, रेडियो पत्रिका के पहले से लेकर दो सौ वें अङ्क है। प्रोग्रामों की शोहरत और गवाही देते हैं आप लोगों के हजारों खत। तमाम श्रोताओं को जो रेडियो पत्रिका में हिस्सा लेते आ रहे हैं उनको हम अपनी ओर से शुक्रिया अदा करते हैं और इस प्रोग्राम को पेश करने वाले श्री मनोहर महाजन के बारे में इस वक्त जितनी भी तारीफ करूँ कम है क्योंकि आप जानते हैं वो इस प्रोग्राम को कितनी मेहनत से पेश करते आ रहे हैं। इसलिये उनको भी मैं अपनी तरफ और आपकी तरफ से शुक्रिया अदा करता हूँ इसके साथ ही मैं आपसे इजाजत चाहूंगा। नमस्ते !

मनोहर सत्य

—कु. स्नेह महापात्र 'मीना'

मनोहर जमाल की मेहनत क्या रंग लाई थी।
देख स्नेह सी. बी. सी. पर क्या बहार छाई थी॥
प्रेरक प्रसंग रहेंगे सदा प्रेरक हमारे लिए।
मजीद गफ्फार की लेखनी या खुद! चुनौती थी सबके लिए!!
सच है सपने सच नहीं होते, पर प्रेम युद्ध में सब जायज हैं।
भारत भूषणों के सुमनों पर रवि की वर्षा बड़ी मुनव्वर थी॥
रौशन थी मेरे रफीकों अजीजों की वैज्ञानिक खोज।
जब्बार जगदीश की आराधना कर रही थी—नहीं पैसे का मूल्य
आदमी से ज्यादा नहीं।

खैर ईश्वर एक है मेरे हमराज श्रोताओं मेरे अनीसों।
आओ गोपाल सत्यनारायण से प्रार्थना करें, यह दिन बार बार आये॥
अपने दामन में नीलम रतन की छटा बिखेर लाये।
इन्दिरा शीला की विजयी कण कण में महक जाये॥
नरेन्द्र की प्यास तृप्त होगी सोनी के प्रीतम आयेंगे।
राही को मंजिल मिल जायेगी, रंजना के शब्दों में॥
मस्कामार श्रोता आ नहीं पायेंगे।
सत्य के मनोहर आकाश तले शबनम की वर्षा होगी॥
दो हजार तीन सौ श्रोताओं की प्रतीक्षा ही नहीं।
दस हजार की प्रतीक्षा, पत्रिका के रूप में ढल जायेगी॥

गम नहीं ये 'स्नेह' हम नहीं थे तो क्या?
तीन सौ का इन्तजार कर लेंगे।
गर ये रंज रहेगा कि जिन्दगी कम है।
खुदा से एक और जिन्दगी माँग लेंगे।

जगदीश निगम

Jagdish Nigam Kanpur